स्वच्छ भारत के निर्माण में अणुव्रत की भूमिका

(अणुव्रत निबंध लेखन प्रतियोगिता)

प्रकाशक

vf[ky Hkkjrh; v.kqor U;kl] ubl fnYyh

© अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास, नई दिल्ली

lLdj.k% 2018
vk'kh"kopu% महातपस्वी आचार्य श्री महाश्रमण

liknd e.My% सम्पतमल नाहाटा
विजय वर्धन डागा
प्रमोद घोड़ावत

dk;dkjh liknd% महेन्द्र शर्मा

lq;Dr liknd% रमेश काण्डपाल

eY;% ₹100.00

çdk'kd% अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास
अणुव्रत भवन
210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग
नई दिल्ली 110002

eæ.k% इंद्रप्रस्था प्रैस (सी.बी.टी.)
4 बहादुरशाह ज़फर मार्ग, नई दिल्ली–110002

vkpk;Z Jh egkJe.k

।। अर्हम् ।।

परमपूज्य गुरुदेव तुलसी बीसवीं सदी के एक महापुरुष थे। उन्होंने अणुव्रत आन्दोलन के रूप में मानवजाति को एक महान अवदान दिया। अणुव्रत संयम, नैतिकता और चरित्रनिष्ठा से जुड़ा आन्दोलन है। उसे स्वीकार कर आदमी अपने जीवन को उन्नत बना सकता है।

'अणुव्रत न्यास' गत अनेक वर्षों से शिक्षा जगत् में अणुव्रत के प्रचार–प्रसार की दृष्टि से प्रयत्नशील है। प्रस्तुत पुस्तक उसी प्रयत्न का प्रतिफल है। इसका रसास्वादन कर जनता आध्यात्मिक पोषण को प्राप्त हो। शुभाशंसा।

vkpk;Z egkJe.k

स्वच्छ भारत निर्माण में अणुव्रत के प्रयास

lEirey ukgkVk

अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी ने कहा था कि व्रत जीवन को ऊंचाई तक ले जाने वाला सोपान है। व्रत वह जागरूक प्रहरी है जो जीवन में प्रविष्ट होने वाले अवांछनीय तत्वों का अवरोधक है। व्रत एक छत है जो वर्षा, आतपरूप परिस्थितियों से त्राण देने में सक्षम है। व्रत वह स्तंभ है जिसके आधार पर चरित्र का भवन खड़ा हो सकता है। व्रत वह प्रकाश बिन्दु है जहां पहुंचकर व्यक्ति अपने अन्तःकरण को आभावित कर सकता है। व्रत की गरिमा क्या है, यह अनुभव वही व्यक्ति कर सकता है जिसकी व्रतों में आस्था हो। आस्था के अभाव में व्रत का स्वीकरण और आचरण दोनों ही कठिन हो जाते हैं।

समग्र विश्व की मानव जाति को हम चार वर्गों में विभाजित कर सकते हैं। प्रथम वर्ग के व्यक्ति आकर्षक व्यक्तित्व, सुन्दर आकृति और विपुल वैभव से सम्पन्न होते हैं, किन्तु चरित्र की दृष्टि से सम्पन्न नहीं होते। दूसरे वर्ग के व्यक्ति चरित्र के क्षेत्र में अगुवा होते हैं पर रूप वैभव आदि की अपेक्षा शून्य होते हैं। तीसरे वर्ग के व्यक्ति में रूप संपदा और चरित्र संपदा का प्रवेश होता है और न चरित्र संपदा का। रूप और चरित्र की प्रतिद्वन्द्विता में पहला स्थान चरित्र को मिले यह नैतिक अधिकार की बात है। चरित्र खो गया तो सब कुछ खो गया, इस जनश्रुति को मैं अपना पूरा समर्थन देता हूं।

अणुव्रत अभियान संस्कार निर्माण का अभियान है। एक आदमी संकरी पगडंडी द्वारा पहाड़ पर सीधा चढ़ सकता है पर हजारों–हजारों लोग

और वाहन सड़क बिना नहीं चढ़ सकते। सड़क बनाने में समय लगता है पर उसके बनने पर एक छोटा बच्चा भी पहाड़ की चोटी तक पहुंच सकता है। हमें निष्ठा के साथ कार्य करना चाहिए। सफलता की उतावली में यथार्थ को नहीं भुला देना चाहिए।

मन्द अग्नि से पानी गर्म नहीं होता, अग्नि में पर्याप्त ईंधन डालने से पानी गरम हो सकता है। पांच–पांच हाथ के पचासों गड्ढे खोदने पर भी जल नहीं निकलता, यदि पचास हाथ का गड्ढा खोदा जाता है तो जल निकल सकता है। इधर–उधर बिखरी ईंटों से मकान नहीं बनता, मकान बनाने के लिए उन्हें व्यवस्थित ढंग से जचाना पड़ता है।

अणुव्रत आंदोलन ने प्रारम्भ से चरित्र निर्माण के साथ स्वच्छता, नशामुक्ति, सद्भावना व नैतिकता पर वृहद कार्य किया। आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ व वर्तमान अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण जी ने देश के कोने–कोने में पदयात्रा कर लोगों को जागरूक किया है एवं स्वच्छ भारत के लिए महनीय कार्य किया। अणुव्रत के माध्यम से उन्होंने जन–जन में नैतिक चेतना को जागृत करने हेतु सघन कार्य किया। जब तक व्यक्ति अपने दायित्व को नहीं समझेगा तब तक नव निर्माण का सृजन नहीं होगा। आज आवश्यकता इस बात की है कि राष्ट्र के विकास के लिए सभी को आगे आना होगा।

अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास प्रति वर्ष इसी उद्देश्य से लाखों विद्यार्थियों में अणुव्रत के माध्यम से चरित्र निर्माण के साथ स्वच्छ भारत के निर्माण हेतु कार्यरत है। अणुव्रत का मुख्य कार्य संस्कार निर्माण है, इसलिए उसका मुख्य कार्यक्षेत्र शिक्षा जगत है। संस्कार निर्माण के क्षेत्र में शिक्षक जितना कार्य कर सकते हैं उतना अन्य लोग नहीं कर सकते।

आचार्य तुलसी ने कहा कि मैं समस्या के स्थायी समाधान में कभी विश्वास नहीं करता। सूर्य प्रतिदिन प्रकाश देता है और अंधकार को हराता है। मनुष्य का मनुष्यत्व इसी में है कि वह समस्याओं के सामने समाधान की लौ जलाता है। चिंतन की इसी भूमिका के आधार पर हम अणुव्रत का कार्य करते रहेंगे।

अणुव्रत आन्दोलन ने स्वच्छ भारत के निर्माण में एक अलख जगाने का प्रयास किया है। शिक्षक व विद्यार्थियों के माध्यम से चरित्र निर्माण के साथ अपने भारत को स्वच्छ रखने के लिए प्रत्येक को घर–घर से कार्य करने के लिए प्रेरित किया।

अणुव्रत आंदोलन की शिक्षाओं को प्रसारित करने हेतु अणुव्रत न्यास कृत संकल्पित है, इसमें संलग्न सैकड़ों कार्यकर्ता बधाई के पात्र हैं। प्रस्तुत पुस्तक 'स्वच्छ भारत के निर्माण में अणुव्रत की भूमिका' में विद्यार्थियों द्वारा लिखित निबंध लेखन कौशल का उत्कृष्ट प्रमाण है। मैं इस पुस्तक में संकलित विद्यार्थी लेखकों को बधाई देता हूं। साथ ही मुझे पूरा विश्वास है कि हम सब मिलकर आचार्य तुलसी सहित आचार्य महाप्रज्ञ व वर्तमान अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी के कुशल निर्देशन में भारत के विश्वगुरु बनने के सपने को मूर्तरूप देने में सतत् प्रयासरत रहेंगे।

lEirey ukgkVk
प्रबंध न्यासी
अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास, दिल्ली

स्वच्छता की प्रेरणा विशिष्ट उपलब्धि

çekn ?kkMkor

आचार्य तुलसी एक दूरदृष्टा संत थे। अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तन ने जन–गण की सोच को प्रेरणा प्रदान की। लोगों के चिन्तन में यह बात आई कि नैतिकता पूर्ण जीवन जीना न सिर्फ एक आदर्श हो बल्कि आचरण में उतरने का उद्देश्य बने। आचार्य तुलसी ने अपनी पदयात्राओं और अपनी शिष्य सम्पदा के माध्यम से अणुव्रत की बात को घर–घर, गली–गली पहुंचाने का सार्थक प्रयास किया। लोगों में नैतिकता के प्रति एक आकर्षण का भाव परिलक्षित हुआ। यह अपने आप में एक उपलब्धि है।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जनकल्याण के लिए गांवों, कस्बों, नगरों और महानगरों में पदयात्रा करते हुए नई जागृति का संचार कर रहे हैं। आचार्य श्री महाश्रमण एक ऐसे प्रवचनकार हैं, जो अपनी शांत, मृदु और गंभीर शैली से श्रोताओं के हृदय का स्पर्श करते हैं। आपके प्रवचन जीवन की मूलभूत और व्यक्तिगत समस्याओं से जुड़े होते हैं। जनता में इन प्रवचनों के प्रति आकर्षण सहज ही दिखाई देता है। सामाजिक, राष्ट्रीय एवं वैश्विक समस्याओं के समाधान में आपकी समाधायक चेतना सदैव जागरूक रहती है। समाज में व्याप्त अस्पृश्यता, जातिवाद, धोखाधड़ी, नशा, दहेज, भ्रूणहत्या आदि विसंगतियों के परिष्कार के लिए आप अनवरत प्रयासरत हैं।

अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी के अनुसार वह संस्कृति सफल होती है जो कर्तव्यनिष्ठ व्यक्तियों को जन्म देती है। कोई भी देश

अपनी संस्कृति, सभ्यता, कला और राष्ट्रीय अखण्डता की सुरक्षा संतों और ऋषि–महर्षियों के बल पर ही करता है। संस्कृति की प्रकिया का पहला मानक है कि समष्टि ने अपने समूह में कितने श्रेष्ठजनों को पैदा किया है। ऐसे अनेक व्यक्ति हों जो स्वार्थ त्यागकर निःस्वार्थ सेवा के लिए तत्पर हों। कुछ लोग ऐसे भी हों जो संकीर्णता के दायरे से मुक्त होकर विराट एवं व्यापक चेतना से युक्त हों व सर्वहित की बात सोचते हों।

अणुव्रत आन्दोलन में आज हजारों कार्यकर्ता राष्ट्र के नव निर्माण में अपना महनीय योगदान दे रहे हैं। 'संयम ही जीवन है' के उद्घोष को मुखरित करने वाले अणुव्रत आन्दोलन का आचार्यश्री महाश्रमण अणुव्रत अनुशास्ता के रूप में कुशल नेतृत्व कर रहे हैं। वह जन–जन में नैतिकता, सद्भावना व नशामुक्ति के लिए पूरे राष्ट्र में पदयात्रा कर रहे हैं। स्वच्छता की प्रेरणा उसके साथ होना एक विशिष्ट उपलिब्ध है।

समय के साथ विकासमान अणुव्रत आन्दोलन को गति देने और उसमें रचनात्मक कार्यक्रमों को जोड़ने के लिए अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास का जन्म हुआ। न्यास के माध्यम से आज हजारों विद्यालय के लाखों विद्यार्थी न्यास से जुड़े हैं। न्यास ने विद्यालयों के माध्यम से अणुव्रत के छोटे–छोटे संकल्पों के द्वारा राष्ट्र में नैतिक मूल्यों के कार्यों को बल देते हुए स्वच्छ भारत के निर्माण में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है।

çekn ?kkMkor
राष्ट्रीय संयोजक
अणुव्रत निबंध लेखन प्रतियोगिता

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	*शीर्षक*	*लेखक/लेखिका का नाम*	*पृष्ठ संख्या*
1.	अणुव्रत आंदोलन की महत्वपूर्ण भूमिका	मुस्कान पाठक	1
2.	हर घर में हो शौचालय	खुशी सोनी	5
3.	खुले में शौच की पूर्ण समाप्ति का लक्ष्य	कंचन कुंवर चौहान	9
4.	सफाई शब्द एक, लाभ अनेक	मनीषा	12
5.	विद्यार्थियों की भागीदारी पर जोर	अराध्य मौर्य	14
6.	साफ–सफाई के लिए एक–दूसरे को करें प्रेरित	उत्कर्ष यादव	18
7.	स्वच्छता बने सबकी प्राथमिकता	भूमिका चंदेल	21
8.	स्वच्छता के लिए न्यास के अनेक प्रयास	लक्ष्मी	24
9.	स्वच्छ जीवन हेतु स्वच्छता जरूरी	कृति अग्रवाल	27
10.	जहां स्वच्छता, वहीं सुंदरता	शादाब अली सैयद	31
11.	स्वच्छता का पहला कदम घर से हो	रीतिका मेहता	34
12.	साफ–सफाई को लेकर आशान्वित	सेजल पाटीदार	37

क्रम संख्या	शीर्षक	लेखक/लेखिका का नाम	पृष्ठ संख्या
13.	साफ–सफाई वाला व्यक्ति रहता है खुश	आकृति माथुर	40
14.	पहले खुद को स्वच्छ बनाएं	ज्योति कुमारी गुप्ता	44
15.	पक्के इरादों से स्वच्छ होगा भारत	खुशी	47
16.	स्वच्छता के प्रति जागरूकता जरूरी	आयुष मिश्रा	50
17.	न गंदगी करेंगे, न ही करने देंगे	शुभांगी अग्रवाल	53
18.	स्वच्छता कार्यक्रमों की रुके न गति	शवाना	56
19.	स्वच्छता की ओर अणुव्रत के बढ़ते कदम	तानिया	60
20.	अणुव्रत के खास स्वच्छता प्रयास	साक्षी शाक्या	64
21.	स्वच्छता सबसे बड़ा पुण्य कार्य	सरोजिनी	67
22.	साफ–सफाई हमारे व्यवहार में नहीं	मानसी बिष्ट	71
23.	स्वच्छता का आदर्श उदाहरण हो भारत	कदम प्रियंका अशोक	75
24.	सफाई के फायदों को समझना होगा	विदित दत्ता	78
25.	सफलता के लिए सहयोग भी जरूरी	जय पाण्डे	81
26.	कोई कोना न बचे गंदगी के लिए	शिवानी सिंह	85
27.	ठहर न पाएं कदम स्वच्छता के	तिशा	89
28.	साफ–सुथरा हो देश हमारा	शाल्वी	92
29.	नामी हस्तियां भी बनीं भागीदार	महक सिंगल	95
30.	बापू के सपने को करें साकार	वांगणे नंदिनी अनिल	98
31.	देश स्वच्छ हो अपना	मानवी अरोड़ा	101

क्रम संख्या	शीर्षक	लेखक/लेखिका का नाम	पृष्ठ संख्या
32.	स्वच्छ भारत बनाने में अणुव्रत पीछे नहीं	प्रांजल पटेल	104
33.	गांवों को गंदगी रहित बनाने का लक्ष्य	प्रांशु आर. मिश्रा	107
34.	स्वच्छता के अणुव्रत से होगा अभ्युदय	पटेल मोहम्मद एस.	110
35.	अणुव्रत कार्यकर्ताओं की अहम् भागीदारी	पुनीत	114
36.	स्वच्छता अभियान, अणुव्रत ने संभाली कमान	वान्शी पाहूजा	117
37.	स्वच्छता का अहसास जरूरी	अनमोल कौर	121
38.	व्यवस्था से आ सकती है स्वच्छता	नंदिनी शर्मा	124
39.	लोगों की सोच बदलनी होगी	साक्षी	127
40.	स्कूलों की शुरुआत ही सफाई से शुरू हो	पटेल मोना मुकेश कुमार	130
41.	अणुव्रत गीतों से स्वच्छता संदेश	संजना	133

English

42.	Anuvrat does not interfere in religious beliefs	Radha Verma	139
43.	Sanitation is more important than independence	Radhika Meena	141
44.	Anuvrat states that everyone is interdependent	Ishika	143

क्रम संख्या	शीर्षक	लेखक/लेखिका का नाम	पृष्ठ संख्या
45.	Anuvrat is playing an important role in making India clean	Kesar Srivastawa	146
46.	Swachh Bharat Mission is a necessary step	Vanshika	150
47.	Cleanliness makes us healthy	Priya	154
48.	Cleanliness is next to Godliness	Titiksha	156
49.	Cleanliness is a good habit	Shrushti Jain	159
50.	Clean India would bring more tourists	Chameli Sahu	162
51.	Cleanliness is necessary	Anushree Apurba Chakraborty	165
52.	Sanitation is more important than independence	Dhaan Pinkesh Jain	168
53.	Swachh Bharat Mission is an interesting aspect	Dayanshu Suman	170
54.	Anuvrat aims at internal purification	Anuj Baid	173
55.	Keep India clean to make it disease free	Vidhi	175
56.	Clean India movement is the strength of the country	Tanishka	178

हिन्दी

अणुव्रत आंदोलन की महत्वपूर्ण भूमिका

◈ eLdku ikBd बारहवीं
डेजी डेल्स सी.सै. स्कूल
ईस्ट ऑफ कैलाश, दिल्ली

स्वच्छ भारत अभियान का उद्देश्य केवल आसपास की सफाई करना ही नहीं है अपितु नागरिकों की सहभागिता से अधिक से अधिक पेड़ लगाना, कचरा मुक्त वातावरण बनाना, शौचालय की सुविधा उपलब्ध कराकर एक स्वच्छ भारत का निर्माण करना है। देश में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए स्वच्छ भारत का निर्माण करना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

Lवच्छ भारत हम सबका सपना है किंतु यह हकीकत तभी बन पाएगा जब हम सब मिलकर स्वच्छ भारत के लिए अपना योगदान देंगे। सबसे पहले स्वच्छ भारत का सपना देश के राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने देखा था। देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी भी इसी सपने को साकार होता देखना चाहते हैं तथा उन्होंने इसके लिए स्वच्छ भारत अभियान की शुरुआत की। इसका उद्देश्य 2020 तक भारत को स्वच्छ बनाना है। इसके लिए सरकार लोगों को अनेक प्रकार से जागृत कर रही है। देश में अनेक सामाजिक संगठन भी स्वच्छ भारत अभियान में अपना योगदान दे रहे हैं।

'अणुव्रत न्यास' की स्थापना गुरुदेव तुलसी ने की। इसका उद्देश्य मुख्य रूप से समाज की भलाई कर देश के विकास में अपना योगदान देना है। न्यास ने सफाई के अनेक कार्यक्रमों की शुरुआत की जिसमें पर्यावरण को बचाना, भारत को स्वच्छ बनाना शामिल है। अणुव्रत संस्थान ने स्वच्छ भारत अभियान को देश के हर कोने में पहुंचाने का संकल्प लिया है।

लोगों में स्वच्छता के प्रति जागरुकता लाने हेतु अणुव्रत संस्थान निबंध लेखन प्रतियोगिता का भी आयोजन प्रतिवर्ष देश के विभिन्न स्कूलों में आयोजित करता है। अणुव्रत जैसे सामाजिक संगठन स्वच्छ भारत अभियान में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। भारत को पूर्णरूप से स्वच्छ बनाने हेतु सरकार के साथ–साथ सभी नागरिकों की महत्वपूर्ण भूमिका हो सकती है। इसलिए समय–समय पर सभी को जागरूक करने के लिए अनेक प्रकार के समारोह आयोजित करता रहता है।

लोगों की अपना आस–पड़ोस साफ रखने के लिए प्रेरित करना तथा स्वच्छ वातावरण के लाभ तथा दूषित वातावरण से होने वाली हानियों को लोगों तक पहुंचाना है। इसमें कई प्रकार के नवीन तरीकों का इस्तेमाल करके वातावरण को साफ करना शामिल है।

महात्मा गांधी जैसे युग पुरुष का भी यही कहना था कि स्वच्छ वातारण में ही ईश्वर का वास होता है। अणुव्रत संस्थान कई प्रकार के उपक्रमों के माध्यम से पूरे देश में स्वच्छ भारत का अपना संकल्प पूरा कर रहा है। आगे भविष्य में भी यह संस्थान अनेक अनुसंधान केंद्र खोलकर लोगों को स्वच्छता के प्रति सचेत करता रहेगा।

भारत एक विकासशील राष्ट्र है। यहां अनेक प्रकार की समस्याएं हैं जिनमें से अस्वच्छ वातारण भी एक है। भारत के लोग का सालाना 20 से 30 फीसदी कमाया धन बीमारियों में इलाज में ही खर्च हो जाता है। बीमारियों का मुख्य कारण गंदगी तथा दूषित वातावरण है। इसलिए लालकिले की प्राचीर से अपने दिए संदेश में प्रधानमंत्री ने कहा था कि स्वच्छ भारत अभियान के माध्यम से गरीबों का पैसा बीमारियों के इलाज में खर्च होने से बचाया जा सकता है। हर घर में शौचालय भी इनमें से ही एक संकल्प था जिससे लोगों को खुले में शौच जाने से रोका जाए और स्वच्छता की ओर कदम बढ़ाया जाए।

पूर संसार में संभवतः भारत ही ऐसा देश है जहां आज भी खुले मैदान को शौचालय के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। आज़ादी के 69 वर्ष बीत जाने के बाद आई लोकतांत्रिक सरकारों के सारे वादे लुभावने रहे।

ग्रामीण इलाकों के घर–घर में शौचालय की योजना असमर्थता के भंवर में फंसी है। जहां हमारा भारत इस बात पर गर्व करते नहीं थकता कि उसके पास इतने अरबपति हैं कि इस मामले में वह चौथे स्थान पर है, वहां इस बात पर हम भारतवासियों के सिर शर्म से झुक जाते हैं कि हमारे देश में आधुनिकता के औजारों तक सबकी पहुंच नहीं है। और तो और देश के दूरदराज इलाकों में आज करोड़ों की जनसंख्या शौचालय की आधारभूत सुविधाओं से वंचित है। ग्रामीण इलाकों में शौचालयों की सुविधा न होने के कारण सबसे ज्यादा परेशानी महिलाओं को झेलनी पड़ती है और गांव में भी अब इतनी खाली जमीन नहीं रह गई की जहां महिलाएं अपनी दैनिक निवृत्ति से निजात पा सकें।

कुछ समय पहले ही महिलाओं की अपनी दैनिक जरूरतों के लिए इधर–उधर भटकने और परेशान होने की समस्या थी। वे अपनी बेटियों को इस तरह की परेशानियों में नहीं पड़ने देना चाहती थीं। तब उन्होंने खुद ही इस दिशा में ठोस कसम उठाने का निर्णय लिया है जिसके फलस्वरूप 'शौचालय नहीं तो लड़की नहीं' अभियान अस्तित्व में आया। इसके तहत योजना चालू की गई थी कि महिलाएं उन घरों में अपनी बेटियों को नहीं ब्याहेंगी जिन घरों में शौचालय नहीं होगा।

महात्मा गांधी ने अपने आसपास के लोगों को स्वच्छता बनाए रखने संबंधी शिक्षा प्रदान कर राष्ट्र को एक उत्कृष्ट संदेश दिया था। उन्होंने स्वच्छ भारत का सपना देखा था जिसके लिए वह चाहते थे कि भारत के सभी नागरिक एक साथ मिलकर देश को स्वच्छ बनाने के लिए कार्य करें। महात्मा गांधी के स्वच्छ भारत के स्वप्न को पूरा करने के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने 2 अक्टूबर, 2014 को स्वच्छ भारत अभियान शुरू किया और इसके सफल कार्यान्वयन हेतु भारत के सभी नागरिकों से इस अभियान से जुड़ने की अपील की।

स्वच्छ भारत अभियान, सफाई करने की दिशा में प्रतिवर्ष 100 घंटे के श्रमदान के लिए लोगों को प्रेरित करता है।

स्वच्छ भारत अभियान का उद्देश्य केवल आसपास की सफाई करना ही

नहीं है अपितु नागरिकों की सहभागिता से अधिक से अधिक पेड़ लगाना, कचरा मुक्त वातावरण बनाना, शौचालय की सुविधा उपलब्ध कराकर एक स्वच्छ भारत का निर्माण करना है। देश में पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए स्वच्छ भारत का निर्माण करना अत्यंत महत्वपूर्ण।

अस्वच्छ भारत की तस्वीरें भारतीयों के लिए अक्सर शर्मिंदगी की वजह बन जाती है, इसलिए स्वच्छ भारत के निर्माण एवं देश की छवि सुधारने का यह सही समय एवं अवसर है। यह अभियान न केवल नागरिकों को स्वच्छता संबंधी आदतें अपनाने बल्कि हमारे देश की छवि स्वच्छता के लिए तत्परता से काम कर रहे देश के रूप में बनाने में भी मदद करेगी। ❑

हर घर में हो शौचालय

◈ [k'kh Ikuh नौवीं
स्टेनफोर्ड इंटरनेशनल स्कूल
उज्जैन, मध्यप्रदेश

ग्रामीण स्वच्छ भारत मिशन एक ऐसा अभियान है जिसमें ग्रामीण भारत में स्वच्छता कार्यक्रम को अमल में लाना है। ग्रामीण क्षेत्रों को स्वच्छ बनाने के लिए 1999 में केंद्र सरकार द्वारा इससे पहले निर्मल भारत अभियान भी कहा जाता है, की स्थापना की थी लेकिन अब इसका पुनर्गठन स्वच्छ भारत अभियान (ग्रामीण) के रूप में किया गया है। इसका मुख्य उद्देश्य ग्रामीणों को खुले में शौच करने की मजबूरी से रोकना है।

Lवच्छ भारत मिशन की शुरुआत सरकार द्वारा देश को स्वच्छता के प्रतीक के रूप में पेश करना है। स्वच्छ भारत का सपना महात्मा गांधी के द्वारा देखा गया जिसके संदर्भ में गांधीजी ने कहा कि स्वच्छता स्वतंत्रता से ज्यादा जरूरी है। वह अपने समय में देश की गरीबी और गंदगी से अच्छे से अवगत थे। इसी वजह से उन्होंने अपने सपनों को पाने के लिए कई सारे प्रयास किये लेकिन सफल नहीं हो सके।

जैसा कि उन्होंने स्वच्छ भारत का सपना देखा था, उन्होंने कहा कि निर्मलता और स्वच्छता दोनों ही स्वस्थ और शांतिपूर्ण जीवन का अनिवार्य भाग है। दुर्भाग्य से भारत आजादी के 70 साल बाद भी इन दोनों लक्ष्यों से काफी पीछे है। अगर आंकड़ों की बात करें तो केवल कुछ प्रतिशत लोगों के घरों में शौचालय हैं, इसलिए भारत सरकार पूरी गंभीरता से बापू की इस सोच को हकीकत का रूप देने के लिए देश के सभी लोगों को इस मिशन से जोड़ने का प्रयास कर रही है।

इस मिशन को अपने प्रारंभ की तिथि से बापू की 150वीं पुण्यतिथि

(2 अक्टूबर, 2019) सरकार ने सभी लोगों से निवेदन किया कि वे अपने आसपास और दूसरी जगहों पर साल में 100 घंटें सफाई के लिए दें। इसको लागू करने के लिए बहुत सारी नीतियों और प्रक्रियाएं हैं जिनमें तीन चरण हैं–योजना चरण, कार्यान्वयन चरण और निरंतरता चरण।

स्वच्छ भारत मिशन एक राष्ट्रीय स्वच्छता मुहिम है। यह एक बड़ा आंदोलन है जिसके तहत भारत को 2019 तक पूर्णतः स्वच्छ बनाना है। इसमें स्वस्थ और सुखी जीवन के लिए महात्मा गांधी के स्वच्छ भारत के सपने को आगे बढ़ाया गया है। इस मिशन को 2 अक्टूबर, 2014 को बापू के जन्मदिवस के शुभ अवसर पर आरंभ किया गया है और 2 अक्टूबर, 2019 (बापू कि 150वीं जन्म जयंती) तक पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है।

भारत के शहर विकास तथा पेयजल और स्वच्छता मंत्रालय के तहत इस अभियान को ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में लागू किया गया है। इसका उद्देश्य सफाई व्यवस्था की समस्या का समाधान निकालना, साथ ही सभी को स्वच्छता की सुविधा के निर्माण द्वारा पूरे भारत में बेहतर मल प्रबंधन करना है।

अपने उद्देश्य की प्राप्ति तक भारत में इस मिशन की कार्यवाही निरंतर चलती रहनी चाहिए। भौतिक, मानसिक, सामाजिक और बौद्धिक कल्याण के लिए भारत के लोगों में इसका एहसास होना बेहद आवश्यक है। यह सही मायनों में भारत की सामाजिक स्थिति को बढ़ावा देने के लिए है जो हर तरफ स्वच्छता लाने से शुरू किया जा सकता है। यहां नीचे कुछ बिंदु उल्लिखित किए जा रहे हैं जो स्वच्छ भारत अभियान की आवश्यकता है।

- यह बेहद जरूरी है कि भारत के घर–घर में शौचालय हो, साथ ही खुले में शौच की प्रवृत्ति को भी खत्म करने की आवश्यकता है।
- अस्वास्थ्यकर शौचालय को पानी से बहाने वाले शौचालयों में बदलने की आवश्यकता है।

- हाथ के द्वारा की जाने वाली सफाई की व्यवस्था का जड़ से खात्मा जरूरी है।
- नगर निगम के कचरे का पुनर्चक्रण और दुबारा इस्तेमाल, सुरक्षित समापन, वैज्ञानिक तरीके से मल प्रबंधन को लागू करना।
- खुद के स्वास्थ के प्रति भारत के लोगों की सोच और स्वभाव में परिवर्तन लाना और स्वास्थ्यकर साफ–सफाई की प्रक्रियाओं का पालन करना।
- ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों में वैश्विक जागरूकता का निर्माण करने के लिए और सामान्य लोगों को स्वास्थ्य से जोड़ने के लिए।
- इसमें काम करनेवाले लागों को स्थानीय स्तर पर कचरे के निष्पादन का नियंत्रण करना। खाका तैयार करने के लिए मदद करना।
- पूरे भारत में साफ–सफाई की सुविधा को विकसित करने के लिए निजी क्षेत्रों की हिस्सेदारी बनानी चाहिए।
- भारत को स्वच्छ और हरियाली युक्त बनाना।
- वास्तव में बापू के सपनों को सच करने के लिए यह सब करना होगा।

शहरी क्षेत्रों में स्वच्छ भारत मिशन का लक्ष्य हर नगर में ठोस कचरा प्रबंधन सहित लगभग सभी 1.04 करोड़ घरों को 2.06 लाख सार्वजनिक शौचालय, 2.5 लाख सामुदायिक शौचालय के निर्माण की योजना रिहायशी इलाकों में की गई है जहां पर व्यक्तिगत घरेलू शौचालय की उपलब्धता मुश्किल है। इसी तरह सार्वजनिक शौचालय की प्राधिकृत स्थानों पर, जैसे बस अड्डों, रेलवे स्टेशन, बाजार आदि जगहों पर।

शहरी क्षेत्रों में स्वच्छता कार्यक्रम को पांच वर्षों के अंदर 2019 तक पूरा करने की योजना है खुले में शौच की प्रवृत्ति को जड़ से हटाना, अस्वास्थ्यकर शौचालय में परिवर्तन, खुले हाथों की साफ–सफाई की प्रवृत्ति को हटाना लोगों की सोच में परिवर्तन लाना और ठोस कचरा प्रबंधन करना।

ग्रामीण स्वच्छ भारत मिशन एक ऐसा अभियान है जिसमें ग्रामीण भारत में स्चच्छता कार्यक्रम को अमल में लाना है। ग्रामीण क्षेत्रों को स्वच्छ बनाने के लिए 1999 में केंद्र सरकार द्वारा इससे पहले निर्मल भारत अभियान भी कहा जाता है, की स्थापना की थी लेकिन अब इसका पुनर्गठन स्वच्छ भारत अभियान (ग्रामीण) के रूप में किया गया है। इसका मुख्य उद्देश्य ग्रामीणों को खुले में शौच करने की मजबूरी से रोकना है। इसके लिए सरकार ने 11 करोड़, 11 लाख शौचालयों के निर्माण के लिए एक लाख चौंतीस हजार करोड़ की राशि खर्च करने की योजना बनाई है।

निम्नलिखित स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण) का लक्ष्य है:

- ग्रामीण क्षेत्रों में रह रहे लोगों के जीवन स्तर में सुधार लाना।
- 2019 तक स्वच्छ भारत के लक्ष्य को पूरा करने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में साफ–सफाई के लिए लोगों को प्रेरित करना।
- ग्रामीण क्षेत्रों में निरंतर साफ–सफाई और पारिस्थितिक सुरक्षा को प्रोत्साहित करना।

इन उपायों के अतिरिक्त अणुव्रत आंदोलन भी पूरे देश में सक्रिय है। अपने विभिन्न कार्यक्रमों के द्वारा स्वच्छता अभियान में अणुव्रत की सतत् भागीदारी जारी है।

इस तरह हम कह सकते हैं कि 2019 तक भारत को स्चच्छ और हरा–भरा बनाने के लिए स्वच्छ भारत अभियान एक स्वागत योग्य कदम है। जैसा कि हम सभी ने कहावत में सुना है 'स्वच्छता भगवान की ओर अगला कदम है।' हम विश्वास के साथ कह सकते हैं कि अगर भारत की जनता द्वारा प्रभावी रूप से इसका अनुसरण किया गया तो आने वाले चंद वर्षों में 'स्वच्छ भारत अभियान' से पूरा देश भगवान का निवास स्थल सा बन जाएगा। चूंकि स्वच्छता से ईश्वर का गर्मजोशी से स्वागत शुरू हो चुका है। एक स्वस्थ देश और स्वस्थ समाज को जरूरत है कि उसके नागरिक स्वस्थ रहें तथा हर व्यवसाय में स्वच्छ हों। ❑

खुले में शौच की पूर्ण समाप्ति का लक्ष्य

◈ dpu doj pkgku बारहवीं
श्री जवाहर जैन शिक्षण संस्थान
उदयपुर, राजस्थान

निर्मल भारत की संकल्पना में एक ऐसे राष्ट्र की कल्पना की गई है जहां खुले स्थान पर शौच करने की पारंपरिक प्रथा को पूर्ण रूप से समाप्त कर दिया जाए जिससे प्रत्येक जन आत्मसम्मान का जीवन जी सके। ग्रामीण क्षेत्रों में निर्मल भारत के स्वप्न को साकार करने के लिए विभाग ने आने वाले वर्षों में लक्ष्यों को पूरा करने के लिए कार्यनीति बनाई है।

Lवच्छता हमारे लिए आवश्यक है। स्वच्छता की अवहेलना हमें घातक बीमारियों से ग्रस्त कर सकती है। अस्वस्थता के चलते हजारों बच्चे मौत का शिकार हो जाते हैं। अस्वस्थता के चलते हमारे द्वारा फैलाया कूड़ा–करकट पर्यावरण को नुकसान पहुंचा रहा है। इन सारे तथ्यों से हम पूर्व में परिचित हो चुके हैं। हमने यह भी जाना है कि अगर कचरे का प्रबंधन सही तरीके से किया जाए तो संसाधन के रूप में परिवर्तित हो सकता है।

स्वच्छता हमारी संस्कृति की पहचान रही है। वेदों में इसका विवरण है। भौतिकता और स्वार्थ–हित में हम इस कदर लिप्त हो गये हैं कि हमने अपनी संस्कृति के मूल भाव को विस्मृत कर दिया है।

LoPN Òkjr fe'ku % 2 अक्टूबर, 2014 को देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने स्वच्छ भारत मिशन का प्रारंभ किया। इस मिशन का मूल उद्देश्य भारत को खुले में शौच से मुक्त तथा स्वच्छता के सभी आयामों को प्राप्त करना है। यह मिशन राजनीति से ऊपर और देशभक्ति की

भावना से प्रेरित है। प्रधानमंत्री ने हर भारतीय को स्वच्छ भारत बनाने के उद्देश्य को प्राप्त करने में शामिल होने की अपील की है।

mís';

- भारत में खुले में शौच की प्रवृत्ति की पूर्ण समाप्ति।
- अस्वास्थकर शौचालयों को बहाने वाले शौचालयों में परिवर्तित करना।
- हाथों से मल–सफाई व्यवस्था को जड़ से समाप्त करना।
- लोगों के व्यवहार में बदलाव कर अच्छे स्वास्थ्य के विषय में जागरूकता करना।
- जन–जागरूकता पैदा करने के लिए सार्वजनिक स्वास्थ्य और साफ–सफाई के कार्यक्रम से लोगों को जोड़ना।
- साफ–सफाई से सबंधित सभी व्यवस्था को नियंत्रित और संचालित करने के लिए शहरी स्थानीय निकाय को मजबूत बनाना।
- पूर्ण वैज्ञानिक प्रक्रियाओं द्वारा निपटान का दुबारा प्रयोग और म्युनिसिपल ठोस अपशिष्ट का पुनः चक्रण।

परियोजना का क्रियान्वयन : स्वच्छ भारत मिशन के दो उप अभियान हैं जैसे– स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण, स्वच्छ भारत मिशन शहरी। इन दो उप मिशनों के लिए पेयजल, स्वच्छता और ग्रामीण विकास के मंत्रालय ग्रामीण इलाकों में इसकी जिम्मेदारी लेंगे और शहरी विकास मंत्रालय शहरों में इस मिशन का उत्तरदायित्व लेगा।

स्वच्छा भारत मिशन के तहत ग्रामीण इलाकों में ग्रामीण विकास मंत्रालय हर गांव को अगले पांच सालों तक हर साल 20 लाख रुपये देगा। इस मिशन के तहत सरकार ने हर परिवार में व्यक्तिगत शौचालय की लागत 12,000 रुपए तय की है। एक अनुमान के मुताबिक पेयजय और स्वच्छता मंत्रालय द्वारा इस मिशन पर 1,34,000 करोड़ रुपए खर्च किए जाएंगे।

स्वच्छ भारत मिशन के शहरी क्षेत्र हर घर में शौचालय बनाने, सामुदायिक और सार्वजनिक शौचालय बनाने, ठोस कचरे का उचित प्रबंध करने और

4041 वैधानिक कस्बों के 1.04 करोड़ घरों को इसमें सम्मिलित करने का लक्ष्य है।

पेयजल और स्वच्छता मंत्रालय ने 2012 से 2022 के दौरान ग्रामीण स्वच्छता और सफाई कार्यनीति तैयार की है। इस कार्यनीति का मुख्य उद्देश्य निर्मल भारत के स्वप्न को साकार करने के लिए ठोस धरातल पर कार्य करना है। एक ऐसा परिवेश बनाना है जो स्वच्छता और स्वास्थ्यकर हो।

निर्मल भारत की संकल्पना में एक ऐसे राष्ट्र की कल्पना की गई है जहां खुले स्थान पर शौच करने की पारंपरिक प्रथा को पूर्ण रूप से समाप्त कर दिया जाए जिससे प्रत्येक जन आत्मसम्मान से जीवन जी सके। ग्रामीण क्षेत्रों में निर्मल भारत के स्वप्न को साकार करने के लिए विभाग ने आने वाले वर्षों के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए कार्यनीति बनाई है।

jktLFkku dk fuey Òkjr vfÒ;ku % राजस्थान सरकार ग्रामीण विकास एवं पंचायती राज विभाग ने अक्टूबर, 2014 में निर्मल भारत के स्वप्न को साकार करने के लिए अपने प्रयासों को बढ़ाया है। निर्मल भारत मिशन का उद्देश्य ही ग्रामीण भारत मिशन को जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाना है। ठोस एवं तरल कूड़ा–कचरा प्रबंधन के माध्यम से ही व्यवस्था के लक्ष्य को सहजता से प्राप्त किया जा सकता है।

LoPNrk gr fo|kfFk;k dk ç;kl % स्वच्छता अभियान में अणुव्रत आंदोलन की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। विद्यार्थियों को चाहिए कि –

- अपने विद्यालय के मैदान को साफ करें।
- स्कूल के बगीचों का रखरखाव और सफाई करें।
- अपने गांव के लोगों को सफाई के प्रति जागृत करें।
- अगर कोई गंदगी फैलाता है तो उसे रोके और समझाएं।
- स्वच्छ भारत अभियान के वाहक बने।

यह भूमिका 'स्वच्छ भारत को स्वस्थ भारत' बनाने में अहम् होगी। ❑

सफाई शब्द एक, लाभ अनेक

स्वच्छता अभियान का मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीय स्वच्छता से सब को स्वच्छ बनाना है। हमारे देश में नगरों के आसपास की कच्ची बस्तियों में, गावों की ढाणियों में शौचालयों का अत्यधिक अभाव है। इससे खुले में शौच करने से गंदगी बढ़ती है तथा पेयजल के साथ ही वातावरण भी दूषित होता है। गंदगी के कारण स्वास्थ्य भी खराब हो जाता है व अनेक बीमारियां फैलती हैं।

◈ euh"kk बारहवीं
राजकीय महारानी बालिका उच्च माध्य. विद्यालय
बीकानेर, राजस्थान

Òारत के राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ने भारत देश को गुलामी से मुक्त कराया परंतु 'क्लीन इण्डिया' का उनका सपना पूरा नहीं हुआ। विश्व स्वास्थ्य संगठन की दृष्टि में भी भारत में स्वच्छता की कमी है। इन्हीं बातों का चिंतन कर भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी ने गांधी जयंती 2 अक्टूबर, 2014 को स्वच्छ भारत अभियान की शुरुआत की। इसी अभियान से हमारे देश में सफाई व हमारा देश गंदगी मुक्त होकर स्वच्छ व निर्मल देश बन जायेगा।

LoPNrk D;k g % 'स्वच्छ' शब्द का अर्थ अत्यन्त साफ व विशुद्ध है तथा पवित्रता ही स्वच्छता है। स्वच्छता में 'ता' प्रत्यय जोड़ने पर भाव वाचक स्वच्छता है। स्वच्छता का आशय सब प्रकार से साफ–सफाई व वस्त्रों व मन की सफाई, स्वच्छता अपने आसपास के वातावरण की स्वच्छता व पवित्रता है। स्वच्छता अच्छे संस्कार व सुसभ्यता की निशानी है।

LoPNrk d çdkj % स्वच्छता के अनेक प्रकार हैं, जैस मन और शरीर की स्वच्छता व अपने वस्त्रों की सफाई, पेयजल की स्वच्छता। ये सब ही

स्वच्छता के ही भेद हैं। महात्मा गांधी ने अपने पत्रों के माध्यम से ही स्वच्छ भारत का सपना देखा था जो कि हमारे देश के माननीय प्रधानमंत्री जी ने स्वच्छता व शौच मुक्त करने का लक्ष्य किया। सरकार द्वारा अनेक गावों व ढाणियों को स्वच्छ बनाने के लिए कहा जा रहा है। जगह–जगह पर शौचालयों का निर्माण किया जा रहा है।

LoPNrk vfÒ;ku dk mí'; % स्वच्छता अभियान का मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीय स्वच्छता से सब को स्वच्छ बनाना है। हमारे देश में नगरों के आसपास की कच्ची बस्तियों में, गावों की ढाणियों में शौचालयों का अत्यधिक अभाव है। इसमें खुले में शौच करने से गंदगी बढ़ती है तथा पेयजल के साथ ही वातावरण भी दूषित होता है। गंदगी के कारण स्वास्थ्य भी खराब हो जाता है व अनेक बीमारियां फैलती हैं। स्वच्छ पेयजल की व्यवस्था करना ही स्वच्छता का प्रमुख उद्देश्य माना गया है।

LoPNrk d ykÒ % स्वच्छता के अनेक लाभ हो सकते हैं। सरकार ने इस अभियान को आर्थिक स्थिति से जोड़ा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपार्ट में भारत के प्रत्येक नागरिक को बीमारियों से युक्त पाया गया है। इस दृष्टि से सरकार ने गरीब परिवारों, बी.पी.एल. अल्पसंख्यकों व किसानों को 12 हजार रुपये देने की योजना की शुरुआत की है। यह प्रोत्साहन रूप में राशि दी गयी है।

इसके साथ ही स्वच्छ पेयजल व कूड़ा–कचरा, गंदगी आदि को हटाना चाहिए व स्वच्छता अभियान के प्रारंभ होने से अनेक गांवों को खुला शौच मुक्त बनाया गया है। मैं यह प्रण लेती हूं कि मैं विद्यालय, घर के आसपास के वातावरण की भी साफ–सफाई रखूंगी व कचरा इधर–उधर नहीं बिखेरूंगी। समाज के लोगों को स्वच्छता के लिए प्रेरित करूंगी।

स्वच्छता का सीधा संबंध हमारी सभ्यता व संस्कृति से बताया गया है। स्वच्छ भारत बनाने के लिए मैं अपने घर के आसपास के वातावरण को व अन्य सार्वजनिक स्थलों को स्वच्छ रखूंगी। जब हम अपना घर–मौहल्ला यह सब स्वच्छ रखेंगे तो हमारा देश और प्रगतिशील बनता जायेगा। ❑

> *क्या हमें कभी दर्द हुआ है कि हमारी मां और बहनों को खुले में शौच करना पड़ता है। गांव की गरीब महिलायें रात का इतंजार करती हैं। जब तक नहीं अंधेरा उतरता है तब तक वे शौच को बाहर नहीं जा सकतीं। उन्हें किस प्रकार की शारीरिक यातना होती होगी, क्या हम आपकी मां और बहनों की गरिमा के लिये शौचालय की व्यवस्था नहीं कर सकते हैं ?*

विद्यार्थियों की भागीदारी पर जोर

◈ **vjk/; ek;** आठवीं
सीएमपी गुजराती बॉयज स्कूल
नसिया रोड, इंदौर, मध्यप्रदेश

Lवच्छ भारत अभियान भारत सरकार द्वारा आरंभ किया गया राष्ट्रीय स्तर का अभियान है जिसका उद्देश्य गलियों, सड़कों तथा अधोसंरचना को साफ–सुथरा करना है। यह अभियान महात्मा गांधी, हमारे भारत के राष्ट्रपिता के जन्मदिन 2 अक्टूबर, 2014 को आरंभ किया गया। महात्मा गांधी ने लोगों को अपने आसपास स्वच्छता बनाए रखने संबधी शिक्षा प्रदान कर राष्ट्र को एक उत्कृष्ट संदेश दिया था।

स्वच्छ भारत का उद्देश्य सामुदायिक शौचालयों के निर्माण के माध्यम से खुले में शौच को कम करना या समाप्त करना है। स्वच्छ भारत मिशन सरकार ने 2 अक्टूबर, 2019 (राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के जन्म की 150वीं वर्षगांठ) तक ग्रामीण भारत में 1.96 लाख करोड़ रुपये की अनुमानित लागत के 12 करोड़ शौचालयों का निर्माण करके खुले में शौच मुक्त भारत को हासिल करने का लक्ष्य रखा है।

आधिकारिक रूप से 1 अप्रैल, 1999 से शुरू भारत सरकार ने व्यापक ग्रामीण स्वच्छता कार्यक्रम का पुनर्गठन किया और पूर्ण स्वच्छता अभियान

शुरू किया जिसको बाद में तत्कालीन प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह द्वारा निर्मल भारत अभियान नाम दिया गया था। स्वच्छता भारत अभियान के रूप में 24 सितम्बर, 2014 को केंद्रीय मंत्रिमंडल की मंजूरी से निर्मल भारत अभियान का पुनर्गठन किया गया।

निर्मल भारत अभियान (1999 से 2012 तक पूर्ण स्वच्छता अभियन या टीएससी) भारत सरकार द्वारा शुरू की गई समुदाय की अगुवाई वाली पूर्ण स्वच्छता के सिद्धांतों के तहत एक कार्यक्रम था। इस स्थिति को हासिल करने वाले गांवों को निर्मल ग्राम पुरस्कार नामक कार्यक्रम के तहत मौद्रिक पुरस्कार और उच्च प्रचार प्राप्त हुआ।

स्वच्छ भारत अभियान 2 अक्टूबर, 2014 को शुरू किया गया था और 2019 तक खुले में शौच को खत्म करना इसका उद्देश्य है। स्वच्छ भारत अभियान 4041 वैधानिक शहरों और कस्बों को कवर करने वाला राष्ट्रीय अभियान है।

सरकार ने 2 अक्टूबर, 2019 तक खुले में शौच मुक्त भारत को हासिल करने का लक्ष्य रखा है। क्या हमें कभी दर्द हुआ है कि हमारी मां और बहनों को खुले में शौच करना पड़ता है। गांव की गरीब महिलायें रात का इतंजार करती हैं। जब तक नहीं अंधेरा उतरता है तब तक वे शौच को बाहर नहीं जा सकतीं हैं। उन्हें किस प्रकार की शारीरिक यातना होती होगी, क्या हम आपकी मां और बहनों की गरिमा के लिये शौचालय की व्यवस्था नहीं कर सकते हैं?

जब छात्राएं उस उम्र तक पहुंचती हैं जहां उन्हें पता चल जाता है कि स्कूल में महिला शौचालयों की कमी के कारण अपनी शिक्षा बीच में छोड़ दी है, जब वे अपनी शिक्षा को बीच में छोड़ देती हैं तो वे अशिक्षित रहती हैं। हमारी बेटियों को गुणवत्ता की शिक्षा का समान मौका ही मिलना चाहिये। 70 वर्षों की स्वतंत्रता के बाद प्रत्येक स्कूलों में छात्राओं के लिये अलग शौचालयों का निर्माण होना चाहिये था लेकिन विगत कई वर्षों से लड़कियों के लिये अलग–अलग शौचालय नहीं दे सके और नवीनतम छात्राओं को अपनी शिक्षा को बीच में ही छोड़ना पड़ता है। राज्य

आंध्र प्रदेश में विशाखापटनम् के तूफान से प्रभावित बंदरगाह शहर को साफ करने के लिये छात्राओं ने हाथों में झाड़ू उठायी थी।

स्वच्छ भारत विद्यालय अभियान भारत की तत्कालीन मानव संसाधन विकास मंत्री स्मृति ईरानी द्वारा लांच किया गया जिसमें स्कूल के शिक्षकों और छात्रों के साथ स्वच्छता अभियान में उन्होंने भी भाग लिया। मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अधीन स्वच्छ भारत, स्वच्छ विद्यालय अभियान 25 सितम्बर, 2014 से 31 अक्टूबर, 2014 के बीच केंद्रीय विद्यालय और नवोदय विद्यालय संगठन में आयोजित किया गया। इस दौरान की जागे वाली गतिविधियों में शामिल हैं–

- स्कूल कक्षाओं के दौरान प्रतिदिन बच्चों के साथ–सफाई और स्वच्छता के विभिन्न पहलुओं पर विशेष रूप से महात्मा गांधी की स्वच्छता और अच्छे स्वास्थ्य से जुड़ी शिक्षाओं के संबंध में बात करें।
- कक्षा प्रयोगशाला और पुस्तकालयों आदि की सफाई करना।
- शौचालयों और पीने के पानी वाले क्षेत्रों की सफाई करना।
- रसोई और सामान गृह की सफाई करना।
- खेल के मैदानों की सफाई करना।
- स्कूल बगीचों का रखरखाव और सफाई करना।
- स्कूल भवनों का वार्षिक रखरखाव रंगाई एवं पुताई के साथ।
- निबंध, वाद–विवाद, चित्रकला, सफाई और स्वच्छता पर प्रतियोगिता का आयोजन।
- बाल मंत्रिमंडलों का निगरानी दल बनाना और सफाई अभियान की निगरानी करना।

इसके अलावा फिल्म शो, स्वच्छता पर निबंध, चित्रकारी और अब प्रतियोगिताएं नाटकों आदि को आंदोलन द्वारा स्वच्छता एवं अच्छे स्वास्थ का संदेश प्रसारित करना। मंत्रालय ने इसके अलावा स्कूल के छात्रों,

शिक्षकों, अभिभावकों और समुदाय के सदस्यों को शामिल करके सप्ताह मे दो बार आधे घंटे सफाई अभियान शुरू करने का प्रस्ताव भी रखा।

मिशन का उद्देश्य 1.04 करोड़ परिवारों को शिक्षित करते हुए 2.5 लाख सामुदायिक शौचालय, 2.6 लाख सार्वजनिक शौचालय और प्रत्येक शहर में एक ठोस अपशिष्ट प्रबंधन की सुविधा प्रदान करना है। इस कार्यक्रम के तहत आवासीय क्षेत्रों में जहां व्यक्गित घरेलू शौचालयों का निर्माण करना मुश्किल है, वहां सामुदायिक शौचालयों का निर्माण करना। पर्यटन स्थलों, बाजारों, बस स्टेशन, रेलवे स्टेशनों जैसे प्रमुख स्थानों पर भी सार्वजनिक शौचालयों का निर्माण किया जाएगा। यह कार्यक्रम पांच साल की अवधि में 4401 शहरों में लागू किया जाएगा।

इस कार्यक्रम में खुले में शौच, अस्वच्छ शौचालयों को फ्लश शौचालयों में परिवर्तित करने, मैला ढोने की प्रथा का उन्मूलन करने, नगरपालिका ठोस अपशिष्ट प्रबंधन और स्वस्थ एवं स्वच्छता से जुड़ी प्रथाओं के संबंध में लोगों के व्यवहार में परिवर्तन लाना आदि शामिल है। ❑

साफ–सफाई के लिए एक–दूसरे को करें प्रेरित

भारत में स्वच्छता अभियान को शुरू करने के पीछे देश की गंदगी हटाने के साथ देश में शौचालय सुविधाएं उपलब्ध कराने का लक्ष्य रखा गया है। इसके लिए सरकार की तरफ से आर्थिक मदद मुहैया कराई जाती है जिससे की गरीब परिवार के साथ-साथ सामुदायिक व पब्लिक शौचालय का ज्यादा से ज्यादा निर्माण हो सके।

◈ mRd"k ;kno सातवीं
जयपुरिया बाल विद्यालय
जे.एल.एम.मार्ग, जयपुर, राजस्थान

स्वच्छ भारत अभियान, जिसे क्लीन इंडिया मिशन या क्लीन ड्राइव भी कहते हैं, भारत सरकार के द्वारा चलाया जाने वाला स्वच्छता का सबसे बड़ा अभियान है जिसमें भारत के सभी गांवों एवं शहरों की गलियों, सड़कों एवं शौचालयों को साफ करने व जहां कहीं पर शौचालयों नहीं हैं, वहां नए बनाने का लक्ष्य रखा गया है।

भारत के प्रधानमंत्री के आवाह्न पर स्वच्छ भारत अभियान ने देश की बड़ी–बड़ी हस्तियों को भी जोड़ा है जिससे देश के आम नागरिकों को इस अभियान से जोड़ने के लिए प्रेरित किया जा सके। स्वच्छ भारत अभियान के लिए क्रिकेट के महान बल्लेबाज सचिन तेंदुलकर, योग गुरु बाबा रामदेव, एक्टर कमल हसन, प्रियंका चोपड़ा आदि लोगों को नामित किया गया है जो कि समय–समय पर अलग–अलग कार्यक्रमों के द्वारा देश की जनता को प्रेरित करते रहते हैं।

स्वच्छ भारत अभियान को भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने महात्मा गांधी के जन्म दिन 2 अक्टूबर, 2014 को राजघाट, नई दिल्ली

से शुरू किया था। दुनिया में यह अभियान सबसे बड़ा सफाई अभियान माना गया है जिसमें लाखों सरकारी कर्मचारियों के साथ देश की मशहूर हस्तियां, एनजीओ, छात्र संगठन, नेता के साथ आम जनता भी दिल से जुड़ी हुई है।

भारत में स्वच्छता अभियान को शुरू करने के पीछे देश की गंदगी हटाने के साथ देश में शौचालय सुविधाएं उपलब्ध कराने का लक्ष्य रखा गया है। इसके लिए सरकार की तरफ से आर्थिक मदद मुहैया कराई जाती है जिससे की गरीब परिवार के साथ–साथ सामुदायिक व पब्लिक शौचालय का ज्यादा से ज्यादा निर्माण हो सके। इसके लिए सरकार का लक्ष्य 5 साल में पूरे देश को खुले से शौच मुक्त बनाना है। प्रधानमंत्री ने कहा है कि हम 2 अक्टूबर, 2019 जो कि महात्मा गांधी जी की 150वीं जन्म शताब्दी है, तब तक देश के सभी गावों में 1.96 लाख करोड़ खर्च करके 20 लाख शौचालय बनवा देंगे।

गांवों में अभियान के लिए पेयजल और स्वच्छता और ग्रामीण विकास के मंत्रालय ग्रामीण इलाकों की जिम्मेदारी लेंगे और शहरी विकास मंत्रालय शहरों के इस मिशन को देखभाल करेगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने स्वच्छ भारत अभियान को राजनीति से पहले और देशभक्ति वाला अभियान बताते हुए कहा था कि सभी राजनीतिक दल व संगठनों को आगे आकर इस अभियान की सफलता के लिए काम करना चाहिए एवं इसमें किसी भी प्रकार की राजनीति नहीं होनी चाहिए।

भारतीय सरकार ने एक ऐसा रचनात्मक और सहयोगात्मक मंच प्रदान किया है जो राष्ट्रव्यापी आंदोलन की सफलता सुनिश्चित करता है। यह मंच प्रौद्योगिकी के माध्यम से नागरिकों और संगठनों के अभियान संबंधी प्रयासों के बारे में जानकारी प्रदान करता है। कोई भी व्यक्ति, सरकारी संस्था या निजी संगठन अभियान में भाग ले सकते हैं। इस अभियान का उद्देश्य लोगों को उनके दैनिक कार्यों में से कुछ घंटे निकालकर भारत में स्वच्छता संबंधी कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करना है।

हम सबको स्वच्छ भारत के निर्माण के लिए एक साथ मिलकर कार्य

करना पड़ेगा। ऐसे लोगों की श्रृंखला बनाने हेतु जो दूसरों को उनके आसपास के स्थान स्वच्छ रखने के लिए प्रेरित करे। स्वच्छ भारत अभियान पोर्टल के रूप में एक रचनात्मक और सहयोगात्मक मंच प्रदान किया गया है जहां प्रतिभागी किसी विशेष स्थान को साफ करने के बाद उसकी पहले और बाद की तस्वीरें साझा कर सकते हैं। पंजीकृत प्रतिभागी को सबसे पहले प्रतिज्ञा लेनी होगी और उसके बाद नौ अन्य व्यक्तियों को उनके आसपास के स्थानों की सफाई करने के लिए आमंत्रित करना होगा।

यह कार्य एक निश्चित अवधि में समाप्त हो जाना चाहिए जिसकी जानकारी उन्हें टाइमलाइन पर साझा करनी होगी। स्वच्छ भारत समुदाय अधिक से अधिक स्वयंसेवकों को इस अभियान से जोड़ेगा जो अपने आसपास के स्थानों में इस अभियान के सफल कार्यान्वयन को सुनिश्चित करेंगे। इन सभी गतिविधियों का उद्देश्य अधिक से अधिक लोगों को इस अभियान से जोड़कर इसे एक जन–आंदोलन बनाना है जिससे 2019 तक गांधी जी का स्वच्छ भारत का स्वप्न पूरा किया जा सके।

यह अभियान न केवल नागरिकों को स्वच्छता संबंधी आदतें अपनाने बल्कि हमारे देश की छवि स्वच्छता के लिए तत्परता से काम कर रहे देश के रूप में बनाने में भी मदद करेगा। ❑

स्वच्छता बने सबकी प्राथमिकता

◈ Ôfedk pny आठवीं
माऊंट कार्मेल स्कूल
इंदौर, मध्यप्रदेश

स्कूल और कॉलेजों से स्वच्छता के विभिन्न प्रकारों के विषय पर विद्यार्थियों को बहुत सारे होमवर्क दिये जाते हैं। आज के दिनों में ये बहुत ही महत्वपूर्ण विषय हैं, क्योंकि एक बहुत बड़ी जनसंख्या स्वच्छता के अभाव में बीमारी की वजह से रोज मर रही है। इसलिए हमें जीवन में स्वच्छता के महत्व और जरूरत के बारे में जागरूक होना बेहद आवश्यक है।

Çधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के स्वच्छ भारत अभियान के उद्देश्य को पूरा करने के लिए यह एक बड़ा कदम है। हर भारतीय नागरिक को एक छोटा सा कदम रोजमर्रा के जीवन में हमें अपने बच्चों को साफ–सफाई के महत्व और इसके उद्देश्य को सिखाना चाहिये। यहां पर कई लघु ओर बड़े निबंध स्कूल जाने वाले छोटे बच्चों के लिए उपलब्ध करा रहे हैं। चलिये, इसके माध्यम से हम स्वच्छता को उनके जीवन का हिस्सा बनायें।

स्वच्छता एक ऐसा कार्य है जो हमें दबाव में नहीं करना चाहिये। यह एक अच्छी आदत है और स्वस्थ तरीका है हमारे अच्छे स्वस्थ जीवन के लिये। अच्छे स्वास्थ्य के लिए सभी प्रकार की स्वच्छता बहुत जरूरी है। चाहे कोई व्यक्तिगत हों अपने आसपास की पर्यायवरण की, पालतू जानवरों की या काम करने की, जंगल, स्कूल, कॉलेज आदि हों हम सभी को निहायत जागरूक होना चाहिये कि कैसे अपने रोजमर्रा के जीवन में स्वच्छता को बनाये रखना है। अपनी आदत में साफ–सफाई को शामिल करना बहुत बहुत आसान है। हमें स्वच्छता से कभी समझौता नहीं करनी चाहिये। यह जीवन में पानी और खाने की तरह ही आवश्यक है। बचपन

से ही कुशल होना चाहिए जिसकी शुरुआत केवल हर अभिभावक के द्वारा हो सकती है पहली और सबसे बड़ी जिम्मेदारी के रूप में।

साफ–सफाई एक अच्छी आदत है जो पर्यावरण और आदर्श जीवन शैली के लिये हर एक के पास होनी चाहिये। हमारे प्रधामंत्री ने कहा था कि हमें ये समझना चाहिये कि यह केवल हमारे प्रधानमंत्री का कार्य नहीं है बल्कि यह समाज में रहने वाले हर इंसान की जिम्मेदारी है। हम सबके स्वस्थ जीवन के लिये इस अभियान में हमें मिलकर भाग लेना चाहिये।

इसकी शुरुआत घरों, स्कूलों, कॉलेजों, समुदायों, कार्यालयों, संस्थानों से ही की जानी चाहिए जिससे कि देश में व्यापक स्तर पर स्वच्छ भारत क्रांति हो। हमें खुद को, घर, अपने आसपास, समाज, समुदाय, शहर, उद्यान और पर्यावरण आदि को रोज स्वच्छता का ध्येय, महत्व तथा जरूरत को समझना चाहिये और इसे अपने दैनिक जीवन में लागू करना चाहिये। कई क्रियाओं के द्वारा स्कूलों में बच्चों के बीच स्वच्छता को प्रचारित किया जाता है, जैसे स्कूल परिसरों को सफाई, क्लासरूम की सफाई, लैब की सफाई, स्वच्छता पर पोस्टर बनाना, गंदगी को अलग करना, निबंध लिखना, स्वच्छता पर पेंटिग बनाना, कविता पाठ, समूह चर्चा, डॉक्यूमेंटरी वीडियो आदि।

स्वच्छता हर नागरिक की पहली और प्राथमिक जिम्मेदारी होनी चाहिये। सभी को यह बात समझना चाहिये कि खाने और पानी की तरह ही स्वच्छता भी बेहद आवश्यक है। बल्कि हमें स्वच्छता को खाने और पानी ये ज्यादा प्राथमिक देनी चाहिये। हम केवल तभी स्वस्थ रह सकते हैं जब हम सब कुछ बहुत सफाई और स्वास्थकर तरीके से करें। बचपन सभी के जीवन का सबसे अच्छा समय होता है जिसके दौरान स्वच्छता की आदत में कुशल हो सकते हैं जैसे चलना–बोलना, दौड़ना, पढ़ना, खाना आदि अभिभावक की नियमित निगरानी और सतर्कता के साये में हो।

स्कूल और कॉलेजों से स्वच्छता के विभिन्न प्रकारों के विषय पर विद्यार्थियों को बहुत सारे होमवर्क दिये जाते हैं। आज के दिनों में ये बहुत ही

महत्वपूर्ण विषय हैं, क्योंकि एक बहुत बड़ी जनसंख्या स्वच्छता के अभाव में बीमारी की वजह से रोज मर रही है। इसलिए हमें जीवन में स्वच्छता के महत्व और जरूरत के बारे में जागरूक होना बेहद आवश्यक है। हजारों जीवन को बचाने और उन्हें स्वस्थ जीवन देने के लिये हम सभी को मिलकर स्वच्छता की ओर कदम बढ़ाने की जरूरत है। हमारे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के इस अभियान में हम सभी को इसके उद्देश्य और लक्ष्य को पूरा करने से सक्रिय रूप से भाग लेना चाहिये।

स्वच्छ भारत अभियान भारत सरकार का एक सफाई अभियान है, यह एक महत्वपूर्ण विषय है और हमारे बच्चों और और छात्रों को इसकी जानकारी होना आवश्यक है। यह एक सामान्य ज्ञान का विषय है और आम तौर पर छात्रों को स्कूलों में इसके बारे में लिखने को दिया जाता है।

स्वच्छ भारत अभियान को स्वच्छ भारत मिशन और स्वच्छता अभियान भी कहा जाता है। यह एक राष्ट्रीय स्तर का अभियान है और भारत सरकार द्वारा चलाया जा रहा है जो कि शहर और गांवों की सफाई का निर्माण, ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छता कार्यक्रमों को बढ़ावा देना, गलियों व सड़कों की सफाई देश के बुनियादी ढांचे को बदलना आदि शामिल है।

स्वच्छ भारत अभियान भारत सरकार द्वारा चलाया गया एक स्वच्छता मिशन है, 2 अक्टूबर, 2014 को महात्मा गांधी की 145वें जन्मदिन के अवसर पर भारत सरकार की ओर से आधिकारिक तौर पर शुरू किया गया था। भारत सरकार 2 अक्टूबर, 2019 तक भारत को स्वच्छ भारत बनाने का उद्देश्य रखा है जो की महात्मा गांधी की 150वीं जयंती होगी।

यह एक ऐसा अभियान है जो देशभक्ति से प्रेरित है। यह प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक जिम्मेदारी है और देश को स्वच्छ बनाने के लिये हर भारतीय नागरिक की भागीदारी की आवश्यकता है। इस अभियान को सफल बनाने के लिए विश्व स्तर पर लोगों ने पहल की है। शिक्षक और स्कूलों के छात्र इसमें पूर्ण उत्साह और उल्लास के साथ शामिल हो रहे हैं और स्वच्छ भारत अभियान को सफल बनाने का प्रयास कर रहे हैं। ❑

'अणुव्रत' संस्थान की स्वच्छ भारत के निर्माण में बहुत बड़ी भूमिका रही है। मगर हम अणुव्रत की भी भूमिका का वर्णन करना चाहते हैं। अणुव्रत का शाब्दिक अर्थ है- 'छोटे-छोटे संकल्प'। कहते हैं हजारों मीलों की यात्रा एक कदम से आरंभ होती है। ऐसे ही छोटे-छोटे संकल्पों द्वारा बड़े-बड़े लक्ष्य प्राप्त हो सकते हैं।

स्वच्छता के लिए न्यास के अनेक प्रयास

◈ y{eh दसवीं
लालाजी मैमोरियल ओमेगा
इंटरनेशनल स्कूल
कोलापक्कम, चेन्नई, तमिलनाडु

Òारत के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 2 अक्टूबर, 2014 को 'स्वच्छ भारत अभियान' की शुरुआत की। मगर स्वच्छ भारत अभियान और स्वच्छ भारत के निर्माण में बहुत अंतर है। अणुव्रत के महिला मंडल का मानना है कि तन, मन और चिंतन का समान रूप से स्वच्छ होना स्वच्छता के लिए आवश्यक है। इन्हीं आदर्शों पर आधारित 'अणुव्रत न्यास' के स्वच्छ भारत निर्माण के लिए किए गए प्रयास अनगिनत हैं। 'अणुव्रत न्यास' ने तन, मन और चिंतन के साथ वातावरण को स्वच्छ करने हेतु कई सार्थक कदम उठाए हैं।

ru dh LoPNrk % संस्कृत में कहा गया है– ''शरीर माध्यम खलु धर्म साधनम्'' अर्थात् शरीर ही सुकर्म करने का माध्यम है। निःसंदेह यहां स्वच्छ शरीर की ही बात की जा रही है। क्योंकि रोगी देह किसका भला कर सकेगी। 'पहला सुख निरोगी काया' मद्दे–नजर ही 'अणुव्रत न्यास' ने 'आचार्य तुलसी डायग्नॉस्टिक सेंटर' की स्थापना मुंबई, बैंगलोर, दिल्ली, चेन्नई, उधना, रायपुर और सूरत आदि शहरों में की। कार्यकर्ताओं ने मुंबई में गरीब मरीजों के बीच फलों और बिस्किट का वितरण किया।

भगवद्गीता में श्रीकृष्ण ने कहा है– *अनेकचित्तविभ्रान्ता मोहजाल समावृताः। प्रसक्ताः कामभोगेषु पतन्ति नरकेशुचौ।* अर्थात् अनेक प्रकार से भ्रमित चित्तवाले मोहरूप जाल से समावृत और विषय भोगों में अत्यंत आसक्त लोग महान अपवित्र नरक में गिरते हैं। आज की दुनिया में मोहजाल में डालकर चित्त भ्रमित करने का सबसे बड़ा साधन शराब है। इसके चंगुल में फंसे लोगों को बचाने का कार्य 'अणुव्रत' ने बहुत जोर–शोर से किया है। जगह–जगह पर नशामुक्ति शिविर लगाकर 'अणुव्रत' कार्यकर्ताओं ने कई लोगों की जान बचाई है। और तो और नशामुक्ति का संदेश बच्चों तक पहुंचाकर अणुव्रत ने नई पीढ़ी को भी जागरूक किया है।

okrkoj.k dh LoPNrk % स्वयं की स्वच्छता के बाद आती है वातावरण की स्वच्छता। वातावरण की स्वच्छता के लिए भी अणुव्रत कार्यकर्ताओं ने योजनाबद्ध कार्य किया है। अणुव्रत के 'महिला मंडल' ने चेन्नई के स्कूलों में कूड़ेदान बांटे और बच्चों को स्वच्छता के महत्व के बारे में बताया। 'आओ चलें गांव की ओर' के अंतर्गत हिसार में 'महिला मंडल' कार्यकर्ताओं सहित गांव कुवारी में स्वच्छता अभियान चलाया और लोगों को जागरूक किया। साथ ही गांव के लोगों के बीच झाड़ू और कूड़ेदान बांटे। कई गांवों में कार्यकताओं ने गौशालाओं की सफाई की और गायों को चारा दिया। पानी आजकल की बहुत बड़ी समस्या है। अणुव्रत कार्यकताओं ने जगह–जगह पर लोगों को पानी का महत्व दर्शाते हुए पानी न बहाने की प्रेरणा दी।

eu dh LoPNrk % जब तक मन स्वच्छ न हो और उसमें स्वच्छ विचार ही न आएं तब तक तन और वातावरण की स्वच्छता नहीं रखी जा सकती। मन को स्वच्छ विचार प्रदान करने के लिए अणुव्रत महिला मंडल ने जयपुर के 'वीर बालिका स्कूल में' जुलूस निकला। उत्तर हावड़ा में जुलूस निकाला और उदयपुर में एक दिन की कार्यशाला आयोजित की। कई प्रतियोगिताओं द्वारा भी इस सुसंदेश को जन–जन तक पहुंचाने के प्रयास किए। बीकानेर में आयोजित 'अंतर्राष्ट्रीय शॉर्ट फिल्म फैस्टिवल पोस्टर' का विमोचन, नैतिक गायन प्रतियोगिताएं, कहानी, नाटिका या कविता लेखन प्रतियोगिताएं, चित्रकारी प्रतियोगिताएं और निबंध लेखन प्रतियोगिताएं इन्ही में कुछ हैं।

LoPN fpru मन और चिंतन में सबसे बड़ा अंतर यही है कि मन बड़ा चंचल होता है। हमें कोई कार्य करने के लिए बार–बार मन बनाना पडता है। चिंतन यदि एक बार सही ढंग से कर लिया जाए तो वह अविचलित कर देता है। जब तक हम बाहरी रूप से विचार थोपते रहेंगे, तब तक वह विचार, चाहें अच्छे हों या बुरे, हवा के झोंके की तरह आकर चले जाएंगे। मगर यदि यही सुविचार आंतरिक रूप से उठें तो उन पर चिंतन करने की संभावना कई गुना बढ़ जाती है।

इन विचारों के आंतरिक रूप से उठने के लिए हृदय की स्वच्छता आवश्यक है अन्यथा सुविचारों की जगह कुविचारों का उठना संभव ही नहीं बल्कि निश्चिय हैं। इसी हृदय की स्वच्छता के लिए अणुव्रत के आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी ने ''प्रेक्षा ध्यान'' शुरू किया। इस ध्यान को आचार्य ने 'जीवन जीने का विज्ञान' कहा है। अणुव्रत के पहले आचार्य श्री तुलसी जी का मानना था कि धर्म व्यक्ति का अभिन्न अंग होना चाहिए। उनका कहना था कि धर्म आचार संहिता है, केवल मूर्ति–पूजा नहीं।

इन्हीं मूल्यों पर खड़ा 'अणुव्रत न्यास' आज के बदलते मूल्यों को पुनः पुराने मूल्यों से जोड़ने का कार्य कर रहा है। 'अणुव्रत' ने ज्ञान और व्यवहार के बीच की दूरी को कम कर दिया है। वे न केवल ज्ञानार्जन करते हैं मगर उससे आत्म–निरीक्षण द्वारा चरित्र निर्माण भी करते हैं। 'अणुव्रत' के पांच मूल्य हैं जो पंचतत्व के समान इस परिवार को जोड़े रखते हैं। यह पंचतत्व 'अणुव्रत' की जीवन शैली को एक सूत्र में पिरोए रखते हैं। यह मूल्य हैं–सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, अचार्य और ब्रह्मचर्य।

'अणुव्रत' संस्थान की स्वच्छ भारत के निर्माण में बहुत बड़ी भूमिका रही है। मगर हम अणुव्रत की भी भूमिका का वर्णन करना चाहते हैं। अणुव्रत का शाब्दिक अर्थ है–'छोटे–छोटे संकल्प'। कहते हैं हजारों मीलों की यात्रा एक कदम से आरंभ होती है। ऐसे ही छोटे–छोटे संकल्पों द्वारा बड़े–बड़े लक्ष्य प्राप्त हो सकते हैं। तो आइये ! आज हम एक अणुव्रत लेते हैं कि सीमित संग्रहण और उपभोग करेंगे। उससे स्वयं ही सीमित कूड़ा पैदा होगा और स्वच्छता बनी रहेगी। ❑

स्वच्छ जीवन हेतु स्वच्छता जरूरी

◈ **Ñfr vxoky** दसवीं
महावीर अकादमी उच्च माध्य. विद्यालय
उदयपुर, राजस्थान

ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छता सबसे कम मात्रा में पाई गई। लोगों ने घरों में शौचालय नहीं बनाए थे परंतु इस अभियान के बाद लोगों में भी स्वच्छ भारत को लेकर भावना जागृत हुई। इस अभियान को पूरा करने में सरकार के साथ लोगों ने भी अपना पूरा योगदान दिया है।

Lवच्छ भारत अभियान की शुरुआत सरकार द्वारा देश को स्वच्छता के प्रतीक के रूप में पेश करना है। स्वच्छ भारत का सपना महात्मा गांधी के द्वारा देखा गया था, जिसके संदर्भ में गांधीजी ने कहा कि ''स्वच्छता स्वतंत्रता से ज्यादा जरूरी है।'' उनके अपने समय में वो देश की गरीबी और गंदगी से अच्छी तरह से अवगत थे, इसी वजह से उन्होंने अपने सपनों को पाने के लिए कई सारे प्रयास किए लेकिन सफल नहीं हो सके।

जैसे ही उन्होंने स्वच्छ भारत का सपना देखा था, उन्होंने कहा कि निर्मलता और स्वच्छता दोनों ही स्वस्थ और शांतिपूर्ण जीवन का अनिवार्य भाग है लेकिन दुर्भाग्य से भारत आजादी के 70 साल बाद भी इन दोनों लक्ष्यों से काफी पीछे है। अगर आकड़ों की बात करें तो केवल कुछ प्रतिशत लोगों के घरों में शौचालय हैं, इसलिए भारत सरकार पूरी गंभीरता से बापू की इस सोच को हकीकत का रूप देने के लिए देश के सभी लोगों को इस मिशन में जोड़ने का प्रयास कर रही है जिससे विश्व भर में वह सफल हो सके। भारत सरकार पूरी गंभीरता से बापू के इस सपने

को पूरा करने में लगी हुई है। सरकार ने इस मिशन को जोड़े रखने का प्रयास किया है।

इस मिशन को अपने प्रारंभ की तिथि से बापू की 150वीं पुण्यतिथि (2 अक्टूबर, 2019) तक पूरा करने का लक्ष्य है। इस अभियान को सफल बनाने के लिए सरकार ने सभी लोगों से निवेदन किया कि वे अपने आसपास और दूसरी जगहों पर साल में सिर्फ 100 घंटे सफाई के लिए दें। इसको लागू करने के लिए बहुत सारी नीतियां और प्रक्रियाएं हैं, जिनमें तीन चरण हैं–योजना चरण, कार्यान्वयन चरण और निरंतरता चरण।

D;k g LoPNrk vfÒ;ku % स्वच्छ भारत अभियान एक राष्ट्रीय स्वच्छता मुहिम है जो भारत सरकार द्वारा स्थापित की गयी है, इसके तहत 4041 सांविधिक नगरों के सड़क, पैदल मार्ग और अन्य कई स्थल आते हैं। यह स्वच्छ भारत अभियान सबसे पहले देश के प्रधानमंत्री मोदी द्वारा चलाया गया है। यह एक बड़ा आंदोलन है जिसके तहत भारत को 2019 तक पूर्णतः स्वच्छ बनाना है। इसमें स्वस्थ और सुखी जीवन के लिए महात्मा गांधी के स्वच्छ भारत के सपनों को आगे बढ़ाया गया है।

vfÒ;ku dh t:jr % अपने उद्देश्य की प्राप्ति तक भारत में इस मिशन की कार्यवाही निरंतर चलती रहनी चाहिये। भौतिक, मानसिक, सामाजिक और बौद्धिक कल्याण के लिए भारत के लोगों में इसका अहसास होना बेहद आवश्यक है। यह सही मायनों में भारत की सामाजिक स्थिति को बढ़ावा देने के लिए है जो हर तरफ स्वच्छता लाने से शुरू किया जा सकता है। यहां नीचे कुछ बिंदु उल्लिखित किये जा रहे हैं जो स्वच्छ भारत अभियान की आवश्यकता को दिखाते हैं।

- यह बेहद जरूरी है कि भारत के हर घर में शौचालय हो, साथ ही खुले में शौच की प्रवृत्ति को भी खत्म करने की आवश्यकता है।
- अस्वास्थ्यकर शौचालय को पानी से बहाने वाले शौचालयों से बदलने की आवश्यकता है।
- हाथ के द्वारा की जाने वाले साफ–सफाई की व्यवस्था का जड़ से खात्मा जरूरी है।

- नगर निगम के कचरे का पुनर्चरण और दुबारा इस्तेमाल, सुरक्षित समापन, वैज्ञानिक तरीके से मल प्रबंधन को लागू करना।
- पूरे भारत में साफ–सफाई की सुविधा को विकसित करने के लिए निजी क्षेत्रों की हिस्सेदारी बढ़ाना।
- स्वास्थ्य शिक्षा कार्यक्रमों के माध्यम से समुदायों और पंचायती राज संस्थानों को निरंतर साफ–सफाई के प्रति जागरूक करना।
- वास्तव में बापू के सपनों को सच करने के लिए यह सब करना है।

'kgjh e LoPN vfÒ;ku % शहरी क्षेत्रों में स्वच्छ भारत मिशन का लक्ष्य हर नगर में ठोस कचरा प्रबंधन सहित लगभग सभी 1.04 करोड़ घरों को 2.6 लाख सार्वजनिक शौचालय, 2.5 लाख समुदायिक शौचालय उपलब्ध कराना है। सामुदायिक शौचालय के निर्माण की योजना रिहायशी इलाकों में की गई है, जहां पर व्यक्तिगत घरेलू शौचालय की उपलब्धता मुश्किल है, इसी तरह सार्वजनिक शौचालय की प्राधिकृत स्थानों पर, जैसे बस अड्डों, रेलवे स्टेशन, बाजार आदि जगहों पर। शहरी क्षेत्रों में स्वच्छता कार्यक्रम को पांच वर्षों के अंदर 2019 तक पूरा करने के योजना है।

xkeh.k LoPN Òkjr fe'ku % ग्रामीण स्वच्छ भारत मिशन एक ऐसा अभियान है जिसमें ग्रामीण भारत में स्वच्छता कार्यक्रम को अमल में लाना है। ग्रामीण क्षेत्रों को स्वच्छ बनाने के लिए 1999 में भारतीय सरकार द्वारा इससे पहले निर्मल भारत अभियान (जिसको पूर्ण स्वच्छता अभियान भी कहा जाता है) की स्थापना की गई थी लेकिन अब इसका पुनर्गठन स्वच्छ भारत अभियान (ग्रामीण) के रूप में किया गया है।

इसका मुख्य उद्देश्य ग्रामीणों को खुले में शौच करने की मजबूरी से रोकना है, इसके लिए सरकार ने 11 करोड़, 11 लाख शौचालयों के निर्माण के लिए एक लाख चौंतीस हजार करोड़ की राशि खर्च करने की योजना बनाई है। ध्यान देने योग्य है कि सरकार की योजना कचरे को जैविक खाद और इस्तेमाल करने लायक ऊर्जा में परिवर्तित करने की भी है। इसमें ग्राम पंचायत, जिला परिषद और पंचायत समिति की अच्छी भागीदारी है।

ग्रामीण इलाकों में स्वच्छता के लिए सरकार ने लोगों को घरों में शौचालय बनाने के लिए प्रेरित किया है। सरकार का सबसे बड़ा लक्ष्य यही है कि भारत को स्वच्छ बनाना। यदि भारत स्वच्छ होगा तो स्वस्थ्य भी होगा। इसी के लिए सरकार ने इसे 'स्वच्छ भारत अभियान' नाम दिया है। सरकार पूरी तरह से कोशिश कर रही है कि हर जगह स्वच्छता हो, इसलिए सरकार ने जगह–जगह पर कूड़ेदान की व्यवस्था की है जिससे स्वच्छता बढ़े। सरकार गंदगी को जड़ से हटाने के लिए पूरी मेहनत कर रही है।

LoPN fo|ky; vfÒ;ku % यह अभियान केंद्रीय मानव संसाधन मंत्रालय द्वारा चलाया गया है और इसका उद्देश्य भी स्कूलों में स्वच्छता लाना है। इस कार्यक्रम में तहत 25 सितम्बर, 2014 से 31 अक्टूबर, 2014 तक केंद्रीय विद्यालय और नवोदय विद्यालय संगठन जहां कई और सारे स्वच्छता क्रिया–कलाप आयोजित किये गए, जैसे विद्यार्थियों द्वारा स्वच्छता के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा, इससे संबंधित महात्मा गांधी की शिक्षा, स्वच्छता और स्वास्थ्य विज्ञान के विषय पर चर्चा, स्वच्छता। क्रिया–कलाप (कक्षा में, पुस्तकालय, प्रयोगशाला, मैदान, बगीचा, किचन शेड दुकान, खानपान की जगह इत्यादि)

यह अभियान काफी आगे बढ़ चुका है। इसको पूर्ण करने के लिए अर्थात् भारत में स्वच्छता लाने के लिए सरकार ने बड़ी–बड़ी योजनाएं बनाईं। ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छता सबसे कम मात्रा में पाई गई। लोगों ने घरों में शौचालय नहीं बनाए थे परंतु इस अभियान के बाद लोगों में भी स्वच्छ भारत को लेकर भावना जागृत हुई। इस अभियान को पूरा करने में सरकार के साथ लोगों ने भी अपना पूरा योगदान दिया है।

इस तरह हम कह सकते हैं कि 2019 तक भारत को स्वच्छ और हरा–भरा बनाने के लिए स्वच्छ भारत अभियान एक स्वागत योग्य कदम है। इस विश्वास के साथ कह सकते हैं कि अगर भारत की जनता द्वारा प्रभावी रूप से इसका अनुसरण किया गया तो आने वाले वर्षों में स्वच्छ भारत का सपना पूरा हो सकेगा। ❑

जहां स्वच्छता, वहीं सुंदरता

◈ **'kknkc vyh l;n** आठवीं
महावीर विद्या मंदिर माध्य. विद्यालय
गणेशघाटी मार्ग, उदयपुर, राजस्थान

स्वच्छता हमारे जीवन में बहुत जरूरी है, क्योंकि जहां स्वच्छता होगी, वहां सुंदरता भी होगी और जहां सुंदरता होगी वहां हरियाली, शांति और सुख भी होगा। स्वच्छता के बिना जीवन अधूरा है। अगर हम नियमित सफाई करें तो देश को साफ-सुथरा होने में समय नहीं लगेगा।

Lवच्छता एक धर्म है। इस धर्म को निभाने के लिए हमें सदैव आगे रहना चाहिए। हम सभी को एक होकर हमारे देश को स्वच्छ, सुंदर और हरा–भरा बनाने की पहल करनी चाहिए। ऐसी ही पहल प्रधानमंत्री श्री नरेद्र मोदी जी ने स्वच्छ भारत अभियान की शुरुआत 2 अक्टूबर, 2014 को गांधी जयंती के शुभ अवसर पर कर दी थी। प्रधानमंत्री ने दिल्ली की एक बाल्मीकि बस्ती में झाड़ू लगाकर इस अभियान की शुरुआत की थी।

सभी महान व्यक्तियों ने सफाई के प्रति कुछ न कुछ तो किया है। फलस्वरूप हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी, जिनको प्यार से बापू भी कहते हैं, उन्होंने भी स्वच्छता को सबसे बड़ा शिष्टाचार कहा था। उन्होंने हाथ में झाड़ू लेकर लोगों के बीच में स्वच्छता के प्रति जागरूकता का संदेश देकर सफाई की थी।

हमें भी ऐसी जागरूकता दिखा कर अपने आसपास के क्षेत्रों में गंदगी दिखी तो उसकी शिकायत पार्षद, महापौर या नगर निगम को बताकर सफाई करवानी चाहिए व उसमें अपना पूरा सहयोग देना चाहिए। बेवजह

जरूरत से अधिक प्लास्टिक का उपयोग न करें क्योंकि प्लास्टिक पर्यावरण को प्रदूषित करता है जो कि हमारे स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।

शौचालयों का निर्माण करवाकर उसे प्रयोग में लें। खुले में शौच न करें। पेड़ों को कटने से बचाएं। सड़क पर कूड़ा डालने वालों को समझा कर उसे कचरा पात्र को उपयोग में लेने की बात कहें। अपने आसपास के दुकानदारों को प्लास्टिक का उपयोग न करने की सलाह दें।

स्वच्छता हमारे जीवन में बहुत जरूरी है, क्योंकि जहां स्वच्छता होगी, वहां सुंदरता भी होगी और जहां सुंदरता होगी वहां हरियाली, शांति और सुख भी होगा। स्वच्छता के बिना जीवन अधूरा है। अगर हम नियमित सफाई करें तो देश को साफ–सुथरा होने में समय नहीं लगेगा।

हम हमारे स्वार्थ के लिए पर्यावरण को प्रदूषित कर रहे हैं जिससे ध्वनि प्रदूषण फैल रहा है। हम सभी तालाबों, नदियों में नहा, पशुओं को नहलाकर, जल में मल–मूत्र त्याग कर इन सभी को गंदा कर रहे हैं। इससे जल–प्रदूषण फैल रहा है। अगर जल गंदा होगा तो हम इसे उपयोग में नहीं लेंगे तो हम जीवित नहीं रह पाएंगे क्योंकि जल ही जीवन है।

हम प्रकृति का सर्वविनाश कर रहे हैं। पर्यावरण का संतुलन बिगाड़ रहे हैं। इससे प्रकृति, पर्यावरण की दशा दिन पर दिन बिगड़ती जा रही है। मनुष्य यह नहीं सोच रहा है कि यह उसके लिए भी खतरा साबित हो सकता है क्योंकि वह भी प्रकृति की चीजों को इस्तेमाल करता है। मनुष्य जानवरों को अपने कार्यों के लिए इस्तेमाल करता है। वह भी पर्यावरण से ऑक्सीजन ले रहा है। अगर यह सभी चीजें नहीं होंगी तो मनुष्य जीवित नहीं रह पाएगा। अतः हम आज से बल्कि अभी से ही सफाई लेने का प्रण लेते हैं।

अगर हम अणुव्रत के नियमों का पालन स्वच्छता अभियान में करें तो वह कुछ इस प्रकार होंगें। हम तोड–फोड़ व उपद्रव न करके कचरा होने को बचा सकते हैं जिससे गंदगी नहीं फैलेगी। हम किताबों को पढ़कर इधर–उधर नहीं फेंके और न कॉपी–किताबों में से कागज फाड़कर

इधर–उधर फेकेंगे। हम कागजों का पनुः उपयोग करेंगे ताकि और कागज की जरूरत नहीं पड़े जिससे वृक्ष को नहीं काटा जाए।

हम नशीले पदार्थों का सेवन नहीं करेंगे। हम सिगरेट आदि चीजें नहीं पीएंगे जिससे कि धुआं न फैले। अगर धुंआ नहीं फैलेगा तो ध्वनि प्रदूषण नहीं होगा जिससे कि वातावरण में शुद्धता, आर्द्रता और ताजगी बनी रहेगी। स्वच्छ श्वास लिया जा सके। हम हरे–भरे पेड़ नहीं काटेंगे। अगर पेड़ ही नहीं रहेंगे तो पर्यावरण संतुलन बिगड़ जाएगा। इस प्रकार हम अणुव्रत के नियमों का पालन करके स्वच्छता अभियान में अपनी भूमिका निभा सकते हैं। ❑

स्वच्छता का पहला कदम घर से हो

आज का युग विज्ञान का युग है। जहां बड़ी-बड़ी मशीनों का प्रयोग हो रहा है, वहीं दूसरी तरफ हमारे पर्यावरण को काफी अस्वच्छता और प्रदूषण जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। लोग अपने हित के लिए पर्यावरण को नुकसान पहुंचा रहे हैं। यह नहीं होना चाहिए।

◈ jhfrdk egrk बारहवीं
माहेश्वरी बालिका विद्यालय
4, सोवारम बाईसेक स्ट्रीट,
कोलकाता, प. बंगाल

gमारे जीवन में स्वच्छता का काफी अधिक महत्व है। इस दृष्टि से हमारे सामने प्रथम प्रश्न आता है कि स्वच्छ भारत का निर्माण कैसे होता है। स्पष्ट शब्दों में कहा जाए तो स्वच्छ भारत के निर्माण के लिए सबसे प्रथम हमें अपने मन में यह संकल्प लेना होगा कि हम अपने देश का अधिक से अधिक स्वच्छ बनाने के लिए अपना हर एक कार्य करें।

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि स्वच्छ भारत का निर्माण करना महात्मा गांधी का एक सपना था तथा गांधी जी ने इसमें सभी को जागरूक भी करने की चेष्टा की परंतु मनुष्यों की अजागरूकता के कारण गांधी जी का यह सपना असफल हो गया। आज वर्तमान में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने 2 अक्टूबर, 2014 को स्वच्छता के प्रति फिर से मनुष्यों में जागरूकता जगाई पर जब तक हम अपने मन में अपने भारत को स्वच्छ बनाने का नहीं ठानेंगे तब तक हमारा भारत स्वच्छ नहीं हो सकता।

v.kor dh Òfedk ¼ स्वच्छ भारत का सपना सिर्फ गांधी जी का ही नहीं, बल्कि पूरे भारतीयों का यह सपना होना चाहिए। हमें स्वच्छता के

लिए पहला कदम अपने घर से ही उठाना होगा। अपने बच्चों तथा परिवार के हर एक सदस्य में यह आदत डालें कि वे कचरा हमेशा कूड़ेदान में ही फेंके। अगर बच्चे घर गंदा करते हैं तो हम अपना घर तो साफ कर देते हैं परंतु उसी कचरे को हम घर के बाहर फेंक देते हैं। हमें ऐसा नहीं करना चाहिए। अपने घर के साथ–साथ घर के बाहर अपने इलाकों की स्वच्छता का ध्यान रखना हमारा परम कर्तव्य है। अक्सर हम देखते हैं कि लोग सड़क के कोने में यहां–वहां कचरा फेंक देते हैं या पड़ा रहता है।

सवाल यह है कि साफ कौन करे? लेकिन उसी सड़क के दोनों ओर छोटी–बड़ी दुकानें होती हैं, इसलिए जिनकी दुकान है वे अपनी दुकान के बाहर एक बड़ा सा कूड़ादान रखें जो देखने में भी अच्छा हो और हमारा पर्यावरण भी स्वच्छ रहे। जिस दुकान को बनाने में हम अपना इतना रुपया खर्च करते हैं तो क्या उससे बाहर सफाई के लिए हमें थोड़ा सा पैसा खर्च नहीं करना चाहिए?

सरकार द्वारा सरकारी कर्मचारी रखे गये हैं जो रोज प्रातःकाल रास्तों की सफाई करते हैं तो उन्हें बोलकर हम अपनी दुकानों के बाहर की गंदगी को साफ करवा सकते हैं। ऐसा करके हम कुछ हद तक सड़क साफ रख सकते हैं। जब भी आप यात्रा करते हैं तो बस, ट्रेन में हमेशा स्वच्छता का ध्यान रखें।

देश में स्वच्छता का निर्माण करने के लिए हमें सबसे पहले देश के हर एक नागरिक में जागरूकता की भावनाओं को उत्पन्न करना होगा। दोस्तों, अगर मैं स्वच्छता के प्रति अपनी इच्छाओं को व्यक्त करूं तो हमें सबसे पहले एक कमेटी का गठन करना चाहिए अपने इलाकों में जिसमें यह निर्णय होना चाहिए कि हम अपने आसपास के पर्यावरण को स्वच्छ कैसे रखें? जैसा कि कहा भी गया है कि बूंद–बूंद से सागर बनता है, ठीक उसी प्रकार अगर हम अपने–अपने इलाकों की स्वच्छता पर ध्यान देंगे तो एक–एक इलाके को मिलाकर देश के 50 प्रतिशत भाग की स्वच्छता सम्भव हो सकती है।

कमेटी में इस बात पर चर्चा होनी चाहिए कि देश की बहुत सी सोसाइटी या इलाके ऐसे हैं जहां लोग स्वच्छता पर बिल्कुल भी ध्यान नहीं देते हैं। आसपास, इधर–उधर कहीं भी व्यर्थ पदार्थ फेंक नालों में जमा हो जाता है और बरसात के समय नालों में जल जमकर हमारे पर्यावरण को हानि पहुंचाता है तथा तरह–तरह की बीमारियों को जन्म देता है।

इसलिए हर एक सोसाइटी में यह नियम लागू किया जाए कि जितना भी कूड़ा–कचरा हो उसे एक जगह इक्ट्ठा करके उसका पुनर्चक्रण कर उसे खाद के रूप में प्रयोग करे जिससे हमारा देश भी कम प्रदूषित हो और भूमि की उर्वरा शक्ति भी बढ़े।

आज का युग विज्ञान का युग है। जहां बड़ी–बड़ी मशीनों का प्रयोग हो रहा है, वहीं दूसरी तरफ हमारे पर्यावरण को काफी अस्वच्छता और प्रदूषण जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। लोग अपने हित के लिए पर्यावरण को नुकसान पहुंचा रहे हैं। यह नहीं होना चाहिए।

मैं एक छात्रा हूं और एक छात्रा होने के कारण मेरे मन में यह दृढ़ इच्छा है कि हर स्कूल और कॉलेज में भी देश को स्वच्छ बनाने कि चर्चा की जानी चाहिए। सिर्फ चर्चा ही नहीं बल्कि अपने स्कूल, कॉलेजों में भी स्वच्छता पर ध्यान देना चाहिए। इस योजना में शिक्षक तथा शिक्षिका को भी हमारा साथ देना चाहिए। अपने आसपास के इलाकों को साफ बनाना और लोगों में इसके प्रति जागरूकता उत्पन्न करनी चाहिए। इस कार्य को कार्ययोजना के अनुसार करना चाहिए।

'स्वच्छता भक्ति से भी बढ़कर है' कहावत का अर्थ है कि स्वच्छता भक्ति या देवत्व के मार्ग की ओर ले जाती है। और ऐसा कहा भी गया है कि 'जहां स्वच्छता होती है वहां ईश्वर का निवास होता है।' तो दोस्तों, इस तरह छोटी–छोटी बातों का ध्यान रखकर हम अपने देश के लिए कुछ कर सकते हैं। एक दिन हमारा भारत भी दूसरे देशों की तरह स्वच्छ होगा। घर से बाहर निकलने में हमें भी खुशी का अनुभव होगा। स्वच्छ भारत से ही एक सुखी भारत की स्थापना हो सकती है। ❑

साफ–सफाई को लेकर आशान्वित

◈ l:ty ikVhnkj ग्यारहवीं
किशनलाल गर्ग उच्च माध्य. विद्यालय
डूंगरपुर, राजस्थान

अनेक विद्यालयों में बच्चों ने अपनी-अपनी महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभाईं तथा बच्चे कचरे को कचरा पात्र में डालते हैं लेकिन कई लोग ऐसे होते हैं जो कचरा बाहर डाल देते हैं। तब बच्चों को गुस्सा आता है पर वह गुस्सा न दिखाकर कचरा उठाकर कचरा पात्र में डालते हैं। कई विद्यालय ऐसे हैं जो गांवों में स्थित हैं और वहां पर शौचालय होते हुए भी वे शौचालय कहने के लिए लायक नहीं हैं।

jाष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने स्वतंत्रता आंदोलन चलाकर देश को गुलामी से मुक्त कराया परंतु 'क्लीन इण्डिया' का उनका सपना पूरा नहीं हुआ। विश्व स्वास्थ्य संगठन की दृष्टि में भी भारत में स्वच्छता की कमी है। इन्हीं बातों का चिंतन कर और देश की यथार्थ स्थिति देखकर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने राष्ट्रीय स्वच्छता अभियान का औपचारिक शुभारंभ 2 अक्टूबर, 2017 को गांधी जयंती के अवसर पर किया। इस अभियान से सारे देश में सफाई एवं स्वच्छता के प्रति जागरूकता लाने, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों को गंदगी से मुक्त करने का संदेश दिया गया।

हमारे देश में नगरों के आसपास की कच्छी बस्तियों में, गांवों एवं ढाणियों में शौचालय नहीं हैं। विद्यालयों में भी पेयजल एवं शौचालयों का अभाव है। इससे खुले में शौच करने से गंदगी बढ़ती है तथा पेयजल के साथ ही वातावरण भी दूषित होता है। गंदगी के कारण स्वास्थ्य खराब रहता है और अनेक बीमारियां फैलती रहती हैं। वर्तमान में देश में लगभग सवा ग्यारह करोड़ शौचालयों की जरूरत है।

एक सर्वेक्षण के अनुसार 1.56 लाख विद्यालयों में शौचालय नहीं हैं। अतः स्वच्छता अभियान का पहला उद्देश्य शौचालयों का निर्माण करना तथा स्वच्छ पेयजल की व्यवस्था करना है। इस तरह देश को गंदगी से मुक्त कराना इस अभियान का मुख्य लक्ष्य है।

भारत सरकार ने इस अभियान को आर्थिक स्थिति में जोड़ा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट के अनुसार भारत में गंदगी के कारण प्रत्येक नागरिक को बीमारियों पर औसतन सालाना बारह–तेरह हजार रुपये खर्च करना पड़ता है। यह आंकड़ा गरीब परिवारों का बताया गया है। यदि स्वच्छता रहेगी तो बीमारियों के कारण अनावश्यक आर्थिक बोझ भी नहीं बढ़ेगा।

इस दृष्टि से सरकार ने बी.पी.एल. एवं लक्षित, लघुसीमान्त किसान, भूमिहीन श्रमिक एवं विकलांग परिवारों को शौचालय निर्माण के लिए प्रोत्साहन राशि के रूप में बारह हजार रुपये 'स्वच्छ ग्रामीण मिशन' हेतु देने का निर्णय लिया है। इसके साथ ही स्वच्छ पेयजल, शिशु–मल निस्तारण, कूड़ा–कचरा एवं गंदा जल निवारण तथा विद्यालयों में शौचालयों के साथ ही साबुन के प्रयोग पर जोर दिया गया है।

स्वच्छता अभियान प्रारंभ होने के बाद इस व्यय–वर्ष में लगभग चार सौ साठ करोड़ रुपये इस कार्य पर खर्च किये गये हैं। अभी तक विद्यालयों में साठ हजार शौचालय बन गये हैं। ग्रामीण एवं पिछड़े क्षेत्रों में स्वच्छ पेयजल की व्यवस्था पर जोर दिया जा रहा है। इस कार्य में सभी प्रदेशों की सरकारें, बड़े कॉर्पोरेट सैक्टर और समाज के प्रतिष्ठित लोग सक्रिय सहयोग कर रहे हैं। प्रधानमंत्री जी के आमंत्रण पर स्वच्छता के लिए प्रतिबद्ध लोगों में काफी उत्साह दिखाई दे रहा है तथा कई लोग स्वच्छता में सहयोग देकर अपनी भूमिका निभा रहे हैं।

अनेक विद्यालयों में बच्चों ने अपनी–अपनी महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभाईं तथा बच्चें कचरे को कचरा पात्र में डालते हैं लेकिन कई लोग ऐसे होते हैं जो कचरा बाहर डाल देते हैं। तब बच्चों को गुस्सा आता है पर वह गुस्सा न दिखाकर कचरा उठाकर कचरा पात्र में डालते हैं। कई विद्यालय

ऐसे हैं जो गांवों में स्थित हैं और वहां पर शौचालय होते हुए भी वे शौचालय कहने के लिए लायक नहीं हैं। क्योंकि वे शौचालय इतनी गंदगी से भरे हुए हैं जहां अगर बच्चे जाते हैं तो बीमारी में पीड़ित होते हैं। जब से स्वच्छता शब्द का उपयोग हुआ है तब से बच्चों के अंदर इतना जोश भर गया है कि वे अपना घर एवं अपना विद्यालय स्वयं सुरक्षित करेंगे तथा सब आसपास के लोगों को तथा अध्यापकों को दिखा देंगे कि वे कम नहीं हैं।

राष्ट्रीय स्वच्छता अभियान से सबसे बड़ा लाभ स्वास्थ्य के क्षेत्र में रहेगा। आमजनों को बीमारियों से मुक्ति मिलेगी, दवाओं पर व्यर्थ व्यय नहीं करना पड़ेगा। सारा भारत स्वच्छ हो जायेगा तो विदेशों में स्वच्छ भारत की छवि उभरेगी। प्रदूषण का स्तर एकदम घट जायेगा। विदेशों में स्वच्छ निर्माण में एक रूपरेखा उभरेगी और जल–मल के उचित निस्तारण से पेयजल भी शुद्ध बना रहेगा।

गंगा–यमुना का जल अमृत जैसा पवित्र बन जायेगा और सिंचित कृषि उपजों में भी स्वच्छता बनी रहेगी। स्वच्छता अभियान से देश का पर्यावरण हर दिशा में स्वच्छ एवं प्रदूषण मुक्त हो जायेगा। स्वच्छता अभियान में सूखा कचरा भी डालें तथा गीला कचरा भी नीले डब्बे में डालें। स्वच्छता में जितना साफ–सफाई में हाथ बढ़ायेंगे उतना सफलता का परिणाम मिलेगा।

अतः राष्ट्रीय स्वच्छता अभियान अभी प्रारंभिक चरण में है। इसे गांधीजी की 150वीं जयंती तक चलाकर देश को स्वच्छ रूप में प्रस्तुत करना है। सरकार के इस अभियान में जनता का सक्रिय सहयोग नितांत अपेक्षित है। अभी तक इसके प्रारंभिक परिणाम अच्छे दिखाई दे रहे हैं, आगे भी सफलता प्राप्ति को लेकर सभी आशान्वित हैं। इसी प्रकार स्वच्छ भारत के निर्माण में अणुव्रत की भूमिका रही है। ❑

साफ–सफाई वाला व्यक्ति रहता है खुश

भारत के लोगों के लिए यह बहुत ही आवश्यक है कि वह भावनात्मक, शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और बौद्धिक रूप से अच्छा महसूस करें। वास्तविक मायने में भारत में रहन-सहन की स्थिति अग्रिम बनाना जरूरी है, जो कि स्वच्छता लाकर शुरू की जा सकती है।

◈ vkÑfr ekFkj नौवीं
महावीर सीनियर मॉडल स्कूल
संगम पार्क एक्स.
जी.टी. करनाल रोड, दिल्ली

'Lवच्छता भक्ति से भी बढ़कर है', अर्थात् स्वच्छता भक्ति या देवत्व के मार्ग की ओर ले जाती है। स्वच्छता शारीरिक, मानसिक और सामाजिक भलाई की भावना लाती है और अच्छे व्यक्तित्व का निर्माण करने में मदद करती है। स्वच्छता शरीर, मस्तिष्क और आत्मा को साफ रखने के द्वारा अच्छे चरित्र को उदित करती है। स्वच्छता की आदम हमारी परंपरा और संस्कृति है।

भारत में बहुत से महान लोग और समाज सुधारकों, महात्मा गांधी आदि ने शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक रूप से स्वच्छ रहने के लिए वैयक्तिक और आसपास की स्वच्छता को बनाए रखने के लिए कठिन परिश्रम किया था। उन्होंने कहा था – 'मैंने अंग्रेजों को बाहर फेंका था, तुम कूड़ा तो फेंक कर दिखलाओ। हमने स्वतंत्र भारत दिया था, तुम स्वच्छ भारत तो दे जाओ।'

भारत के लोगों के लिए यह बहुत ही आवश्यक है कि वह भावनात्मक, शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और बौद्धिक रूप से अच्छा महसूस करें।

वास्तविक मायने में भारत में रहन–सहन की स्थिति अग्रिम बनाना जरूरी है, जो कि स्वच्छता लाकर शुरू की जा सकती है।

आजकल 'स्वच्छ भारत अभियान' भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के द्वारा भारत में आसपास के वातावरण को स्वच्छ बनाने के लिए चलाया जा रहा है। जिन महात्मा गांधी के जन्मदिवस पर स्वच्छ भारत अभियान शुरू किया गया वही महात्मा गांधी स्वास्थ्य का नियम बताते हुए कहते हैं, ''मनुष्य जाति के लिए साधारणतः स्वास्थ्य का पहला नियम यह है कि मन चंगा तो शरीर भी चंगा। निरोग शरीर में निर्विकार मन का वास होता है, यह एक स्वयं सिद्ध सत्य है। मन और शरीर के बीच अटूट संबंध है।'' वे लोग जो व्यक्तिगत साफ–सफाई से रहते हैं वे हमेशा खुश रहते हैं, क्योंकि वे सकारात्मक सोच को विकसित करते हैं जो शरीर, मन और आत्मा को संतुलित करने में मदद करती है।

निश्चित रूप से हमें अपने शरीर, घर, मौहल्ले, गांव और शहर को स्वच्छता में नियमित रूप से योगदान देना है और एक स्वच्छ और स्वस्थ समाज और देश के निर्माण में भागीदार बनना है। लेकिन क्या मात्र इन्हीं प्रयासों से हम अपने सपनों के भारत का निर्माण कर पाएंगे? क्योंकि समस्याओं की जड़ तो हमारे मन–बुद्धि–संस्कारों में है और हमें अपने मन के कचरे और मैल को भी साफ करना होगा, धोना होगा।

काम विकार, अहंकार, क्रोध विकार, लोभ विकार, ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, हिंसा, आलस्य, अकर्मण्यता, व्यर्थ चिंतन, तनाव सहित कई अन्य प्रकार के विकार का कचरा और धूल मन, बुद्धि और संस्कार पर चढ़ी है। इन सभी मनोविकारों के कारण मनुष्य का जीवन तमाम भौतिक सुख–सुविधाओं के होने के बावजूद नर्क बना हुआ है। आज, यदि हम अपने देश को संपूर्ण पवित्र बनाना चाहते हैं तो हमें सबसे पहले अपने मन, बुद्धि और संस्कारों को इन सभी विकारों से मुक्त करना होगा और मन को सच्ची शांति, प्रेम और पवित्रता से भरपूर करना होगा।

आचार्य महाप्रज्ञ कहते हैं–''नैतिकता की उपेक्षा कर जो भौतिक विकास की कल्पना की जा रही है, वह समस्या को सुलझा नहीं सकती। भौतिक

धारा के साथ आध्यात्मिक और नैतिक मूल्यों का समन्वय जरूरी है। तकनीकी विकास, उद्योग–धंधे, कारखानों से विकसित राष्ट्र नहीं हो सकता। विकास के साथ साधन–शुद्धि का अभियान जरूरी है।''

मनुष्य सामाजिक प्राणी है। समाज में ही उसका अस्तित्व निर्माण होता है। जिस साफ–सुधरा, चरित्रवान समाज व देश की कल्पना हम करते हैं, जिसकी इच्छा हमारे मन में है और हम जो कुछ हटकर अलग सा करना चाहते हैं, उसकी शुरूआत स्वयं से ही होगी। स्व परिवर्तन से ही जग परिवर्तन संभव है। आइए ! मानव संरचना के सूत्र इन जीवन मूल्यों की भूमिका को समझें, उनको अपने आरचण में उतारकर एक सुढृढ़, सभ्य और स्वस्थ समाज की रचना का अंग बनें।

आज सदाचरण, सत्य, अहिंसा, प्रेम, शान्ति जैसे शाश्वत परम्परागत मूल्यों की पुनः प्रतिष्ठा की आवश्यकता है। ये मूल्य न केवल व्यक्तिगत उत्थान के लिए अपितु सामाजिक एवं राष्ट्रीय प्रगति एवं शांति के लिए परम आवश्यक हैं। स्वच्छ व स्वस्थ भारत के लिए स्वस्थ समाज का होना अनिवार्य है और स्वस्थ समाज की संरचना में नैतिक मूल्यों की भूमिका असंदिग्ध है।

अणुव्रत एक ऐसा आंदोलन है जो सामाजिक स्वास्थ्य देने वाला है। आज बहुत सारे लोग अनुभव कर रहे हैं कि समाज रुग्ण हो गया है। आज समाज में बुराई रूपी रोग बहुत बढ़ रहा है। इस रोग की चिकित्सा संभव है अणुव्रत के माध्यम से। ऐसा कहा जा सकता है कि अणुव्रत सामाजिक स्वास्थ्य देने वाला एक प्रकल्प है। ऐसा प्रकल्प जिसे स्वीकार करने वाला स्वयं स्वस्थ होगा और स्वस्थता की बहार अपने चारों ओर बहाने में सक्षम होगा।

अणुव्रत जन को जन से जोड़ने वाला है, हर व्यक्ति को अपने भीतर देखने की प्रेरणा देने वाला है और जीवन की दिशा बदले वाला है। आज संसार समस्याओं से घिरा हुआ है। समस्याओं के उस समुद्र में अणुव्रत एक ऐसा द्वीप है जो मनुष्य को त्राण दे सकता है।

मेरी मान्यता है कि देश और विदेश में मानवीय मूल्यों का प्रतिष्ठापन अत्याधिक अपेक्षित है। अगर आज देश प्रत्येक नागरिक अणुव्रत की आचार संहिता को अपने जीवन में समाहित करे, उसको अपने जीवन के व्यवहार एवं आचारण में लाए, दूसरों को भी इसी आदर्श श्रृंखला में जोड़ने का प्रयास करें तथा अणुव्रत की आचार संहिता को अपने जीवन का मूलमंत्र स्वीकार कर ले तो वह दिन दूर नहीं कि जब संपूर्ण भारतवर्ष के नागरिकों में मानवीय मूल्यों की झलक प्रदर्शित होगी और सारे देश का कायापलट हो जाएगा।

संवेदना, भाईचारा, स्नेह, सम्मान, प्यार, दुलार, स्वच्छता जैसी विशेषताओं को आत्मसात करते हुए नव–निर्माण की यात्रा में अपनी सहभागिता प्रस्तुत करते हुए जीवन मूल्यों की पुनर्प्रतिष्ठा में अपना योगदान प्रदान करेंगे। ❑

पहले खुद को स्वच्छ बनाएं

अगर हमें अपने भारत को स्वच्छ करना है तो हमें समझना चाहिए कि अगर हम अपने भारत को स्वच्छ करेंगे तो हमारा भारत स्वच्छ और सुंदर दिखेगा। अगर हमें भारत को स्वच्छ करना है तो पहले हम खुद अपने आप को स्वच्छ करें। जो लोग गुटका और अन्य चीजें खाते हैं और जगह-जगह पर थूक देते हैं, इससे दीवारें गंदी और खराब दिखती हैं।

◈ T;kfr dekjh xkrk दसवीं
स्वामी विवेकानंद पब्लिक स्कूल
भवानीपटना, उड़ीसा

gमारे राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का सपना था कि वह अपने भारत को स्वच्छ और सुंदर कर सके पर वह नहीं कर पाए। वह भारत को साफ कर रहे थे पर दुनिया वाले नहीं कर पाते थे। उनके पश्चात् मोदी जी जब प्रधानमंत्री बने तब उन्होंने एक अभियान निकाला उसका नाम है 'स्वच्छ भारत अभियान।'

उन्होंने भारत को स्वच्छ बनाने के लिए झाड़ू हाथ में उठाई, खुद साफ किया। मोदी जी को देखकर सब लोग भारत को स्वच्छ करने लगे और भारत को अच्छे तरीके से सजाया पर कुछ समय बाद लोगों ने भारत को स्वच्छ करना छोड़ दिया। इस पर मोदी जी से ज्यादा ध्यान नहीं दिया।

हमारे स्कूल में अभी भी स्वच्छ भारत का अभियान चलता है। एक बार हमारे स्कूल के हेड मास्टर ने भारत को स्वच्छ करने के लिए तो की हम सब ने स्कूल से कॉलेज तक साफ–सफाई की। हमें देखकर कॉलेज के छात्र भी रास्ते को साफ करने लगे। हमारे स्कूल में कूड़ा डालने के लिए कूड़ेदान लाए गए।

अगर हमें अपने भारत को स्वच्छ करना है तो हमें समझना चाहिए कि अगर हम अपने भारत को स्वच्छ करेंगे तो हमारा भारत स्वच्छ और सुंदर दिखेगा। अगर हमें भारत को स्वच्छ करना है तो पहले हम खुद अपने आप को स्वच्छ करें। जो लोग गुटका और अन्य चीजें खाते हैं और जगह–जगह पर थूक देते हैं, इससे दीवारें गंदी और खराब दिखती हैं।

जैसे कि सभी स्कूल कॉलेजों में कूड़ादान हैं और स्कूलों में सिखाया जा रहा है कि अगर हमें भारत को स्वच्छ करना है तो पहले हम खुद अपने मन को स्वच्छ करना पड़ेगा। अगर हम खुद अपने मन को स्वच्छ नहीं करेंगे तो हम अपने भारत को स्वच्छ नहीं कर पाएंगे। हमें गंदी चीजें नहीं खानी चाहिए, इससे हम बीमार होंगे और हमारा भारत भी गंदा दिखेगा।

अगर हमें भारत को स्वच्छ करना है तो महात्मा गांधी की तरह बनना होगा। उसके लिए हमें हिंसा का रास्ता छोड़ना पड़ेगा और हमें कचरा इधर–उधर नहीं फेंकना है। पहले हमें अपने मन से गंदगी वाली चीजें उखाड़ कर फेंक देनी चाहिऐ तभी हम अपने भारत को स्वच्छ कर सकते हैं। हमें बापू के सपने को सच करने के लिए स्कूलों को स्वच्छ बनाना होगा। इससे स्कूल और हमारा भारत स्वच्छ होगा और इस से बापू और मोदी जी के सपने सच होंगे।

दो और तीन लोग अगर भारत को स्वच्छ करेंगे तो हमारा भारत स्वच्छ नहीं हो पाएगा। उसके लिए हमें अपने बीच में एकता बनानी होगी, तभी हम अपने भारत को स्वच्छ कर पाएंगे। अपने भारत को स्वच्छ करने से पहले हमें अपने घर, स्कूल और कॉलेजों को साफ करना पड़ेगा। हम सब चीजें स्कूल से सीखते हैं और स्कूल के बारे में तो पहले नहीं पता होता। घर, हमारे स्कूल सभी कुछ होता है। हम दिवस मनाते हैं और कहीं ना कहीं जगह साफ करते हैं। कुछ जगह साफ करते हैं इससे सब लोग जागरूक हो जाते हैं।

इस बार भी हमारे स्कूल ने सोचा है कि हम अपने स्कूल और कई जगहों को साफ करेंगे। एक तो हमारा स्कूल साफ हो जाएगा और

भारत भी सुंदर और साफ दिखेगा। इससे बहुत सारे लोगों ने ध्यान दिया है कि हम अपना घर और हमारी गली को साफ करें।

भारत ही हमारा घर है। अगर हम अपने आप को स्वच्छ नहीं कर पाए तो हम अपने भारत को स्वच्छ नहीं कर पाएंगे। इससे हमें यह ज्ञान प्राप्त होता है कि पहले हमें अपने आप को स्वच्छ करना होगा तभी हम अपने भारत को स्वच्छ कर सकते हैं। ❑

पक्के इरादों से स्वच्छ होगा भारत

◈ [k'kh दसवीं
लालाजी मेमोरियल ओमेगा
इंटरनेशनल स्कूल
कोलापक्कम, चेन्नई, तमिलनाडु

अगर हम सब मिलकर यह ठान लें कि हमें भारत को स्वच्छ करना है तो हमें दुनिया की कोई भी ताकत नहीं रोक सकती। अगर हम सब सबसे पहले अपनी गली से भी शुरू करें तो बहुत असर पड़ेगा, जैसे गली में जो भी कूड़ा हो वह एक जगह ही फेंका जाए एवं उसके लिए भी एक डिब्बा रखा जाए जिससे सब उसमें कूड़ा-कचरा फेंक सकें तो उससे बहुत परेशानियां दूर हो जाएंगी।

M|नो गौर से भारतवासी, आजादी मिली है अच्छी खासी। लाभ हो इस आजादी का जब, स्वच्छ और साफ बने भारत तब।'' अर्थात् स्वच्छ भारत का मतलब यही नहीं है कि हमें बस अपना घर साफ रखना है परंतु अपनी जन्म या मातृभूमि का भी खयाल रखना होगा। अगर अपने घर को साफ करके मातृभूमि को गंदा करेंगे तो वह स्वच्छ भारत नहीं। स्वच्छ भारत का अर्थ है कि हर एक गली, मौहल्ला, हर कोने में सफाई होनी चाहिए।

हमारे प्रधानमंत्री जी, जिन्होंने स्वच्छ भारत को अच्छे पद पर बढ़ावा दिया है और नागरिकों को उत्साहित किया है जिससे वह इसमें योगदान दें और वादा करें कि ''मैं भारत देश का/की जिम्मेदार नागरिक होने के नाते, शपथ लेता/लेती हूं, कि सार्वजनिक स्थानों पर कचरा नहीं फेंकूगा/फेंकूंगी, उसे निर्धारित स्थानों पर ही डालूंगा/डालूंगी जिससे मेरा शहर साफ हो, इसमें हम सब का हाथ हो''। हमें कभी हार नहीं माननी है, परिश्रम करते रहना है, जब तक हमें अपनी मंजिल प्राप्त नहीं

होती। अर्थात् जब तक पूरी मातृभूमि साफ व स्वच्छ न हो। हम सब का एक ही नारा, साफ सुथरा हो देश हमारा''।

अगर हम अपने हृदय में कुछ ठान लें तो किसी की क्या मजाल की वह हमें रोक दे, बस एक आत्मविश्वास और हिम्मत और उसके साथ साहस और परिश्रम की जरूरत है जो हमारे हृदय में उत्पन्न होनी चाहिए। क्योंकि जब हम कुछ मिलकर करते हैं तो उसका जो अहसास होता है, वह हर किसी को नहीं मिलता और उससे जो खुशी मिलती है, उसका तो जवाब ही नहीं! इसलिए हम सब मिलकर तय और दृढ़ निश्चय करते हैं कि–

''स्वच्छता का दीप जलाएंगे,
चारों ओर उजियाला फैलाएंगे।''

जहां हिम्मत समाप्त होती है वहीं से हार की शुरुआत होती है। आप धीरज मत खोइए, अपना कदम फिर उठाइए। अर्थात् अगर आज आपने हार मान ली तो आप कभी अपनी जिंदगी में किसी चीज से जीत नहीं पाएंगे। आज अगर आपने परिश्रम करना नहीं छोड़ा तो आपको जीतने से कोई रोक नहीं सकता।

जब एक चींटी पेड़ पर चढ़ती है, वह गिर जाती है, वह फिर चढ़ती है, फिर गिर जाती है, इसका मतलब यह नहीं है कि वह पेड़ पर चढ़ना छोड़ देती है नहीं, वह परिश्रम करती रहती है चाहे उसे दिन–रात एक क्यों न करने पड़ जाएं पर वह हार कभी नहीं मानती। इसी प्रकार हमें भी कभी हार नहीं माननी, परिश्रम करते रहना है जब तक कि मंजिल न हासिल हो। *''हम सबने यह ठाना है, भारत को स्वच्छ बनाना है।''*

अगर हम सब मिलकर यह ठान लें कि हमें भारत को स्वच्छ करना है तो हमें दुनिया की कोई भी ताकत नहीं रोक सकती। अगर हम सब सबसे पहले अपनी गली से भी शुरू करें तो बहुत असर पड़ेगा, जैसे गली में जो भी कूड़ा हो वह एक जगह की फेंका जाए एवं उसके लिए भी एक डिब्बा रखा जाए जिससे सब उसमें कूड़ा–कचरा फेंक सकें तो उससे बहुत सी परेशानियां दूर हो जाएंगी।

हमें कभी भी कूड़े को जलाना नहीं चाहिए, इससे बहुत प्रदूषण होता है। इससे बेहतर है कि इसे मिट्टी में दबा दिया जाए। एक दिन में अगर हम चौबीस घंटे में से एक घंटा भी इस काम को देंगे तो हमारे देश में बहुत परिवर्तन आ सकते हैं। हमें स्वार्थी न होकर थोड़ा अपने देश के बारे में भी सोचना चाहिए, थोड़ा समय इसके लिए भी कुर्बान कर देना चाहिए।

'स्वच्छ भारत का जन अभियान, जाग रहा है हिन्दुस्तान', गली–मौहल्ला और मकान, जन–जन तक पहुंचे यह पैगाम'। हमें अपने देश के लिए हर वह चीज़ करनी है जो हम अपने स्वास्थ्य के लिए करते हैं हमें एक स्वच्छ भारत, स्वस्थ भारत, सशक्त भारत और समर्थ भारत बनाना है। ❑

'स्वच्छ भारत अभियान' में समुदाय की हिस्सेदारी, जागरूकता और मजबूत राजनीतिक इच्छा-शक्ति की आवश्यकता है। जब तक जनसमुदाय इस अभियान में शामिल नहीं होगा तब तक केवल शौचालयों के निर्माण से इसका सही उपयोग नहीं होगा।

स्वच्छता के प्रति जागरूकता जरूरी

◈ vk;'k feJk आठवीं
लिटिल फेयरी पब्लिक स्कूल
हडसन लेन, दिल्ली

स्वच्छ भारत अभियान भारत सरकार द्वारा आरंभ किया गया राष्ट्रीय उच्च स्तर का अभियान है जिसका उद्देश्य गलियों, सड़कों तथा अधो संरचना को साफ–सुथरा करना है। हमारे माननीय प्रधानमंत्री ने 2 अक्टूबर, 2014 को इस अभियान का मंगलगणेश किया था। हमारे देश के राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने अपने आसपास के लोगों को स्वच्छता बनाए रखने संबंधी शिक्षा प्रदान कर राष्ट्र को एक उत्कृष्ट संदेश दिया था। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी का सपना है कि वर्ष 2019 तक हमारा भारत स्वच्छ और साफ हो।

देश में स्वच्छता की आवश्यकता है। सरकार ने जो अभियान चलाया है वह सार्वजनिक हित में है। इसके अंतर्गत नदियों में कचरा न बहाया जाये। शौचालय बनवाने और नदियों की स्वच्छता के लिए केंद्रीय शासन ने काफी बड़ी राशि आवंटित कर रखी है।

आज भारत में लोगों को घरों में शौचालय बनवाने के लिए प्रेरित करने की आवश्यकता है। इस अभियान के अंतर्गत पिछले एक साल में

90 लाख शौचालयों का निर्माण करवाया जा चुका है। पूरे देश में अब कचरा निस्तारण का कार्य चल रहा है।

इस अभियान की शुरुआत के दिन प्रधानमंत्री ने कला, खेल और साहित्य से जुड़ी 9 हस्तियों को नामित किया है जो अपने–अपने क्षेत्रों में इस मिशन को आगे बढ़ाने के लिये काम करेंगी। स्कूल, कॉलेजों द्वारा भी अपने तरीके से कई सारे कार्यक्रम आयोजित कर इसमें भाग लिया जाएगा। प्रधानमंत्री ने उन नौ नामित लोगों से आग्रह किया कि वे अपनी तरफ से नौ व्यक्ति चुनें जो भारत स्वच्छता अभियान में पूरी इच्छाशक्ति से मानव–श्रृंखला का निर्माण करे जिसमें देश के हर कोने से हर भारतीय शामिल हो और इसे राष्ट्रीय मिशन के रूप में आगे बढ़ाया जाए।

भारत में खुले में शौच करने के प्रति लोग अपने–अपने तर्क प्रस्तुत करते हैं। घर में शौचालय बना होने के बाद भी लोग खुले में शौच करने को सही बताते हैं। उनका कहना है कि सुबह जल्दी उठकर दूर खेत या किसी मैदान में शौच के लिए जाने से सुबह का घूमना भी हो जाता है और कुछ दिनों में वह मल खाद बन जाता है जो कि प्राकृतिक खाद माना जाता है। युनीसेफ के अनुसार भारत में अब भी ग्रामीण और अर्द्ध ग्रामीण क्षेत्रों में शौचालय निर्माण के प्रति सोच का अभाव है। लोग सोचते हैं कि शौचालय बनवाना सरकार का कार्य है, आम जनता का नहीं।

ग्रामीण क्षेत्रों में शौचालय निर्माण में सबसे बड़ी समस्या सीवरेज सिस्टम का ध्यान रखना है। गांवों में शौचालयों के दूषित पानी के जमाव तथा पास के जल स्त्रोतों में इसके रिसाव के कारण गंभीर बीमारियों का डर बना रहता है। इसलिए शौचालय बनवाने के साथ ही सीवरेज का प्रबंध करना भी अत्यावश्यक है।

किसी पेड़ की शाखाओं की तरह ही इस मिशन का भी मकसद भारत के हर एक व्यक्ति को जोड़ना है, चाहे वो किसी व्यवसाय से हो। स्वच्छ भारत मिशन का लक्ष्य है गरीबी रेखा से नीचे जीवन–यापन कर रहे सभी परिवारों को स्वास्थ्यप्रद शौचालयों में बदलना, हैण्ड पंप उपलब्ध कराना, सुरक्षित नहाना, स्वच्छता संबंधी बाजार हो, निकास नली, ठोस

और द्रव्य कचरे की उचित व्यवस्था हो, शिक्षा और स्वच्छता के प्रति जागरूकता हो, घरेलू और पर्यावरण संबंधी सफाई व्यवस्था हो आदि।

'स्वच्छ भारत अभियान' में समुदाय की हिस्सेदारी, जागरूकता और मजबूत राजनीतिक इच्छा–शक्ति की आवश्यकता है। जब तक जनसमुदाय इस अभियान में शामिल नहीं होगा तब तक केवल शौचालयों के निर्माण से इसका सही उपयोग नहीं होगा।

भारत सरकार द्वारा व्यक्तिगत स्वच्छता और पर्यावरणीय स्वच्छता को लेकर इसके पहले कई सारे जागरूकता कार्यक्रम (जैसे पूर्ण स्वच्छता अभियान, निर्मल भारत अभियान आदि) आरंभ किये गए थे लेकिन इस तरह के अभियान ज्यादा प्रभावी साबित हुए ही नहीं।

इस अभियान का मुख्य लक्ष्य खुले में शौच की प्रवृत्ति को खत्म करना, अस्वास्थयकर शौचालयों को बहाने वाले शौचालयों में तब्दील करना, हाथ से शौच की सफाई न करना, हाथों से ठोस और द्रव्य कचरे का अच्छी तरह से निपटान कर देना, साफ–सफाई को लेकर लोगों को जागरूक करना, लोगों की सोच में बदलाव लाना, साफ–सफाई की सुविधाओं के प्रति प्राईवेट क्षेत्रों की भागीदारी को सुगम बनाना आदि है।

अब तो उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री ने उत्तरप्रदेश के सरकारी भवनों में सफाई सुनिश्चित करने के लिए उत्तरप्रदेश में गुटका और तम्बाकू जैसे उत्पादों पर प्रतिबंध लगा दिया है।

अगले वित्तीय वर्ष में लगभग 2 लाख करोड़ रुपये इस अभियान पर खर्च का अनुमान है। सिक्किम खुले में शौच मुक्त भारत का पहला राज्य बन गया है। स्वच्छता अभियान को सफल बनाने के लिए सही डिजाइन के शौचालयों का निर्माण, पूरे पैसों का सही उपयोग, सामुदायिक भागीदारी, जागरूकता अभियान को स्वास्थ्य से जोड़ना, मल के निस्तारण की सही व्यवस्था आदि से ही हम देश को सन् 2019 तक स्वच्छ भारत का रूप दे सकेंगे। इसलिए ज्यादा नहीं, एक छोटा–सा कदम देश को स्वच्छ बनाने में लाभदायक हो सकता है। ❑

न गंदगी करेंगे, न ही करने देंगे

◈ 'kÒkxh vxoky दसवीं
महाराजा अग्रसेन मॉडल स्कूल
सी.डी. ब्लॉक, पीतमपुरा, दिल्ली

इस बढ़ती गंदगी ने न जाने कौन-कौन सी विकट बीमारियों को दावत दे डाली है। आज हर व्यक्ति के अंदर डेंगू, चिकनगुनिया, मलेरिया, स्वाईन फ्लू न जाने किन-किन बीमारियों की दहशत फैली हुई है। महानगरों में इन बीमारियों का बढ़ना बढ़ते प्रदूषण और गंदगी की ही देन है।

Lवच्छ भारत अभियान सरकार द्वारा देश की स्वच्छता को एक अनोखा रूप देने का प्रयास है। स्वच्छ भारत का सपना महात्मा गांधी ने देखा था। उनका कहना था कि 'स्वच्छता स्वतंत्रता से ज्यादा जरूरी है।' वे अपने समय में देश की गरीबी और गंदगी से अच्छे से अवगत थे। इसी कारण उन्होंने अपने सपनों को पाने के लिए कई प्रयास किए लेकिन वह सफल नहीं हो पाए। आज आजादी के 69 वर्षों के बाद भी हम इस लक्ष्य से काफी दूर हैं। इसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए यह अभियान 2 अक्टूबर, 2014 में आरंभ किया गया और इसका लक्ष्य 2019 तक पूरा होना है जब पूरा देश बापू जी की 150वीं जयंती मनाएगा।

स्वस्थ तन में ही स्वस्थ मन रहता है। स्वास्थ्य का सीधा संबंध स्वच्छता से है। मनुष्य जीवन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि बुद्धिमान प्राणी है। वह अन्य जीव–जंतुओं से ज्यादा समझ रखता है। तब यदि जानवर भी बैठने से पहले अपना स्थान साफ करते हैं तो मनुष्य को उससे कहीं अधिक स्वच्छता का ध्यान रखना चाहिए।

किसी भी व्यक्ति के सर्वांगीण विकास के लिए उसके वातावरण का स्वच्छ होना अति आवश्यक है। वातावरण में अस्वच्छता होने से बीमारियां घर कर सकती हैं। इतनी बड़ी जनसंख्या में जब तक सफाई नहीं होगी तब तक विभिन्न बीमारियों, सामाजिक कुरीतियों से देश को कभी मुक्त नहीं किया जा सकता है। आजादी के बाद स्वच्छता पर इतना जोर नहीं दिया गया। आज जहां प्रतिदिन जनसंख्या बढ़ती जा रही है वहीं करोड़ों टन कचरा भी बढ़ता जा रहा है जो कि एक गहन समस्या का विषय है।

इस बढ़ती गंदगी ने न जाने कौन–कौन सी विकट बीमारियों को दावत दे डाली है। आज हर व्यक्ति के अंदर डेंगू, चिकनगुनिया, मलेरिया, स्वाईन फ्लू न जाने किन–किन बीमारियों की दहशत फैली हुई है। महानगरों में इन बीमारियों का बढ़ना, बढ़ते प्रदूषण और गंदगी की ही देन है।

आज जब हमारे जैसे विकासशील देश का इतना बड़ा हिस्सा बीमारी से जूझ रहे व्यक्तियों की तरफ लगा रहेगा तब हमारी प्रति व्यक्ति उत्पादकता तो कम होगी ही साथ–साथ देश की उन्नति पर भी असर पड़ेगा।

इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए गांधी जी के बाद स्वच्छता को एक अभियान का रूप देने में देश के वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने एक अहम् कदम उठाया है। यह है एक कदम स्वच्छता की ओर।

उन्होंने 2 अक्टूबर, 2014 में इसकी शुरुआत की और इसको पूरा करने का सपना 2 अक्टूबर, 2019 तक है जब पूरा देश राष्ट्रपिता की 150वीं जयंती मनाएगा। इस अभियान में सभी व्यक्तियों ने यह प्रण लिया है कि न गंदगी करेंगे न करने देंगे।' 'जी हां, 'न गंदगी करेंगे और न करने देंगे।' ऐसी सोच जब समाज के हर व्यक्ति की होगी तो क्या स्वच्छ समाज नहीं बनेगा, जरूर बनेगा।

इस अभियान में कुछ मुख्य लोगों जैसे सचिन तेंदुलकर, बाबा रामदेव, अनिल अंबानी, प्रियंका चोपड़ा, सलमान खान, 'तारक मेहता का उल्टा

चश्मा' आदि को चुना जिससे एक कड़ी बनी और यह श्रृंखला चल पड़ी है। इस को सफल बनाने के लिए जगह–जगह प्रतियोगिताएं, सभाएं, कार्यशालाएं आदि कराई जा रही हैं जो लगातार सफल हो रही हैं।

बच्चों में एक अजीब सी लहर स्वच्छता को लेकर चल पड़ी है। हम छात्र छात्राओं को ही इस अभियान को गंभीरता से लेना होगा। हमारे देश का भविष्य हमारे ही कंधों पर है।

हर परिवार को शौचालय उपलब्ध करना, शहरों से कचरे का निस्तारण, पीने का साफ पानी उपलब्ध करना यह इस अभियान के मुख्य उद्देश्य हैं। जगह–जगह चलाए गए वृक्षारोपण कार्यक्रम भी इसका एक हिस्सा है। हमने यह शपथ भी खाई है कि हम पूरे वर्ष कम से कम 100 घंटे श्रमदाम देंगे। अतः हमें आज से यह प्रण लेना ही होगा कि इन उद्देश्यों को हम पूरा करेंगे व देश को उन्नत बनाएंगे। ❑

स्वच्छता कार्यक्रमों की रूके न गति

इस तरह हम कह सकते हैं कि 2019 तक भारत को स्वच्छ और हरा-भरा बनाने के लिए 'स्वच्छ भारत अभियान' एक स्वागत योग कदम है। भारत की जनता द्वारा प्रभावी रूप से इसका अनुसरण किया गया तो आने वाले चंद वर्षों में स्वच्छ भारत अभियान से पूरा देश भगवान का निवास स्थल-सा बन जाएगा।

◈ 'kokuk नौवीं
केन्टरबरी पब्लिक स्कूल
बी ब्लॉक, यमुना विहार, दिल्ली

'Lवच्छ भारत अभियान' को स्वच्छ भारत मिशन और स्वच्छता अभियान भी कहा जाता है। यह एक राष्ट्रीय स्तर का अभियान है और भारत सरकार द्वारा चलाया जा रहा है। यह शहरों और गांवों की सफाई के लिए आरंभ किया गया है। इस अभियान में शौचालयों का निर्माण, ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छता कार्यक्रमों को बढ़ाना देना, गलियों व सड़कों की सफाई, देश के बुनियादी ढांचे को बदलना आदि शामिल है।

इस अभियान को आधिकारिक तौर पर राजघाट, नई दिल्ली में 2 अक्टूबर, 2014 को महात्मा गांधी की 145वीं जयंती पर प्रधामंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा शुरू किया गया था। स्वच्छ भारत का सपना महात्मा गांधी के द्वारा देखा गया था जिसके संदर्भ में गांधी जी ने कहा, ''स्वच्छता स्वतंत्रता से ज्यादा जरूरी है''। उनके अपने समय में वे देश की गरीबी और गंदगी से अच्छे से अवगत थे, इसी वजह से उन्होंने अपने सपनों को पाने के लिए कई सारे प्रयास किये लेकिन सफल नहीं हो सके।

उन्होंने स्वच्छ भारत का सपना देखा था। उन्होंने कहा कि 'निर्मलता और

स्वच्छता दोनों ही स्वच्छ भारत और शांतिपूर्ण जीवन का अभिन्न भाग है।' लेकिन दुर्भाग्य से भारत आजादी के 69 साल बाद भी इन दोनों लक्ष्यों से काफी पीछे है। अगर आंकड़ों की बात करें तो केवल कुछ प्रतिशत लागों के घरों में शौचालय हैं, इसलिए भारत सरकार पूरी गंभीरता से बापू की इस सोच को हकीकत का रूप देने के लिए देश के सभी लोगों को इस मिशन से जोड़ने का प्रयास कर रही है, जिससे विश्व भर में यह सफल हो सके।

D;k g\ LoPN Òkjr vfÒ;ku % स्वच्छ भारत अभियान एक राष्ट्रीय स्वच्छता मुहिम है जो भारत सरकार द्वारा स्थापित किया गया है। इसके तहत 4040 सांविधिक नगरों के सड़क, पैदल मार्ग और अन्य कई स्थल आते हैं। यह बड़ा आंदोलन है जिसके तहत भारत को 2019 तक पूर्णतः स्वच्छ बनाना है। इसमें स्वस्थ और सुखी जीवन के लिए महात्मा गांधी के स्वच्छ भारत के सपने को आगे बढ़ाया गया है।

इस मिशन को 2 अक्टूबर 2014(145वें जन्म दिवस) को बापू के जन्म दिवस के शुभ अवसर पर आरंभ किया गया है और 2 अक्टूबर, 2019 (बापू के 150वीं जन्मदिवस) तक पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है। भारत के शहरी विकास तथा पेयजल और स्वच्छता मंत्रालय के तहत इस अभियान को ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में लागू किया गया है।

LoPN Òkjr vfÒ;ku dh t:jr % अपने उद्देश्य की प्राप्ति तक भारत में इस मिशन की कार्यवाही निरंतर चलती रहनी चाहिए। भौतिक, मानसिक, सामाजिक और बौद्धिक कल्याण के लिए भारत के लोगों में इसका एहसास होना बेहद जरूरी है। यह सही मायनों में भारत की सामाजिक स्थिति को बढ़ावा देने के लिए है जो हर तरफ स्वच्छता लाने से शुरू किया जा सकता है। यहां नीचे कुछ बिंदु उल्लिखित किए जा रहे हैं जो स्वच्छ भारत अभियान की आवश्यकता को दिखाते हैं–

- यह बेहद जरूरी है कि भारत के हर घर में शौचालय हो, साथ ही खुले में शौच की प्रवृत्ति को भी खत्म करने की आवश्यकता है।

- अस्वास्थकर शौचालय को पानी से बहने वाले शौचालयों में बदलने की आवश्यकता है।
- हाथ के द्वारा की जाने वाली साफ–सफाई की व्यवस्था का जड़ से खात्मा जरूरी है।
- नगर–निगम के कचरे का पुनर्चक्रण और दुबारा इस्तेमाल, सुरक्षित समापन, वैज्ञानिक तरीके से मैला प्रबंधन को लागू करना।
- ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों में वैश्विक जागरूकता का निर्माण करने के लिए और सामान्य लोगों को स्वास्थ्य से जोड़ने के लिए।
- इसमें काम करने वाले लोगों को स्थानीय स्तर पर कचरे के निष्पादन का नियंत्रण करना, खाका तैयार करने के लिए मदद करना।
- पूरे भारत में साफ–सफाई की सुविधा को विकसित करने के लिए निजी क्षेत्रों की हिस्सेदारी बढ़ाना।
- भारत को स्वच्छ और हरियाली युक्त बनाना।
- ग्रामीण क्षेत्रों में जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाना।
- स्वास्थ्य शिक्षा कार्यक्रमों के माध्यम से समुदायों और पंचायती राज संस्थानों को निरंतर साफ–सफाई के प्रति जागरूक करना।
- वास्तव में बापू के सपनों को सच करने के लिए ये सब करना है।

शहरी क्षेत्रों में स्वच्छ भारत मिशन का लक्ष्य हर नगर में ठोस कचरा प्रबंधन सहित लगभग सभी 1.04 करोड़ घरों को 2.6 लाख सार्वजनिक शौचालय, 2.5 लाख सामुदायिक शौचालय उपलब्ध कराना है जहां पर व्यक्तिगत घरेलू शौचालय की उपलब्धता मुश्किल है, इसी तरह सार्वजनिक शौचालय की प्राधिकृत स्थानों पर, जैसे बस अड्डों, रेलवे स्टेशनों, बाजारों आदि जगहों पर। शहरी क्षेत्रों में स्वच्छता कार्यक्रम को पांच वर्षों के अंदर 2019 तक पूरा करने की योजना है।

इस तरह हम कह सकते हैं कि 2019 तक भारत को स्वच्छ और हरा–भरा बनाने के लिए स्वच्छ भारत अभियान एक स्वागत योग कदम है। भारत की जनता द्वारा प्रभावी रूप से इसका अनुसरण किया गया तो आने वाले चंद वर्षों में स्वच्छ भारत अभियान से पूरा देश भगवान का निवास स्थल सा बन जाएगा। ❑

स्वच्छता की ओर अणुव्रत के बढ़ते कदम

◈ **rkfu;k** दसवीं
कमल पब्लिक सी.सै. स्कूल
विकासपुरी, दिल्ली

> *इसी आवश्यकता की पूर्ति हेतु अणुव्रत ने स्वच्छता अभियान को द्रुत पैमाने पर लेकर इसमें भागीदारी स्पष्ट कर दी है। अणुव्रत की आचार संहिता में स्पष्ट रूप से यह दिया गया कि "मैं पर्यावरण की समस्या के प्रति जागरूक रहूंगा।" इसी शपथ की पूर्ति हेतु अणुव्रत ने राष्ट्रीय स्वच्छता मिशन को अपना मिशन मान लिया है और प्रत्येक स्तर पर सर्वोत्कृष्ट कार्य कर रहा है।*

MLवच्छ भारत का इरादा... इरादा कर लिया हमने, देश से अपने ये वादा कर लिया हमने।'' इस उद्‌घोष के साथ भारत सरकार ने एक राष्ट्रीय स्तर का स्वच्छता अभियान प्रारंभ किया जिसका उद्देश्य गलियों, सड़कों तथा अधोसंरचना को साफ–सुथरा करना है। यह अभियान महात्मा गांधी के जन्मदिवस 2 अक्टूबर, 2014 को आरंभ हुआ। महात्मा गांधी ने स्वच्छता के महत्व को देखते हुए लोगों को अपने आसपास के वातावरण को साफ रखने की शिक्षा देकर राष्ट्र को एक उत्कृष्ट संदेश दिया था।

स्वच्छता मानव की मूलभूत आवश्यकता है। स्वच्छ वातावरण में स्वच्छ आदतों व स्वच्छ मनोभावों का जन्म होता है। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु भारत सरकार ने स्वच्छ भारत अभियान में कुछ उद्देश्यों को रखा है जिसमें शौचालयों के माध्यम से खुले शौच को कम करना या समाप्त करना भी शामिल है। सरकार ने 2 अक्टूबर, 2019 महात्मा गांधी के जन्म की 150वीं वर्षगांठ तक ग्रामीण भारत में 1.96 लाख करोड़ रुपए की अनुमानित राशि से 1.2 करोड़ शौचालयों का निर्माण करके खुले में शौच मुक्त भारत को हासिल करने का लक्ष्य है।

of'od Lrj ij LoPN Òkjr % विश्व के मंच पर भारत एक तेजी से उभरती हुई शक्ति के रूप में अपने आप को प्रतिष्ठित कर रहा है। ऐसे में भारत पर्यटकों को अपने देश में आने व यहां निवेश का न्योता भी दे रहा है। इसी क्रम के अगले चरण के रूप में स्वच्छ भारत की संकल्पना रखी गई है क्योंकि गंदगी और बदबू से भरे स्थान पर कोई आना पंसद नहीं करता।

भारत विश्व में अपनी पहचान हीरे की भांति चमका रहा है। इसी वजह से यह आवश्यक है कि उसका हर कोना हीरे की भांति चमके। इससे न केवल निवेश में बढ़ावा मिलेगा बल्कि पर्यटन भी बढ़ेगा।

LoPNrk vfÒ;ku vkj fofÒUu laLFkk,a % स्वच्छता अभियान एक राजनीति मुक्त और देशभक्ति से प्रेरित अभियान है। यह प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक जिम्मेदारी है और देश को स्वच्छ बनाने के लिए हर नागरिक की भागीदारी है। इस अभियान को सफल बनाने के लिए विश्व स्तर पर लोगों ने पहल की है।

कुछ संस्थानों ने भी इसमें पूर्ण उत्साह और उल्लास के साथ अपनी भागीदारी दर्शायी है। गांव से लेकर शहरों तक में स्वच्छ भारत मिशन के लिए संस्थाएं बनाई गई हैं। सरकारी संस्थाएं तो इसके लिए प्रयासरत हैं ही, साथ ही कई निजी संस्थाएं भी इस कार्य में जुड़ रही है।

v.kqozr dh Òkxhnkjh % अणुव्रत ने भारतीय समाज पर बहुत गहरा असर डाला है। जनता के मजबूत समर्थन के कारण यह नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों के उत्थान के लिए एक राष्ट्रीय अभियान है। इसके लोकप्रिय समर्थन का मुख्य कारण इसकी पूरी तरह से गैर–साम्प्रदायिक दृष्टिकोण में निहित है।

यह व्यक्ति की व्यक्तिगत या धार्मिक मान्यताओं में हस्तक्षेप नहीं करता परंतु समाज के उत्थान में इसकी पूर्ण दिलचस्पी है। यही कारण है कि जब स्वच्छता का अभियान चलाया गया तब इस संगठन ने इसे सबसे महत्वपूर्ण कार्यों में रखते हुए इसमें पूर्ण निष्ठा से अपना योगदान दिया।

v.kqor dk ;kxnku % अणुव्रत का शाब्दिक अर्थ है लघुव्रत अर्थात् छोटे पैमाने पर धारणा। अणुव्रत की शाब्दिक परिभाषा इतनी ही है पर इसकी भावना अत्यंत व्यापक है। अणुव्रत के आधार पर नैतिकता का मानदंड है संयम। संयम आत्ममुखी भी है तथा समाज मुखी भी है।

'संयमः खलु जीवनम्' का मूल मंत्र लेकर अणुव्रत समाज के प्रत्येक क्षेत्र मे कार्यरत है। अणुव्रत स्वयं एक अभियान है जो समाज के प्रत्येक क्षेत्र में संयम और ध्यान से अपने कर्तव्यों का निर्वहन करता है। स्वच्छता समाज के लिए अत्यंत आवश्यक है। स्वस्थ समाज के लिए स्वच्छ जगह की उतनी ही आवश्यकता है जितनी प्राणों के लिए आयु की।

इसी आवश्यकता की पूर्ति हेतु अणुव्रत ने स्वच्छता अभियान को द्रुत पैमाने पर लेकर इसमें भागीदारी स्पष्ट कर दी है। अणुव्रत की आचार संहिता में स्पष्ट रूप से यह दिया गया कि ''मैं पर्यावरण की समस्या के प्रति जागरूक रहूंगा।'' इसी शपथ की पूर्ति हेतु अणुव्रत ने राष्ट्रीय स्वच्छता मिशन को अपना मिशन मान लिया है और प्रत्येक स्तर पर सर्वोत्कृष्ट कार्य कर रहा है।

अणुव्रत आंदोलन के अंतर्गत कई संस्थाएं तमाम छोटे–बड़े शहरों और नगरों में स्वच्छता के लिए जन–जागरूकता कार्यक्रमों का आयोजन कर रही हैं। साहित्य का वितरण और संगोष्ठियों का आयोजन किया जा रहा है जिसका मुख्य उद्देश्य लोगों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता लाना है। आचार्य तुलसी की शिक्षाएं स्वच्छता को बढ़ावा दे रही हैं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने रेडियो पर प्रसारित होने वाले अपने मासिक कार्यक्रम 'मन की बात' में लगातार देश भर के विभिन्न व्यक्तियों एवं संगठनों के उन प्रयासों की सराहना की जिससे स्वच्छ भारत अभियान को व्यापक रूप से सफल बनने में मदद मिली। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मध्य प्रदेश की एक टीम की स्वच्छ भारत अभियान में उसकी भूमिका की सराहना की।

स्वच्छता न केवल प्रत्येक मनुष्य की आवश्यकता है बल्कि एक राष्ट्र को सुदृढ़ करने का मूल मंत्र भी है। सफाई के महत्व को प्रत्येक जनमानस

को न केवल समझाना इस स्वच्छता अभियान का उद्देश्य है बल्कि स्वच्छता को उनकी एक आदत के रूप में विकसित करना भी उसी अभियान का पुनीत कर्तव्य है। इस पहल को देशवासी आंदोलन की शक्ल देने में ही नहीं बल्कि अनेक संगठनों ने पहल की है जिसमें अणुव्रत के योगदान को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

अणुव्रत के आचार्य श्री तुलसी जी ने भी पर्यावरण को अत्यंत महत्वपूर्ण माना है। उन्हीं के आदर्शों को फलीभूत करता अणुव्रत आज भी अपने सिद्धांतों पर अग्रसर है। उसका ही परिणाम है कि समाज के प्रत्येक क्षेत्र में अणुव्रत ने अपना अप्रतिम योगदान दिया है।

यदि इसी प्रकार देश का हर नागरिक अपना एक कदम स्वच्छता की ओर उठाएगा तो हमारा देश एक साथ सवा सौ करोड़ कदम आगे बढ़ जाएगा। ❑

अणुव्रत के खास स्वच्छता प्रयास

अणुव्रत ने भारत को स्वच्छ बनाने की कोशिश की है, कर रहा है और करता रहेगा। वह दिन दूर नहीं होगा जब हमारा भारत स्वच्छ होगा, विकासवान होगा। स्वच्छ भारत मिशन का उद्देश्य सभी ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों को कवर करना है ताकि दुनिया के सामने हम एक आदर्श देश का उदाहरण प्रस्तुत कर सकें।

◈ Ik{kh 'kkD;k दसवीं
संत निरंकारी पब्लिक स्कूल
निरंकारी कॉलोनी, दिल्ली

प्रातत्व विद्या की गणना करने वाले विद्वान कहा करते थे कि 'स्वच्छ जगह पर ही ईश्वर का वास होता है और लक्ष्मी भी अपने कदम वहीं रखती हैं जहां स्वच्छता होती है।' कहते हैं 'स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का वास होता है और स्वस्थ शरीर तभी होता है जब हम अपने आसपास सफाई रखते हैं।'

ईश्वर ने इस नश्वर संसार को प्रकृति के रूप में एक अनमोल भेंट प्रदान की थी परंतु मनुष्य ने कभी प्रकृति के मातृत्व को समझा ही नहीं। मनुष्य ने कभी धरती मां के वस्त्रों अर्थात् वृक्षों को काटा तो कभी उनके वस्त्रों पर गंदगी फैला कर उन्हें गंदा किया।

गांधी जी ने कहा था, ''तुम वो बदलाव बनों जो तुम दुनिया में देखना चाहते हो।'' स्वच्छ भारत मिशन या स्वच्छ भारत अभियान भारत सरकार द्वारा चलाया गया एक विशाल जनांदोलन है जोकि पूरे भारत में सफाई को बढ़ावा देता है तथा गांधी जी के सपनों को पूरा करने की क्षमता रखता है।

इस अभियान को 2019 तक एक स्वच्छ भारत का लक्ष्य रखते हुए 2 अक्टूबर, 2014 को महात्मा गांधी के 150वें जन्मदिन के शुभ अवसर पर शुरु किया गया था। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने भारत को एक स्वच्छ भारत बनाने का सपना देखा और इसके लिए हमेशा कठिन प्रयास किये। राष्ट्रपिता के सपने को साकार करने के लिए भारत सरकार ने इस अभियान को शुरू करने का फैसला किया।

यह एक राजनीति मुक्त अभियान है और देशभक्ति से प्रेरित है। कहा जाता है 'संघे शक्ति कलियुगे' हम सबको परस्परावलंबन से अपने आसपास स्वच्छता स्थापित करनी चाहिए। बूंद–बूंद से ही घड़ा भरता है। जब हम अपने गली–मौहल्लों व गलियारों को साफ रखेंगे, तभी संपूर्ण देश साफ रहेगा।

अणुव्रत एक निजी संस्था है। खंड़ों में विभाजित यह संस्था संपूर्ण भारत में अखंड रूप से विद्यमान है। मानवता के हित में अणुव्रत ने कई कदम उठाए हैं व कई ऊँचाइयों को हासिल किया है। इसी बात की कामना की है कि *'सर्वे भवन्तु सुखिना, सर्वे संतु निरामया। सर्वे भद्राणि पशियन्तु, मा कश्चिद् दुःख भाग भवेत।'*

देश को साफ रखना, बगिया को महकाए रखना यह भी एक प्रकार की देशभक्ति है। 'बूंद–बूंद से ही सागर बनता है।' जब हम छोटे–छोटे कदम उठाएगे तभी तो पूरा भारत साफ होगा। हमरे आसपास सफाई रखना हमारा कर्त्तव्य है और हमें इस कर्त्तव्य को पूरे जी–जान से निभाना चाहिए। क्यों न हम कर्त्तव्य–बोध का एक छोटा सा दीप जलाएं। यह हमारा लघु–दीप भीतर और बाहर का सारा अंधेरा पी जाएगा।

अणुव्रत ने हमारे भारत को स्वच्छ बनाने की कोशिश की है, कर रहा है और करता रहेगा। वह दिन दूर नहीं होगा जब हमारा भारत स्वच्छ होगा, विकासवान होगा। स्वच्छ भारत मिशन का उद्देश्य सभी ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों को कवर करना है ताकि दुनिया के सामने हम एक आदर्श देश का उदाहरण प्रस्तुत कर सकें।

मिशन के उद्देश्य में से कुछ उद्देश्य हैं खुले में शौच समाप्त करना, हाथ से मल की सफाई को रोकना, ठोस और तरल कचरे का पुनः उपयोग, शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में सफाई व्यवस्था अनुकूल बनाना आदि।

इस अभियान में बहुत ही रूचिपूर्ण तरीका इस्तेमाल हो रहा है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति 9 लोगों को इससे जुड़ने के लिए आमंत्रित करेगा और फिर वह प्रत्येक व्यक्ति अगले 9 लोगों को जुड़ने के लिए आमंत्रित करेंगे और यह श्रृंखला तब तक चलती रहेगी जब तक कि भारत का प्रत्येक नागरिक इससे जुड़ न जाए।

यदि हम अपने आसपास साफ–सफाई रखेंगे तो हम बीमारियों से बच सकेंगे। गंदे पानी में या रखे हुए पानी में मच्छर बहुत जल्दी पैदा हो जाता है। इसलिए हमें अपने घर में और घर के आसपास पानी जमा नहीं होने देना चाहिए। ज्यादा प्लास्टिक के उपयोग से हमारे पर्यावरण पर बहुत बुरा असर पड़ता है, इसलिए हमें प्लास्टिक का नहीं बल्कि ऐसी चीजों का इस्तेमाल करना चाहिए जो हमें नुकसान न पहुंचाएं।

हमें अपने आप को साफ–सुथरा रखना चाहिए। हमें रोज नहाना चाहिए, हर हफ्ते अपने बला और नाखून साफ करने चाहिए। खाना खाने से पहले हाथ धोने चाहिए।

अणुव्रत लोगों को सफाई के प्रति जागरूक करता है। अच्छी आदतों के लिए प्रेरित करता है। शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में सफाई व्यवस्था अनुकूल बनाता है। भारत में निवेश के लिए रुचि रखने वाले सभी निजी क्षेत्रों के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान कराना है। गली मोहल्ले को साफ रखने की प्रेरणा देना है। शौचालय की सुविधा उपलब्ध कराने में सरकार की सहायता भी करता है। यह भारत को एक स्वच्छ, सुंदर और विकसित देश बनाने का उद्देश्य रखता है।

हमें अपनी सोच को बदलना चाहिए और एक नवीन भारत का निर्माण करना चाहिए। यदि हम कुछ छोटे–छोटे कदमों को बढ़ा लें तो वह दिन अब ज्यादा दूर नहीं होगा जब हमारा भारत स्वच्छ होगा। ❏

स्वच्छता सबसे बड़ा पुण्य कार्य

◈ **l jkftuh** दसवीं
जिनवाणी भारती पब्लिक स्कूल
सैक्टर–4, द्वारका, दिल्ली

स्वच्छता एक ऐसा कार्य नहीं है जो पैसा कमाने के लिए किया जाए बल्कि यह एक अच्छी आदत है जिसे हमें अच्छे स्वास्थ्य और स्वस्थ जीवन के लिये अपनाना चाहिए। स्वच्छता सबसे पुण्य का कार्य है जिसे जीवन का स्तर बढ़ाने के लिए एक बड़ी जिम्मेदारी के रूप में हर एक को अनुकरण करना चाहिए।

uई दिल्ली में राजपथ पर 'स्वच्छ भारत अभियान' का शुभारंभ करते हुए श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा, ''2019 में महात्मा गांधी की 150वीं जयंती के अवसर पर भारत उन्हें स्वच्छ भारत के रूप में सर्वश्रेष्ठ श्रद्धांजलि दे सकता हैं।'' 2 अक्टूबर 2014 को देश भर में एक राष्ट्रीय आंदोलन के रूप में स्वच्छ भारत मिशन की शुरुआत हुई।

स्वच्छता के लिए जन आंदोलन की अगुवाई करते हुए प्रधानमंत्री ने लोगों से आह्वान किया कि न तो स्वयं गंदगी फैलानी चाहिए और न ही किसी और को फैलाने देनी चाहिए। उन्होंने 'ना गंदगी करेंगे, न करने देंगे' का मंत्र दिया। श्री मोदी ने स्वच्छता अभियान में शामिल होने के लिए नौ लोगों को आमंत्रित भी किया और उनसे अनुरोध किया कि वे सभी नौ अन्य लोगों को इस पहल में जोड़ें।

इस अभियान में शामिल होने के लिए लोगों को आमंत्रित करने के कारण स्वच्छता अभियान एक राष्ट्रीय आंदोलन बन गया। स्वच्छ भारत मिशन के माध्यम से लोगों में जिम्मेदारी की भावना आई। देश भर में लोग

सक्रिय रूप से स्वच्छ भारत अभियान में शामिल हो रहे हैं और महात्मा गांधी का 'स्वच्छ भारत' का सपना अब साकार होने लगा है।

प्रधानमंत्री ने अपने आह्वान और कार्यों के माध्यम से लोगों के बीच स्वच्छ भारत का संदेश फैलाया। उन्होंने वाराणसी में भी सफाई अभियान चलाया। उन्होंने स्वच्छ भारत मिशन के तहत वाराणसी के अस्सी घाट में गंगा नदी के पास कुदाल से साफ–सफाई की। स्थानीय लोगों के एक बड़े दल ने स्वच्छ भारत अभियान में उनका साथ दिया।

समाज के विभिन्न वर्गों के लोग आए और सफाई के इस जन आंदोलन में शामिल हुए। सरकारी अधिकारियों से लेकर जवानों तक, बॉलीवुड अभिनेताओं से लेकर खिलाड़ियों तक, उद्योगपतियों से लेकर आध्यात्मिक गुरुओं तक, सभी इस पवित्र कार्य से जुड़े रहे हैं।

बॉलीवुड हस्तियों से लेकर टीवी कलाकार भी सक्रिय रूप से इस अभियान में शामिल हुए। अमिताभ बच्चन, आमिर खान, कैलाश खेर, प्रियंका चोपड़ा जैसी प्रसिद्ध हस्तियों और सब टीवी शो 'तारक मेहता का उल्टा चश्मा' की पूरी टीम ने स्वच्छ भारत अभियान में अपना योगदान दिया। स्वच्छ भारत अभियान में सचिन तेंदूलकर, सानिया मिर्जा, साइना नेहवाल और मेरी कॉम एवं अन्य कई खिलाड़ियों का योगदान भी सराहनीय है।

स्वच्छ भारत अभियान भारत सरकार द्वारा आरंभ किया गया राष्ट्रीय स्तर का अभियान है जिसका उद्देश्य गलियों, सड़कों तथा अधो संरचना को साफ–सुथरा करना है। मिशन का उद्देश्य 1.04 करोड़ परिवारों को लक्षित करते हुए 2.5 लाख समुदायिक शौचालय, 2.6 लाख सार्वजनिक शौचालय और प्रत्येक शहर में एक बेस अपशिष्ट प्रबंधन की सुविधा प्रदान करना है। इस कार्यक्रम के तहत आवासीय क्षेत्रों में जहां व्यक्तिगत घरेलू शौचालयों का निर्माण करना मुश्किल है वहां सामुदायिक शौचालयों का निर्माण करना है। पर्यटन स्थलों, बाजारों, बस अड्डों, रेलवे स्टेशनों जैसे प्रमुख स्थानों पर भी सार्वजनिक शौचालय का निर्माण किया जाए।

निर्मल भारत अभियान कार्यक्रम भारत सरकार द्वारा चलाया जा रहा ग्रामीण क्षेत्र में लोगों के लिए जन केन्द्रित अभियान है, जिसमें लोगों की

स्वच्छता सम्बंधी आदतों को बेहतर बनाना, सब सुविधाओं की मांग उत्पन्न कराना और स्वच्छता सुविधाओं को उपलब्ध कराना जिससे ग्रामीणों के जीवन स्तर को बेहतर बनाया जा सके।

अभियान का उद्देश्य पांच वर्षों में भारत को खुला शौच से मुक्त देश बनाना है। अभियान को युद्ध स्तर पर प्रारंभ कर ग्रामीण आबादी और स्कूली शिक्षकों और छात्रों के बड़े वर्गों के अलावा प्रत्येक स्तर पर प्रयास में देश भर की ग्रामीण पंचायत समिति और जिला परिषद् को भी इससे जोड़ना है।

स्वच्छता एक ऐसा कार्य नहीं है जो पैसा कमाने के लिए किया जाए बल्कि यह एक अच्छी आदत है जिसे हमें अच्छे स्वास्थ्य और स्वस्थ जीवन के लिये अपनाना चाहिए। स्वच्छता सबसे पुण्य का कार्य है जिसे जीवन का स्तर बढ़ाने के लिए एक बड़ी जिम्मेदारी के रूप में हर एक को अनुकरण करना चाहिए। हमें अपनी व्यक्तिगत स्वच्छता, पालतू जानवरों की स्वच्छता, पर्यावरण की स्वच्छता, अपने आसपास की स्वच्छता और कार्यस्थल की स्वच्छता आदि करनी चाहिये। हमें पेड़ों को नहीं काटना चाहिए और पर्यावरण को स्वच्छ बनाए रखने के लिए पेड़ अधिक से अधिक लगान चाहिए।

यह कोई बाध्यकारी कार्य नहीं है लेकिन हमें इसे शांतिपूर्ण तरीके से करना चाहिए। यह हें मानसिक, शारीरिक, सामाजिक और बौद्धिक रूप से स्वस्थ रखता है। सभी के साथ मिलकर लिया गया कदम एक बड़े कदम के रूप में परिवर्तित हो सकता है। जब एक छोटा बच्चा सफलतापूर्वक चलना, बोलना, दोड़ना सीख सकता है, और यदि अभिभावक के द्वारा इसको बढ़ावा दिया जाए तो बहुत आसानी से स्वच्छता की आदत को बचपन से ग्रहण कर सकता है।

स्वच्छता हमें मानसिक, शारीरिक, सामाजिक और बौद्धिक हर तरीके से स्वस्थ बनाती है। सामान्यतः हमने हमेशा अपन घर में ध्यान दिया है कि हमारी दादी और मां पूजा से पहले स्वच्छता को लेकर बहुत सख्त होती हैं, यह कोई अलग बात नहीं है वे बस साफ–सफाई को हमारी आदत

चाहती हैं। लेकिन वे गलत तरीका अपनाती हैं क्योंकि वे स्वच्छता के उद्देश्य और कायदे को नहीं बताती है, इसी वजह से हमें स्वच्छता का अनुसरण करने में समस्या आती है। हर अभिभावक को तार्किक रूप से स्वच्छता के उद्देश्य, कायदे और जरूरत आदि के बारे में अपने बच्चों से बात करनी चाहिये। उन्हें जरूर बताना चाहिये कि स्वच्छता हमारे जीवन में खाने और पानी की तरह पहली प्राथमिकता है।

अपने भविष्य को चमकदार और स्वस्थ बनाने के लिए हमें हमेशा खुद को और अपने आसपास के पर्यावरण का खयाल रखना चाहिये। हमें साबुन से नहाना, नाखुनों को काटना, साफ और प्रेस किये हुए कपड़े आदि कार्य रोज करने चाहिये। घर को कैसे स्वच्छ और शुद्ध बनाएं यह हमें अपने माता–पिता से सीखना चाहिए।

हमें अपने आसपास के वातारण को साफ रखना चाहिए ताकि किसी प्रकार की बीमारी न फैले। कुछ खाने से पहले और खाने के बाद साबुन से हाथ धोने चाहिए। हमें पूरे दिन साफ और शुद्ध पानी पीना चाहिए, हमें बाहर के खाने से बचना चाहिए, साथ ही ज्यादा मसालेदार और तैयार पेय पदार्थों से परहेज करना चाहिए। ❑

साफ–सफाई हमारे व्यवहार में नहीं

◈ ekuh fc"V बारहवीं
दिल्ली जैन पब्लिक स्कूल
रेलवे रोड, पालम, दिल्ली

हम भारतीय अपने हर तरफ की गंदगी के लिए गंभीर नहीं हैं। कहीं भी कोई गंदगी का ढेर देख सकता है। अपने आसपास के वातावरण को साफ और स्वच्छ रखना हमारे व्यवहार में नहीं है। अधिक से अधिक हम अपने घर को साफ रखते हैं और सड़क, रास्ते, पार्क या सार्वजनिक जगहों के प्रति हम चिंतित हों, यह हमारा मसला नहीं है।

Vणुव्रत का अर्थ है लघुव्रत। जैन धर्म के अनुसार श्रावक अणुव्रतों का पालन करते हैं। 'महाव्रत' साधुओं के लिए बनाए जाते हैं। यही अणुव्रत और महाव्रत में अंतर है, अन्यथा दोनों समान हैं। अणुव्रत इसलिए कहे जाते हैं कि साधुओं के महाव्रतों की अपेक्षा वे लघु होते हैं। महाव्रतों में सर्वत्याग की अपेक्षा रखते हुए सूक्ष्मता के साथ व्रतों का पालन होता है, जबकि अणुव्रतों का स्थूलता से पालन किया जाता है। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो अणुव्रत का अर्थ होता है नियमों का पालन करना।

जैसा कि हम सब जानते हैं कि बिना नियमों के पालन के कोई कार्य सफलतापूर्वक नहीं होता। हर कार्य में अणुव्रत की भूमिका होना जरूरी है। अणुव्रत दो शब्दों को मिलाकर बना है 'अणु' जिसका अर्थ है छोटा, 'व्रत' जिसका अर्थ संकल्प।

'स्वच्छ भारत अभियान' में अणुव्रत की भूमिका बहुत श्रेष्ठ है। स्वच्छ भारत अभियान भारत सरकार द्वारा आरंभ किया गया राष्ट्रीय स्तर का अभियान है जिसका उद्देश्य गलियों, सड़कों तथा अधोसंरचना को

साफ–सुथरा करना है। यह अभियान महात्मा गांधी के जन्मदिवस 2 अक्टूबर, 2014 को आरंभ किया गया। महात्मा गांधी ने अपने आसपास के लोगों को स्वच्छता बनाए रखने संबंधी शिक्षा प्रदान कर राष्ट्र को एक उत्कृष्ट संदेश दिया था।

स्वच्छ भारत अभियान को स्वच्छ भारत मिशन और स्वच्छता अभियान भी कहा जाता है। यह अभियान हमारे प्रधानमंत्री नरेद्र मोदी द्वारा शुरू किया गया था। यह एक महत्वपूर्ण विषय है। हमारे बच्चों और छात्रों की इसकी जानकारी होना आवश्यक है। इस अभियान को सफल बनाने के लिए प्रधानमंत्री स्वयं अग्रसक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। यह केवल सरकार का अकेले का कर्तव्य नहीं है बल्कि देश के नागरिकों का भी पूरा योगदान होना चाहिए।

इंडिया जो कि भारत है, एक प्राचीन सभ्यता है। इसे एक पवित्र राष्ट्र माना जाता है, इसके लोग बहुत धार्मिक हैं। यहां पर लोगों में धार्मिक पवित्रता नजर आती है। भारत में विभिन्न धर्मों के लोग रहते हैं। हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई, सिक्ख, पारसी, जैन आदि और वे अपने धर्मों का पूरी निष्ठा से पालन करते हैं। लेकिन यह हमारे देश की कड़वी सच्चाई है कि स्वच्छता और धर्मपरायणता केवल धार्मिक गतिविधियों और रसोई तक ही सीमित है।

हम भारतीय अपने हर तरफ की गंदगी के लिए गंभीर नहीं हैं। कहीं भी कोई गंदगी का ढेर देख सकता है। अपने आसपास के वातावरण को साफ और स्वच्छ रखना हमारे व्यवहार में नहीं है। अधिक से अधिक हम अपने घर को साफ रखते हैं और सड़क, रास्ते, पार्क या सार्वजनिक जगहों के प्रति हम चिंतित हों, यह हमारा मसला नहीं है। यहां तक कि आजादी के 69 साल के बाद यह सच में शर्मनाक है कि भारतीय अपने अस्वास्थकर व्यवहार के लिए प्रसिद्ध हैं।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने भारत की स्वतंत्रता से पहले अपने समय के दौरान 'स्वच्छता आजादी से अधिक महत्वपूर्ण है' कहा था। वे भारत के बुरे और गन्दी स्थिति से अच्छी तरह परिचित थे। उन्होंने भारत के लोगों

को साफ–सफाई और अस्वच्छता के बारे और इसे अपने दैनिक जीवन में शामिल करने पर बहुत जोर दिया था। हालांकि यह लोगों के कम रूचि के कारण असफल रहा।

अगर लोगों को स्वच्छ, हरा–भरा और साफ–सुथरा भारत चाहिए तो उन्हें नियम बनाकर काम करना चाहिए और स्वच्छता से जुड़े सभी नियमों का पालन भी करना चाहिए। बिना नियमों के पालन के किसी काम में सफलता नहीं मिलती। पुराने समय में भी साधु अपना नियम बना लेते थे और उसी पर अमल करते थे। आजकल के लोग बहुत आलसी और स्वार्थी हो गए हैं, वे केवल अपने घर को स्वच्छ रखते हैं किंतु यह भूल जाते हैं कि वह भी इस देश के नागरिक हैं।

यह एक राजनीति मुक्त अभियान है और देशभक्ति से प्रेरित है। यह प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक जिम्मेदारी है और हम देश को स्वच्छ बनाने के लिए हर भारतीय नागरिक की भागीदारी की आवश्यकता है। इस अभियान को सफल बनाने के लिए विश्व स्तर पर लोगों ने पहल की है। शिक्षा और स्कूल के छात्र इसमें पूर्ण उत्साह और उल्लास के साथ शामिल हो रहे हैं और इस अभियान को सफल बनाने का प्रयास कर रहे हैं।

हर भारतीय को इसे एक चुनौती के रूप में लेना चाहिए और भारत को स्वच्छ बनाने का प्रयास करना चाहिए। हम लोगों को एकजुट होकर इस अभियान में हिस्सा लेना चाहिए और देश को स्वच्छ बनाना चाहिए। सभी देशवासियों को साफ–सफाई के इस अभियान में बढ–चढ़कर हिस्सा लेना चाहिए।

महात्मा गांधी स्वच्छता के बहुत बड़े समर्थक थे। वे गंदी सड़कें, रास्ते, मंदिर और खास तौर से देश की हरिजन बस्ती के बारे में बहुत ज्यादा चिंतित रहते थे। दक्षिण अफ्रिका से लौटने के तुरंत बाद उन्होंने महसूस किया कि स्वच्छता और साफ–सफाई के मामले में भारत देश की स्थिति बहुत खराब है। गांधी जी ने लोगों को प्रेरणा देने की जिम्मेदारी अपने ऊपर ली और व्यक्तिगत रूप से भारत को गंदगी मुक्त बनाने का

फैसला किया। गांधी जी के लिए सफाई उतनी महत्वपूर्ण है जितनी राष्ट्र की आजादी।

इस स्वच्छ भारत अभियान में हम सभी को स्वयं से शुरुआत करके अपने आसपास, गलियों, सड़कों, मोहल्लों, गांवों, शहरों एवं अपने कार्य स्थल से गंदगी को दूर करना और ज्यादा से ज्यादा लोगों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता बढ़ाकर सफाई के प्रति रूचि पैदा करना है। हमने आजादी की लड़ाई में तो कोई बलिदान नहीं दिया था किंतु इस कार्य को हम जीते जी पूर्ण कर सके तो यह हम सबका धरती मां की सेवा के रूप में बलिदान ही होगा।

स्वच्छ भारत के निर्माण में अणुव्रत की विशेष भूमिका है। स्वच्छ भारत के लिए बनाए गए नियम अत्यंत लाभकारी हैं। यदि हर व्यक्ति ऐसे ही भारत को स्वच्छ बनाने का नियम बनाए तो वह दिन दूर नहीं जब हमारा देश साफ–सुथरा और हरा–भरा हो जाएगा। इस अभियान का असर आम जनता में अब दिखने लगा है।

हमें नियम बनाकर देश को स्वच्छता की ओर ले जाना होगा। हमें अपने साथ–साथ बाकी लोगों को भी इसका महत्व बताना होगा और उन्हें भी जागरूक करना होगा। देश को स्वच्छ बनाने के लिए हमें एकजुट होकर इसकी स्वच्छता पर ध्यान देना होगा। ठोस और तरल कचरे का पुनः उपयोग करना होगा। सफाई को अपने हर रोज का नियम बनाना होगा जिससे देश जल्द से जल्द स्वच्छ हो। लोग बीमार कम पड़े और हृष्ट–पुष्ट रहें। ❑

स्वच्छता का आदर्श उदाहरण हो भारत

◈ dne fç;dk v'kkd सातवीं
श्री शिवाजीराव नारायणराव
नागवडे विद्यालय
बांगदरी, अहमदनगर, महाराष्ट्र

'स्वच्छ भारत अभियान' भारत का सबसे बड़ा सफाई अभियान है जिसके शुभारंभ पर लगभग 30 लाख स्कूलों और कॉलेजों के छात्रों और सरकारी कर्मचारियों ने भाग लिया। प्रधानमंत्री ने कहा कि हर भारतीय इसे एक चुनौती के रूप में ले और इसे सफल अभियान बनाने के लिए अपना पूरा प्रयास करे। नौ लोगों की श्रृंखला पेड़ की शाखाओं की तरह हैं। उन्होंने आम जनता को इससे जुड़ने के लिए अनुरोध किया।

bस अभियान को स्वच्छ मिशन और स्वच्छता अभियान भी कहा जाता है। यह एक राष्ट्रीय स्तर का अभियान है जो कि शहरों और गावों की सफाई के लिए आरंभ किया गया है। इस अभियान में शौचालयों का निर्माण, ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छता कार्यक्रमों को बढ़ावा देना, गलियों व सड़कों को सफाई, देश के बुनियादी ढांचे को बदलना आदि शामिल हैं। इस अभियान को आधिकारिक तौर पर राजघाट, नई दिल्ली में 2 अक्टूबर, 2014 को महात्मा गांधी की 145वीं जयंती पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा शुरू किया गया था।

भारत सरकार ने 2 अक्टूबर, 2019 तक भारत को स्वच्छ भारत बनाने का उद्देश्य रखा है। यह एक राजनीति मुक्त अभियान है और देशभक्ति से प्रेरित है। यह प्रत्येक व्यक्ति के लिए जिम्मेदारी है और इस देश को स्वच्छ देश बनाने के लिए हर भारतीय नागरिक की भागीदारी की आवश्यकता है। इस अभियान को सफल बनाने के लिए विश्व स्तर पर लोगों ने पहल की है। शिक्षक और स्कूल के छात्र इसमें पूर्ण उत्साह

और उल्लास के साथ शामिल हो रहे हैं और इसको सफल बनाने का प्रयास कर रहें हैं।

भारत को एक स्वच्छ देश बनाना महात्मा गांधी का एक सपना था, इसलिए इसे महात्मा गांधी की जयंती पर भारत सरकार द्वारा शुरू किया गया। महात्मा गांधी ने अपने वक्त में लोगों को प्रेरित करके स्वच्छ भारत बनाने की कोशिश की थी किन्तु लोगों की कम रूचि के कारण असफल रहे।

कुछ वर्षों बाद स्वच्छ भारत मिशन को सफल बनाने के लिए भारत सरकार द्वारा पुनः आरंभ किया गया जो की महात्मा गांधी के 150वीं जयंती तक समाप्त होने का अनुमान है। यह नागरिकों के लिए एक बड़ी चुनौती है। यह तभी संभव है जबकि भारत में रहने वाला हर व्यक्ति इस अभियान के लिए अपनी जिम्मेदारी को समझे और इसे एक सफल मिशन बनाने के लिए एक साथ होकर पूरा करने की कोशिश करे।

इस मिशन का उद्देश्य सभी ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों को कवर करना है ताकि दुनिया के सामने हम एक आदर्श देश का उदाहरण प्रस्तुत कर सकें। मिशन के उद्देश्यों में से कुछ उद्देश्य हैं–खुले में शौच समाप्त करना, अस्वास्थ्यकर शौचालयों को फ्लश शौचालय में परिवर्तित करना, हाथ से मल की सफाई को रोकना, ठोस और तरल कचरे का पुनः उपयोग, लोगों को सफाई के प्रति जागरूक करना, अच्छी आदतों के लिए प्रेरित करना, शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में सफाई व्यवस्था अनुकूल बनाना व भारत में निवेश के लिए रुचि रखने वाले सभी निजी क्षेत्रों के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करना आदि।

इस अभियान में बहुत ही रुचिपूर्ण तरीका इस्तेमाल हो रहा है जिससे प्रत्येक व्यक्ति 9 लोगों को इसके साथ जुड़ने के लिए आमंत्रित करेगा और फिर वह प्रत्येक व्यक्ति अगले 9 लोगों को जुड़ने के लिए आमंत्रित करेंगे और ये श्रृंखला तब तक चलती रहेगी जब तक भारत का प्रत्येक नागरिक इससे जुड़ न जाए।

स्वच्छ भारत अभियान भारत का सबसे बड़ा सफाई अभियान है जिसके शुभारंभ पर लगभग 30 लाख स्कूलों और कॉलेजों के छात्रों और सरकारी कर्मचारियों ने भाग लिया। प्रधानमंत्री ने कहा कि हर भारतीय इसे एक चुनौती के रूप में ले और इसे सफल अभियान बनाने के लिए अपना पूरा प्रयास करे। नौ लोगों की श्रृंखला पेड़ की शाखाओं की तरह हैं। उन्होंने आम जनता को इससे जुड़ने के लिए अनुरोध किया।

इस मिशन की निरंतरता बनाए रखते हुए उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सभी आधिकारिक, सरकारी इमारतों में सफाई सुनिश्चित करने के लिए उत्तरप्रदेश में चबाने वाला पान, गुटका और अन्य तम्बाकू उत्पादों पर प्रतिबंध लगा दिया।

इस तरह हम कह सकते हैं कि 2019 तक भारत को और हराभरा बनाने के लिए स्वच्छ भारत अभियान एक स्वागत योग्य कदम है। जैसा हम सभी ने कहावत में सुना है, हम विश्वास के साथ कह सकते हैं कि अगर भारत की जनता द्वारा प्रभावी रूप से इसका अनुसरण किया गया तो आने वाले चंद वर्षों में स्वच्छ भारत अभियान से पूरा देश चमक जाएगा। एक स्वच्छ देश और स्वस्थ समाज को जरूरत है कि उसके नागरिक स्वस्थ रहें तथा हर व्यवसाय में स्वच्छ हों। भारत देश 'स्वच्छ भारत' नाम से जाना जाएगा। ❑

एक व्यक्ति अच्छी आदत के साथ अपने बुरे विचारों और इच्छाओं को खत्म कर सकता है। घर या अपने आसपास में संक्रमण फैलने से बचाने और गंदगी के पूर्ण निपटान के लिए हमें ध्यान रखना चाहिए कि गंदगी को केवल कूड़ेदान में ही डालें। साफ-सफाई केवल एक व्यक्ति की जिम्मेदारी नहीं है बल्कि यह घर, समाज, समुदाय और देश के हर नागरिक की जिम्मेदारी है।

सफाई के फायदों को समझना होगा

◈ **fofnr nÙkk** छठी
सेंट सिसीलियास पब्लिक स्कूल
एफ ब्लॉक, विकासपुरी, दिल्ली

gमारे लिए स्वस्थ जीवन शैली और जीवन के स्तर को बनाए रखने के लिए स्वच्छता बहुत जरूरी है। यह व्यक्ति को प्रसिद्ध बनाने में अहम रोल निभाती है। स्वच्छ भारत अभियान की शुरुआत सरकार द्वारा देश को स्वच्छता के प्रतीक के रूप में पेश करना है। स्वच्छ भारत का सपना महात्मा गांधी द्वारा देखा गया था जिसके संदर्भ में गांधी जी ने कहा कि 'स्वच्छता स्वतंत्रता से ज्यादा जरूरी है।'

उन्होंने स्वच्छ भारत का सपना देखा था। उन्होंने कहा कि निर्मलता और स्वच्छता दोनों ही स्वस्थ और शांतिपूर्ण जीवन का अनिवार्य भाग हैं। इस मिशन को प्रारंभ की तिथि से बापू की 150वीं पुण्यतिथि तक पूरा करने का लक्ष्य है। इस अभियान को सफल बनाने में सरकार ने सभी लोगों से निवेदन किया कि वे अपने आसपास और दूसरी जगहों पर साल में सिर्फ 100 घंटे सफाई के लिये दें।

यह एक बड़ा आंदोलन है जिसके तहत भारत को 2019 तक पूर्णतः स्वच्छ बनाना है। इसमें स्वस्थ और सुखी जीवन के लिए महात्मा

गांधी के स्वच्छ भारत के सपने को आगे बढ़ाया गया है। इस मिशन को 2 अक्टूबर, 2014 को बापू के जन्म दिवस के शुभ अवसर पर आरंभ किया गया। भारत के शहरी विकास तथा पेयजल और स्वच्छता मंत्रालय के तहत इस अभियान को ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में लागू किया गया है। स्वच्छता से हमारा शरीर, दिमाग, कपड़े, घर, आसपास और कार्यक्षेत्र साफ और शुद्ध रहते हैं। हमारे मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के लिय साफ–सफाई बेहद जरूरी है। अपने आसपास के क्षेत्रों और पर्यावरण की सफाई सामाजिक और बौद्धिक स्वास्थ्य के लिए बहुत जरूरी है।

हमें साफ–सफाई को अपनी आदती में लाना चाहिए और गंदगी को हमेशा के लिये हर जगह से हटा देना चाहिए क्योंकि गंदगी वह जड़ है जो कई बीमारियों को जन्म देती है। जो रोज नहीं नहाता, गंदे कपड़े पहनता है, अपने घर या आसपास के वातावरण को गंदा रखता है तो वह हमेशा बीमार रहता है।

गंदगी से आसपास के क्षेत्रों में कई तरह के कीटाणु, बैक्टेरिया, वाइरस तथा फंगस आदि पैदा होते हैं जो बीमारियों को जन्म देते हैं। जिन लोगों को गंदगी की आदते हैं वे भी खतरनाक और जानलेवा बीमारियों को फैलाते हैं। संक्रमित रोग बड़े क्षेत्रों में फैलते हैं और लोगों को बीमार करते हैं। कई बार तो इससे मौत भी हो जाती है, इसलिये हमें नियमित तौर पर स्वच्छता का ध्यान रखना चाहिए।

हम जब भी कुछ खाने जाएं तो अपने हाथों को साबुन से धो लें। हमें अपने शरीर और चेहरे को तीव्र नहाने से बचाना चाहिए। अपने शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिये हमें बिल्कुल साफ–सुथरे कपड़े पहनने चाहिये। स्वच्छता से हमारा आत्मविश्वास बढ़ता है और दूसरों का भी हम पर भरोसा बनता है। यह एक अच्छी आदत है जो हमें हमेशा खुश रखेगी। यह हमें समाज में बहुत गौरवान्वित महसूस कराएगी। हमें बचपन से स्वच्छता की आदत को अपनाना चाहिए और पूरे जीवन भर उनका पालन करना चाहिए।

एक व्यक्ति अच्छी आदत के साथ अपने बुरे विचारों और इच्छाओं को खत्म कर सकता है। घर या अपने आसपास में संक्रमण फैलने से बचाने ओर गंदगी के पूर्ण निपटान के लिए हमें ध्यान रखना चाहिए कि गंदगी को केवल कूड़ेदान में ही डालें।

साफ–सफाई केवल एक व्यक्ति की जिम्मेदारी नहीं है बल्कि यह घर, समाज, समुदाय और देश के हर नागरिक की जिम्मेदारी है। हमें इसके महत्व और फायदों को समझना चाहिए। हमें भारत को स्वच्छ रखने की कसम खानी चाहिए कि न तो हम खुद गंदगी करेंगे और न ही किसी को करने देंगे।

शहरी क्षेत्रों में स्वच्छ भारत मिशन का लक्ष्य हर नगर में ठोस कचरा प्रबंधन सहित लगभग सभी 1.04 करोड़ घरों को 2.6 लाख सार्वजनिक शौचालय, 2.5 लाख सामुदायिक शौचालय उपलब्ध कराना है। शहरी क्षेत्रों में स्वच्छता कार्यक्रम को पांच वर्षों के अंदर 2019 तक पूरा करने की योजना है।

वे सब कार्यक्रम, जिन्हें पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है, उनमें खुले में शौच की प्रवृत्ति को जड़ से हटाना, अस्वाथ्यकर शौचालयों को पानी से बहाये वाले शौचालयों में परिवर्तन, खुले हाथों से साफ–सफाई की प्रवृत्ति को हटाना, लोगों की सोच में परिवर्तन लाना और ठोस कचरा प्रबंधन करना शामिल है। अपने उद्देश्य की प्राप्ति तक भारत में इस मिशन की कार्यवाही निरंतर चलती रहनी चाहिए। ❑

सफलता के लिए सहयोग भी जरूरी

◈ t; ik.M नौवीं
बाल भवन पब्लिक स्कूल
मयूर विहार फेज–2, दिल्ली

एक कड़ा कानून बनना चाहिए जैसे कि सिंगापुर, यू.एस.ए. आदि जगह पर है। उनका कानून है कि एक गंदगी पर भारी जुर्माना। लोग आजकल नमकीन के पैकेट, बोटल आदि इधर-उधर रास्ते पर फेंक देते हैं और पूछो तो कहते हैं, आसपास कूड़ादान नहीं था। मैं चाहता हूं कि हर 10 मिनट के रास्ते पर एक कूड़ादान होना चाहिए।

Lवच्छ का मतलब होता है साफ–सुथरा। जहां गंदगी नहीं होगी, वहां बीमारी नहीं होगी और निरोगी काया ही देश की उन्नति में अहम् भूमिका निभाती है। कहते हैं 'स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन का विकास होता है', इसका अर्थ है कि अगर हम निरोगी रहेंगे तो हमारा मस्तिष्क अच्छी तरह और सकारात्मक कार्य करेगा देश की उन्नती के लिए सकारात्मक कार्य ही जरूरी है, इसीलिए हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने 'स्वच्छ भारत मिशन' शुरू किया।

सर्वप्रथम मैं आपको यह बताना चाहूंगा कि इस मिशन की शुरुआत किसने की, कब की, क्यों की और इसकी व्यापकता कहां से कहां तक है? इस मिशन को आगे बढ़ाने में किस–किस ने अहम् भूमिका निभाई है जिसमें एक विशेष नाम अणुव्रत का भी है।

LoPN Òkjr dh fn'kk e igy % हमारे देश में कड़े कानून न होने की वजह से लापरवाह लोगों ने हर जगह गंदगी मचाई थी जिससे विदेशी हमारा अपमान करते हैं। हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी सभी

देशों में भारत को उभारना चाहते हैं। इन सारी समस्याओं को देखकर उन्होंने 2 अक्टूबर, 2014 को एक राष्ट्रीय आंदोलन के रूप में 'स्वच्छ भारत मिशन' की शुरुआत की।

उनका यह मिशन है कि वह 2019 तक संपूर्ण भारत को स्वच्छ बनाकर महात्मा गांधी की 150वीं जयंती पर स्वच्छ भारत के रूप में सर्वश्रेष्ठ श्रद्धांजलि देंगे। पहले दिन मोदी जी ने स्वयं झाड़ू उठाई और देश भर में स्वच्छ भारत अभियान को एक जन आंदोलन बनाते हुए उन्होंने कहा कि लोगों को न स्वयं गंदगी फैलानी चाहिए और न किसी और को फैलाने देनी चाहिए।

स्वच्छ भारत मिशन के माध्यम से लोगों में जिम्मेदारी की भावना आई, देश भर में लोग सक्रिय रूप से स्वच्छ भारत अभियान में शामिल हुए। समाज के विभिन्न वर्गों के लोग सामने आए और सफाई के इस जन आंदोलन में शामिल हुए। सरकारी अधिकारियों से लेकर खिलाड़ी तक, उद्योगपतियों से लेकर आध्यात्मिक गुरुओं तक, बॉलीवुड अभिनेताओं से लेकर जवानों तक सभी इस पवित्र कार्य से जुड़े। देश भर में लाखों लोग दिन–प्रतिदिन सरकारी विभागों, एनजीओ और स्थानीय सामुदायिक केंद्रों के स्वच्छता कार्यक्रमों से जुड़ रहे हैं। इसी तरह पूरे देश में नाटकों और संगीत के माध्यम से सफाई के प्रति लोगों को जागरूक किया जा रहा है।

इस अभियान को सफल बनाने के लिए विश्वस्तर पर लोगों ने पहल की है। शिक्षक और स्कूल के छात्र इसमें पूर्ण उत्साह और उल्लास के साथ शामिल हो रहे हैं और स्चच्छ भारत अभियान को सफल बनाने का प्रयास कर रहे हैं। इस मिशन का उद्देश्य सभी ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों को कवर करना है ताकि दुनिया के सामने हम एक आदर्श देश का उदाहरण प्रस्तुत कर सके।

इस मिशन के कुछ प्रमुख उद्देश्य हैं–खुले में शौच समाप्त करना, अस्वास्थ्यकर शौचालयों को फ्लश शौचालयों में परिवर्तित करना, हाथ से मल की सफाई को रोकना, ठोस और तरल कचरे का पुनः उपयोग

आदि। इस मिशन की निरंतरता बनाए रखते हुए उत्तर प्रदेश के मुख्य मंत्री योगी आदित्यनाथ ने सभी आधिकारिक सरकारी इमारतों में सफाई सुनिश्चित करने के लिए पान, गुटका और तम्बाकू आदि पर प्रतिबंध लगा दिया है।

v.kor dh Òfedk % स्वच्छ भारत अभियान में अणुव्रत ने अहम् भूमिका निभाई है। सबसे पहले मैं आपको अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास, नई दिल्ली के बारे में कुछ बताना चाहूंगा। अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास एक महत्वपूर्ण संस्था है। यह पिछले अनेक वर्षों से राष्ट्रीस्तर पर आयोजित चित्रकला, निबंध एवं गीत गायन प्रतियोगिताओं का आयोजन कर रहा है। इन प्रतियोगिता से संपूर्ण भारत में बेहद ही सकारात्मक प्रतिफल मिलता रहा है। अणुव्रत की चर्चा आज हिंदुस्तान से लेकर विदेशों तक फैली हुई है। यह आंदोलन आचार्य तुलसी ने 1 मार्च, 1949 में शुरू किया। पिछले 67 सालों से अणुव्रत ने एक बहुत ही लंबी यात्रा तय की है। संसार के हालात और समस्याओं में काफी बदलाव आया है।

अणुव्रत का अर्थ है छोटे–छोटे संकल्प। अणुव्रत स्वस्थ समाज संरचना हेतु सूत्रीय आधार संहित है। अहिंसा, मानवीय एकता, सांप्रदायिक सौहार्द, प्रामाणिकता, साधन शुद्ध, व्यसन मुक्ति, पर्यावरण शुद्धि को केंद्र बनाकर कार्यरत है। इस प्रकार स्पष्ट है कि अणुव्रत वर्तमान का मूल्यांकन कर समस्या समाधान के सूत्र प्रस्तुत करता है।

v.kor dk LoPN fo|ky; vfÒ;ku % स्वच्छ भारत अभियान जहां पूरे देश में फैल चुका है वहीं आज के विद्यार्थी कल के भावी नागरिक होंगे यही सोच कर अणुव्रत न्यास ने एक मुहिम छेड़ी। उसने राष्ट्र स्तर पर सभी विद्यालयों में स्वच्छता मिशन को लेकर कई प्रतियोगिताएं आयोजित कीं जैसे गायन, निबंध, कला आदि के द्वारा बच्चों में भी सफाई अभियान को लेकर जागरूक करना।

अतः अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास इस तरह विभिन्न सामाजिक कार्यों को लेकर अनेक कार्य विद्यालयों में करता है, सचमुच यह सराहनीय है। इन प्रतियोगिताओं के माध्यम से हम बच्चे बहुत कुछ सीखते हैं।

इन प्रतियोगिताओं के माध्यम से बच्चे अपनी सोच और कला के दम से लोगों को जागरूक करते हैं। अणुव्रत न्यास प्रतिभाशाली बच्चों को पुरस्कृत भी करता है और उनके अच्छे लेखों को प्रकाशित भी करता है। इस प्रकार उन बच्चों में प्रतियोगिता की भावना के साथ स्वच्छता का भी विकास होता है। हम सभी बच्चों को इन प्रतियोगिताओं में भाग लेना चाहिए ताकि समाज के प्रति हमारा भी जो कर्तव्य है उसे हमें पूरा कर सकें। इस तरह हम कह सकते हैं कि 2019 तक भारत को स्वच्छ और हराभरा बनाने के लिए जहां नरेंद्र मोदी जी ने इसकी नींव रखी है, उसे हम मिलकर पूरा करेंगे।

भौतिक, मानसिक, सामाजिक और बौद्धिक कल्याण के लिए भारत के लोगों में स्वच्छ भारत का एहसास होना बेहद आवश्यक है। हम विश्वास के साथ कह सकते हैं कि अगर भारत की जनता प्रभाव रूप से इसका अनुसरण करेगी तो आने वाले चंद वर्षों में स्वच्छ भारत भगवान का निवास स्थल बन जाएगा। एक स्वस्थ देश और स्वस्थ समाज को जरूरत है कि उसके नागरिक स्वस्थ रहें तथा हर व्यवसाय में स्वच्छ हों।

एक विद्यार्थी होने के नाते मैं भी इस स्वच्छता मिशन में अपनी राय देना चाहता हूं। मोदी जी ने यह अभियान शुरू तो कर दिया पर कुछ नागरिक इसका सहयोग नहीं कर रहे हैं। कभी रास्ते पर कूड़ा फैलाते हैं तो कभी इधर–उधर थूकते हैं और कभी–कभी तो रास्ते पर पेशाब करते हैं।

एक कड़ा कानून बनना चाहिए जैसा कि सिंगापुर, यू.एस.ए. आदि जगह पर है। उनका कानून है कि एक गंदगी पर भारी जुर्माना। लोग आजकल नमकीन के पैकेट, बोटल आदि इधर–उधर रास्ते पर फेंक देते हैं और पूछो तो कहते हैं, आसपास कूड़ादान नहीं था। मैं चाहता हूं कि हर 10 मिनट के रास्ते पर एक कूडादान होना चाहिए। ❑

कोई कोना न बचे गंदगी के लिए

◈ f'kokuh flag नौवीं
नेशनल विक्टर पब्लिक स्कूल
आई.पी. एक्स. पटपड़गंज, दिल्ली

प्रधानमंत्री ने अपील की है कि सब स्वच्छ भारत मिशन से जुड़ें और अन्य लोगों को भी इससे जुड़ने को प्रेरित करें ताकि हमारा देश दुनिया का सबसे अच्छा और स्वच्छ देश बन सके। इस अभियान में लगभग 30 लाख स्कूलों और कॉलेजों के छात्रों और सरकारी कर्मचारियों ने भाग लिया।

'Lवच्छ भारत अभियान' को गंदगी रहित बनाने की एक ऐसी मुहिम और अभियान है जो राष्ट्रीय आंदोलन के रूप में भारत सरकार द्वारा देश की 4041 सांविधिक नगर की आधारभूत सरंचना, सड़कें और पैदल मार्ग की साफ–सफाई का लक्ष्य कर आरंभ किया गया है। भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने आधिकारिक रूप से इसकी शुरुआत 2 अक्टूबर, 2014 को गांधी जयंती के दिन नई दिल्ली के राजघाट पर की। इस अभियान के आरंभ के दिनों में प्रधानमंत्री मोदी ने खुद सड़क को साफ किया। यह अभी तक का सबसे बड़ा अभियान है जिसमें 30 लाख सरकारी कर्मचारियों के साथ स्कूल–कॉलेजों के बच्चों ने भी बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया।

इस अभियान की शुरुआत के दिन प्रधानमंत्री ने कला, खेल और साहित्य से जुड़ी 9 हस्तियों को नामित किया। अपने–अपने क्षेत्रों में इस मिशन को आगे बढ़ाने के लिये स्कूल और कॉलेजों ने भी अपने तरीके से कई सारे कार्यक्रम आयोजित कर इसमें भाग लिया। स्वच्छ भारत को राष्ट्र मिशन के रूप में आगे बढ़ाना है।

स्वच्छ भारत मिशन का लक्ष्य गरीबी रेखा से नीचे जीवन–यापन कर रहे सभी परिवारों को स्वास्थ्यप्रद शौचालय प्रदान करना है बेकार शौचालयों को अल्प लागत स्वास्थ्यप्रद शौचालयों में बदलना, हेण्ड पम्प उपलब्ध कराना, सुरक्षित नहाना, ठोस और द्रव कचरे की उचित व्यवस्था हो, शिक्षा और स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता हो, घरेलू और पर्यावरण संबंधी सफाई व्यवस्था आदि का इसका लक्ष्य है।

भारत सरकार द्वारा व्यक्तिगत स्वच्छता और पर्यावरणीय स्वच्छता को लेकर इसके पहले कई सारे जागरूकता कार्यक्रम, जैसे निर्मल भारत, स्वच्छता अभियान आदि प्रारंभ किये गये थे। लेकिन इस तरह के अभियान ज्यादा प्रभावी साबित नहीं हुए। इस अभियान का मुख्य लक्ष्य खुले में शौच की प्रवृत्ति को खत्म करना, हाथ से शौच की सफाई न करना, लोगों की सोच में बदलाव लाना, साफ–सफाई की सुविधाओं के प्रति प्राइवेट क्षेत्रों की भागीदारी को सुगम बनाना आदि है।

भारत के शहरी विकास तथा पेयजल और स्वच्छता मंत्रालय के तहत इस अभियान को ग्रामीण और शहरी क्षेत्र दोनों में लागू किया गया है। इसका उद्देश्य सफाई व्यवस्था की समस्या का समाधान निकालना है। भौतिक, मानसिक, सामाजिक और बौद्धिक कल्याण के लिए भारत के लोगों में इसका एहसास होना बेहद आवश्यक है। यह सही मायनों में भारत की सामाजिक स्थिति को बढ़ाना देने के लिए है जो हर तरफ स्वच्छता की सुविधा के निर्माण द्वारा पूरे भारत में बेहतर मल प्रबंधन करना है।

शहरी क्षेत्रों में स्वच्छ भारत मिशन का लक्ष्य हर नगर में ठोस कचरा प्रबंधन सहित सभी 1.04 करोड़ घरों को 2.6 लाख सार्वजनिक शौचालय, 2.5 लाख सामुदायिक शौचालय उपलब्ध कराना है। शहरी क्षेत्रों में स्वच्छता कार्यक्रम को पांच वर्षों के अंदर 2019 तक पूरा करने की योजना है। इसमें ठोस कचरा प्रबंधन की लागत लगभग 7,340 करोड़ है, 4,655 करोड़ रुपये घरेलू शौचालयों के लिये तथा 655 करोड़ रुपये सामुदायिक शौचालयों के लिए रखे गये हैं।

प्रधानमंत्री ने अपील की है कि सब स्वच्छ भारत मिशन से जुड़ें और अन्य लोगों को भी इससे जुड़ने को प्रेरित करें ताकि हमारा देश दुनिया का सबसे अच्छा और स्वच्छ देश बन सके। इस अभियान में लगभग 30 लाख स्कूलों और कॉलेजों के छात्रों और सरकारी कर्मचारियों ने भाग लिया। उन्होंने यह भी कहा कि हर भारतीय इसे एक चुनौती के रूप में ले और इसे स्वच्छ व सफल अभियान बनाने के लिये पूरा प्रयास करे।

नौ लोगों की श्रृंखला पेड़ की शाखाओं की तरह है। उन्होंने आम जनता को इससे जुड़ने के लिये अनुरोध किया और कहा कि वे सफाई की तस्वीरें सोशल मीडिया, जैसे फेसबुक, ट्विटर व अन्य वेवसाइट पर डालें और अन्य लोगों को भी इससे जुड़ने के लिये प्रेरित करें। इस तरह भारत एक स्वच्छ देश हो सकता है।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने भारत की स्वतंत्रता से पहले अपने समय के दौरान 'स्वच्छता आजादी से अधिक महत्वपूर्ण है' कहा था। वे भारत की बुरे और गंदी स्थिति से अच्छी तरह परिचित थे। उन्होंने भारत के लोगों को साफ–सफाई और स्वच्छता के बारे और इससे अपने दैनिक जीवन में शामिल करने पर बहुत जोर दिया था। भारत की आजादी के कई वर्षों के बाद, सफाई के प्रभावी अभियान के रूप में इसे आरंभ किया गया है और सरकार लोगों की सक्रिय भागीदारी चाहती है।

यहां नीचे कुछ बिन्दु दिए जा रहे है जो स्वच्छ अभियान की आवश्यकता को दिखाते हैं।

- यह बेहद जरूरी है कि हर घर में शौचालय हो, साथ ही, खुले में शौच की प्रवृत्ति को भी खत्म करने की आवश्यकता है।
- अस्वास्थ्यकर शौचालय को पानी से बहाने वाले शौचालयों में बदलने की आवश्यकता है।
- हाथ के द्वारा की जानेवाली साफ–सफाई की व्यवस्था का जड़ से खात्मा जरूरी है।

- नगर निगम के कचरे का पुनर्चक्रण और दुबारा इस्तेमाल, सुरक्षित समापन, वैज्ञानिक तरीके से मल प्रबंधन को लागू करना।
- खुद के स्वास्थ्य के प्रति भारत के लोगों की सोच और स्वभाव में परिवर्तन लाना और अस्वास्थ्यकर साफ–सफाई की प्रक्रियों का पालन करना।
- भारत को स्वच्छ और हरियाली युक्त बनाना।
- ग्रामीण क्षेत्रों में जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाना।
- पूरे भारत को साफ–सफाई की सुविधा को विकसित करने के लिये निजी क्षेत्रों की हिस्सेदारी बढ़ाना।
- स्वास्थ्य शिक्षा कार्यक्रमों के माध्यम से समुदायों और पंचायती राज संस्थानों को निरंतर साफ–सफाई के प्रति जागरूक करना।
- इसमें काम करने वाले लोगों को स्थानीय स्तर पर कचरे के निष्पादन का नियंत्रण करना, खाका तैयार करने के लिये मदद करना।

सरकार की कचरे को जैविक खाद और इस्तेमाल करने लायक ऊर्जा में परिवर्तित करने की भी योजना है। इसमें ग्राम पंचायत, जिला परिषद और पंचायत समिति की अच्छी भागीदारी है।

स्कूल क्षेत्र में लक्ष्य सफाई, महान व्यक्तियों के योगदान पर भाषण, निबंध लेखन प्रतियोगिता, कला, फिल्म, चर्चा, चित्रकारी तथा स्वास्थ्य और स्वच्छता पर नाटक मंचन आदि है। इसके अलावा सप्ताह में दो बार साफ–सफाई अभियान चलाया जाना है जिसमें शिक्षक, विद्यार्थी और माता–पिता सभी हिस्सा लेंगे। कोई कोना न बचे गंदगी के लिए।

इस तरह हम कह सकते हैं कि 2019 तक भारत को स्वच्छ और हरा–भरा बनाने के लिये स्वच्छ भारत अभियान एक योग्य कदम है। हमें भी अपने जीवन में स्वच्छता को जारी रख उसे बनाये रखने की आवश्यकता है। ❑

ठहर न पाएं कदम स्वच्छता के

◈ fr'kk छठी
राष्ट्रीय शक्ति विद्यालय
हस्तसाल, उत्तमनगर, दिल्ली

भारत के स्वच्छ भारत अभियान को लगातार चलाने की आवश्यकता है जब तक कि लक्ष्य प्राप्त न हो जाये। भारत के लोगों के लिए यह बहुत ही आवश्यक है कि वे भावनात्मक, शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और बौद्धिक रूप से अच्छा महसूस करें। वास्तविक मायने में भारत में रहन-सहन की स्थिति अग्रिम बनाना जरूरी है जो कि स्वच्छता लाकर शुरू की जा सकती है।

'Lवच्छ भारत अभियान' को क्लीन इंडिया ड्राइव या स्वच्छ भारत अभियान भी कहा जाता है। यह एक राष्ट्रीय स्तर का अभियान है जो भारत सरकार द्वारा सभी पिछड़े वैधानिक कस्बों को साफ करने के लिए कवर करने के लिए चलाया जा रहा है। इस अभियान में शौचालयों का निर्माण करवाना, ग्रामीण इलाकों में स्वच्छता कार्यक्रमों को बढ़ावा देना, सड़कों की सफाई करना और बुनियादी ढांचे को बदलना शामिल है। यह अभियान आधिकारिक तौर पर प्रधानमंत्री नरेद्र मोदी ने 2 अक्टूबर, 2014 में महात्मा गांधी की 145वीं जयंती पर राजघाट, नई दिल्ली में शुरू किया था।

भारत के स्वच्छ भारत अभियान को लगातार चलाने की आवश्यकता है जब तक कि लक्ष्य प्राप्त न हो जाये। भारत के लोगों के लिए यह बहुत ही आवश्यक है कि वे भावनात्मक, शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और बौद्धिक रूप से अच्छा महसूस करें। वास्तविक मायने में भारत में रहन–सहन की स्थिति अग्रिम बनाना जरूरी है जो कि स्वच्छता लाकर शुरू की जा सकती है।

भारत में खुले शौच को खत्म करना और साथ ही हर किसी को शौचालय सुविधा उपलब्ध करना वास्तव में बहुत ही आवश्यक है। भारत में शौचालयों को फ्लशिंग शौचालय में परिवर्तित करने की आवश्यकता है। मैनुअल स्केवेजिंग सिस्टम को समाप्त करना आवश्यक है।

सभी बर्बाद चीजें वैज्ञानिक प्रक्रियाओं द्वारा ठोस अपशिष्टों को रीसाइक्लिस के माध्यम से पुनः उपयोग लायक बनाना आवश्यक है। इसके लिए अपशिष्ट प्रबंधन को लागू करना चाहिए। भारतीय लोगों में व्यावहारिक बदलाव के लिए व्यक्तिगत स्वच्छता और स्वास्थ्य स्वच्छता के तरीकों का अभ्यास किया जाना चाहिए।

इसका उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में आम जनता के रहने के लिए वैश्विक जागरूकता पैदा करना है और इसे सार्वजनिक स्वास्थ्य से जोड़ने के लिए बनाया गया है। यह भारत में स्वच्छता की सुविधा विकसित करने के लिए शुरू किया गया है। यह वास्तव में बापू का सपना सच साबित करने के लिए है।

ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार करना आवश्यक है। शहरी क्षेत्रों के स्वच्छ भारत मिशन का लक्ष्य लगभग 04 करोड़ परिवारों को और 216 लाख सार्वजनिक शौचालय और साथ ही साथ 215 लाख सामुदायिक शौचालय को प्रत्येक शहर में ठोस अपशिष्ट प्रबंधन के साथ उपलब्ध कराने का।

आवासीय क्षेत्रों में सामुदायिक शौचालय का निर्माण करने की योजना बनाई गई है जहां व्यक्तिगत घरों के शौचालय की उपलब्धता मुश्किल है। बस अड्डों, स्टेशनों, पर्यटन स्थलों, रेलवे, बाजार आदि सहित निर्दिष्ट स्थानों पर सार्वजनिक शौचालय बनाये जा रहे हैं।

शहरी क्षेत्रों में स्वच्छता कार्यक्रम में लगभग 4,401 कस्बों को 2019 तक पांच वर्षों में पूरा करने की योजना बनाई गई है। कार्यक्रमों की लागत ठोस कचरा प्रबधंन पर 7,366 करोड़ रुपये, सार्वजनिक जागरूकता पर 1,828 करोड़, सामुदायिक शौचालय 6.55 करोड़ रुपये, व्यक्तिगत घरेलू शौचालय पर 4165 करोड़ रुपये की राशि निर्धारित की गयी है।

कार्यक्रम, जिन्हें पूरा करने के लिए लक्षित किया गया है, वे हैं खुले में शौचालयों को पूरी तरह से हटाना, गंदे शौचालयों को फ्लश शौचालयों में परिवर्तित करना, मैनुअल स्केवेसिंग को समाप्त करना, सार्वजनिक रूप से ठोस अपशिष्ट प्रबधंन लाना आदि।

इस अभियान का जीवन का स्तर बढ़ाने के लिए एक बड़ी जिम्मेदारी के रूप में हर एक को अनुकरण करना चाहिए। हमें अपनी व्यक्तिगत स्वच्छता, पालतू जानवरों की स्वच्छता, पर्यावरण की स्वच्छता, अपने आसपास की स्वच्छता और कार्यस्थल की स्वच्छता आदि करनी चाहिए। हमें पेड़ों को नहीं काटना चाहिये और पर्यावरण को स्वच्छ बनाए रखने के लिए पेड़ लगाने चाहिए।

यह कोई बाध्यकारी कार्य नहीं है लेकिन हमें इसे शांतिपूर्ण तरीके से करना चाहिए। यह हमें मानसिक, शारीरिक, सामाजिक और बौद्धिक रूप से स्वस्थ रखता है। सभी के साथ मिलकर लिया गया कदम एक बड़े कदम के रूप में परिवर्तित हो सकता है। ❑

> *यह हमारे देश की कड़वी सच्चाई है कि स्वच्छता और धर्मपरायणता केवल धार्मिक गतिविधियों और रसोई तक ही सीमित हैं। हम भारतीय अपने हर तरफ की गंदगी के लिए गंभीर नहीं, कहीं भी कोई गंदगी का ढेर देख सकता है। अपने आसपास के वातावरण को साफ और स्वच्छ रखना व्यवहार में ही नहीं है।*

साफ–सुथरा हो देश हमारा

◈ **'kkYoh** नौवीं
भिवानी पब्लिक स्कूल
भिवानी, हरियाणा

Òkरत की एक प्राचीन सभ्यता है। इसे एक पवित्र राष्ट्र माना जाता है, इसके लोग बहुत धार्मिक है। भारत में विभिन्न धर्मों के लोग रहते हैं। हिंदू, मुस्लिम, ईसाई, सिक्ख, पारसी, जैन आदि और वे अपने धर्मों का पूरी निष्ठा से पालन करते हैं।

यह हमारे देश की कड़वी सच्चाई है कि स्वच्छता और धर्मपरायणता केवल धार्मिक गतिविधियों और रसोई तक ही सीमित हैं। हम भारतीय अपने हर तरफ की गंदगी के लिए गंभीर नहीं, कहीं भी कोई गंदगी का ढेर देख सकता है। अपने आसपास के वातावरण को साफ और स्वच्छ रखना व्यवहार में ही नहीं है।

तीन वर्ष पहले नई सरकार सत्ता में आई और उसकी मुख्य प्राथमिकता भारत को स्वच्छ करने में है। इसी लक्ष्य के लिए सरकार ने एक अभियान की शुरुआत की जिसका नाम 'स्वच्छ भारत अभियान'।

LoPN Òkjr vknkyu % भारत को स्वच्छ बनाने के लक्ष्य के साथ नई दिल्ली के राजघाट पर 2 अक्टूबर, 2014 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के द्वारा इस अभियान की शुरुआत हुई। इसका लक्ष्य है 2 अक्टूबर, 2019 तक हर परिवार को शौचालय सहित स्वच्छता सुविधा उपलब्ध कराना, ठोस और द्रव अपशिष्ट निपटान व्यवस्था, गांव में सफाई और सुरक्षित तथा पर्याप्त मात्रा में पीने का पानी उपलब्ध हो। यह भारत के राष्ट्रपिता को उनके 150वें जन्मदिवस पर सबसे उपयुक्त श्रद्धांजलि होगी। यह बहुत महत्वपूर्ण है कि इस अभियान को सफल बनाने के लिए प्रधानमंत्री स्वयं अग्रसक्रिय भूमिका निभा रहे हैं; राजघाट पर उन्होंने खुद सड़कों को साफ कर इस मुहिम की शुरुआत की।

'kgjh {k=k dk fy, % इस मिशन का उद्देश्य 1.04 करोड़ परिवारों को लक्षित करते हुए 2.5 लाख सामुदायिक शौचालय, 2.6 लाख सार्वजनिक शौचालय और प्रत्येक शहर में एक ठोस अपशिष्ट प्रबंधन की सुविधा प्रदान करना है। इस कार्यक्रम के तहत आवासीय क्षेत्रों में जहां व्यक्तिगत घरेलू शौचालयों का निर्माण करना है वहीं पर्यटन स्थलों, बाजारों, बस अड्डों, रेलवे स्टेशनों जैसे प्रमुख स्थानों पर भी सार्वजनिक शौचालय का निर्माण किया जाएगा। यह कार्यक्रम पांच साल की अवधि में 4401 शहरों में लागू किया जाएगा।

इस कार्यक्रम में खुले में शौच, अस्वच्छ शौचालयों को फ्लश शौचालय में परिवर्तित करने, मैला ढ़ोने की प्रथा का उन्मूलन करने, नगरपालिका ठोस अपशिष्ट प्रबंधन और स्वस्थ एवं स्वच्छता से जुड़ी प्रथाओं के संबंध में लोगों के व्यवहार में परिवर्तन लाना आदि शामिल है।

xkeh.k {k= dk fy, % निर्मल भारत अभियान कार्यक्रम भारत सरकार द्वारा चलाया जा रहा ग्रामीण क्षेत्र में लोगों के लिए मांग आधारित एवं जन केंद्रित अभियान है, जिसमें लोगों की स्वच्छता सम्बंधी आदतों को बेहतर बनाना, स्व सुविधाओं की मांग उत्पन्न करना और स्वच्छता सुविधाओं को उपलब्ध करना, जिससे ग्रामीणों के जीवन स्तर को बेहतर बनाया जा सके।

vfÒ;ku dk mnn';; % 2 अक्टूबर, 2014 तक 'स्वच्छ भारत' के मिशन और दृष्टि को पूरा करने के लिए सरकार द्वारा कई सारे लक्ष्यों

की प्राप्ति के लिए स्वच्छ भारत अभियान की शुरुआत की गई जो कि महात्मा गांधी का 150वां जन्मदिवस होगा। सरकार द्वारा यह घोषणा की गयी है कि यह अभियान राजनीति के ऊपर है और देशभक्ति से प्रेरित है। स्वच्छ भारत अभियान के निम्न कुछ महत्वपूर्ण उद्देश्य हैं।

- भारत में खुले में मलत्याग की व्यवस्था का जड़ से उन्मूलन।
- अस्वास्थ्यकर शौचालयों को बहाने वाले शौचालयों में बदलना।
- हाथों से मल की सफाई करने की व्यवस्था को हटाना।
- लोगों के व्यवहार में बदलाव कर अच्छे स्वास्थ्य के विषय में जागरूक करना।
- जन–जागरूकता पैदा करने के लिए सार्वजनिक स्वास्थ्य और साफ–सफाई के कार्यक्रम से लोगों को जोड़ना।
- साफ–सफाई से संबंधित सभी व्यवस्था को नियंत्रित, डिजाइन और संचालन करने के लिए शहरी स्थानीय निकाय को मजबूत बनाना।

dkjikjV Òkjr % प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के बुलावे पर ध्यान देते हुए कॉरपोरेट भारत ने भी इस अभियान को सफल बनाने के लिए उत्साह के साथ कदम आगे बढ़ाए। अनिवार्य कॉरपोरेट सामाजिक जिम्मेदारी के तहत स्वच्छता गतिविधियों में सार्वजनिक और निजी कंपनियों को जोड़ा जा रहा है जो कि कंपनी अधिनियम 2013 के तहत कानूनी जरूरत है। सीएसआर एक क्रियाविधि है जिसके द्वारा कंपनियां पूरे समाज के भले कार्यों में पूंजी लगाती है। इसलिए न केवल सरकारी और निजी शख्स, बल्कि कॉरपोरेट क्षेत्रक भी भारत को स्वच्छ बनाने में अपनी भूमिका निभा रहे हैं।

इस तरह हम कह सकते हैं कि 2019 तक भारत को स्वच्छ और हराभरा बनाने के लिए यह अभियान 'एक स्वागत योग्य कदम है। हम विश्वास के साथ कह सकते हैं कि अगर भारत की जनता द्वारा प्रभावी रूप से इसका अनुसरण किया गया तो आने वाले चंद वर्षों में स्वच्छ भारत अभियान से पूरा देश भगवान का निवास स्थल सा बन जाएगा। ❑

नामी हस्तियां भी बनीं भागीदार

◈ **egd flxy** आठवीं
के.एम.पब्लिक स्कूल
हांसीगेट, भिवानी, हरियाणा

कई सारे दूसरे कार्यक्रम, जैसे स्वच्छ भारत रन, स्वच्छ भारत एप्स, रियल टाईम मॉनिटरिंग सिस्टम, स्वच्छ भारत लघु फिल्म, स्वच्छ भारत नेपाल अभियान आदि मिशन के उद्देश्य को सक्रियता से समर्थन करने के लिए लागू किये गये।

^Lवच्छ भारत अभियान' को स्वच्छ भारत मिशन और स्वच्छता अभियान भी कहा जाता है। यह एक राष्ट्रीय स्तर का अभियान है। इस अभियान में शौचालयों का निर्माण, ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छता कार्यक्रमों को बढ़ावा देना, गलियों व सड़कों की सफाई, देश के बुनियादी ढांचे को बदलना आदि शामिल हैं। इस अभियान को आधिकारिक तौर पर राजघाट, नई दिल्ली में दो अक्टूबर, 2014 को महात्मा गांधी की 145वीं जयंती पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा शुरु किया गया था।

'स्वच्छ भारत अभियान' भारत को गंदगी रहित बनाने की एक ऐसा अभियान है जो राष्ट्रीय आंदोलन के रूप में सरकार द्वारा देश के 4,041 सांविधिक नगर की आधारभूत संरचना सड़कें और पैदल मार्ग की सफाई का लक्ष्य रखकर आरंभ किया गया है। इस अभियान के आरंभ के दौरान प्रधानमंत्री मोदी ने खुद सड़क को साफ किया। यह अभी तक का सबसे बड़ा सफाई अभियान है जिसमें 30 लाख सरकारी कर्मचारियों के साथ स्कूल–कॉलेजों के बच्चों ने भी बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया।

इस अभियान की शुरुआत के दिन प्रधानमंत्री ने कला, खेल और साहित्य से जुड़ी 9 हस्तियों को नामित किया। स्कूल–कॉलेजों ने भी अपने तरीकों से कई सारे कार्यक्रम आयोजित कर इसमें भाग लिया। प्रधानमंत्री ने उन नौ नामित लोगों से आग्रह किया कि वे अपनी तरफ से नौ व्यक्ति चुनें जो भारत स्वच्छता अभियान में पूरी इच्छाशक्ति से भाग लें और इस तरह एक पूरी मानव श्रृंखला का निर्माण हो जिसमें देश के हर कोने से हर भारतीय शामिल हों और इसे राष्ट्र मिशन के रूप में आगे बढ़ायें।

किसी पेड़ की शाखाओं की तरह ही इस मिशन का भी मकसद भारत के हर एक व्यक्ति को जोड़ना है, चाहे वो किसी भी व्यवसाय से हो। स्वच्छ भारत मिशन का लक्ष्य गरीबी रेखा से नीचे जीवन–यापन कर रहे सभी परिवारों को स्वास्थ्यप्रद शौचालयों प्रदान करना, बेकार शौचालय को अल्प लागत स्वास्थ्यप्रद शौचालयों में बदलना, हैण्ड पंप उपलब्ध कराना, सुरक्षित नहाना, स्वच्छता संबंधी बाजार, निकास नली, ठोस और द्रव कचरे की उचित व्यवस्था हो, शिक्षा और स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता हो, घरेलू और पर्यावरण संबंधी सफाई व्यवस्था आदि है।

भारत सरकार द्वारा व्यक्तिगत स्वच्छता और पर्यावरणीय स्वच्छता को लेकर इसके पहले कई सारे जागरूकता कार्यक्रम (जैसे पूर्ण स्वच्छता अभियान, निर्मल भारत अभियान आदि) प्रारंभ किये गये थे लेकिन इस तरह के अभियान ज्यादा प्रभावी साबित नहीं हुए।

इस अभियान का मुख्य लक्ष्य खुले में शौच की प्रवृत्ति को खत्म करना, अस्वास्थ्यकर शौचालयों को बहाने वाले शौचालयों में तब्दील करना, हाथ से शौच की सफाई न करना, ठोस और द्रव कचरे को अच्छी तरह से निपटान कर देना, साफ–सफाई की लेकर लोगों को जागरूक करना, लोगों के सोच में बदलाव लाना, साफ–सफाई की सुविधाओं के प्रति प्राइवेट क्षेत्रों की भागीदारी को सुगम बनाना आदि है।

इस मिशन में प्रधानमंत्री द्वारा नामित किये गये नौ सदस्य थे सलमान खान, अनिल अंबानी, कमल हासन, प्रियंका चोपड़ा, बाबा रामदेव और प्रसिद्ध टीवी धारावाहिक 'तारक मेहता का उल्टा चश्मा' की पूरी टीम।

भारतीय फिल्म अभिनेता आमिर खान को इसके शुभारंभ के मौके पर आमंत्रित किया गया था। इस अभियान के लिए प्रधानमंत्री द्वारा कई ब्रैंड एम्बेस्डर्स का भी चुनाव किया गया था जिनको स्वच्छ भारत अभियान को अलग–अलग क्षेत्रों में प्रारंभ और प्रोत्साहित करने की जिम्मेदारी थी।

उत्तरप्रदेश के सरकारी भवनों में सफाई सुनिश्चित करने के लिए उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री द्वारा चबाने वाले पान, गुटका और अन्य तम्बाकू उत्पादों पर प्रतिबंध लगा दिया गया।

कई सारे दूसरे कार्यक्रम, जैसे स्वच्छ भारत रन, स्वच्छ भारत एप्स, रियल टाईम मॉनिटरिंग सिस्टम, स्वच्छ भारत लघु फिल्म, स्वच्छ भारत नेपाल अभियान आदि मिशन के उद्देश्य को सक्रियता से समर्थन करने के लिए लागू किये गये। ❑

अपने उद्देश्य की प्राप्ति तक भारत में इस मिशन की कार्यवाही निरंतर चलती रहनी चाहिये। भौतिक, मानसिक, सामाजिक और बौद्धिक कल्याण के लिये भारत के लोगों में इसका अहसास होना बेहद आवश्यक है। यह सही मायने में भारत की सामाजिक स्थिति को बढ़ावा देने के लिये है जो हर तरफ स्वच्छता लाने से शुरू किया जा सकता है।

बापू के सपने को करें साकार

◈ okx.k ufnuh vfuy नौवीं
श्री शिवाजीराव नारायणराव
नागवडे विद्यालय
वांगदरी, अहमदनगर, महाराष्ट्र

स्वच्छ भारत को स्वच्छ भारत मिशन और स्वच्छता अभियान भी कहा जाता है। यह एक राष्ट्रीय स्तर का अभियान है और भारत सरकार द्वारा चलाया जा रह है जो कि शहरों और गांवों की सफाई के लिए आरंभ किया गया है।

इस अभियान में शौचालयों का निर्माण, ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छता कार्यक्रमों को बढ़ावा देना, गलियों व सड़कों की सफाई, देश के बुनियादी ढांचे को बदलना आदि शामिल हैं। इस अभियान को आधिकारिक तौर पर राजघाट, नई दिल्ली में 2 अक्टूबर, 2014 को महात्मा गांधी की 145वीं जयंती पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा शुरू किया गया था।

'स्वच्छ भारत अभियान' भारत सरकार द्वारा चलाया गया एक स्वच्छता मिशन है। सरकार ने 2 अक्टूबर, 2019 तक भारत को स्वच्छ भारत बनाने का उद्देश्य रखा है जो कि महात्मा गांधी की 150वीं जयंती होगी। यह एक राजनीति मुक्त अभियान है और देशभक्ति से प्रेरित है। यह प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक जिम्मेदारी है और इस देश को

स्वच्छ देश बनाने के लिए हर भारतीय नागरिक की भागीदारी की आवश्यकता है।

इसी अभियान को सफल बनाने के लिए विश्व स्तर पर लोगों ने पहल की है। शिक्षक और स्कूल के छात्र इसमें पूर्ण उत्साह और उल्लास के साथ शामिल हो रहे हैं और 'स्वच्छ भारत अभियान' को सफल बनाने का प्रयास कर रहे हैं। इसके अंतर्गत उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने एक और स्वच्छता पहल की शुरुआत की है। उन्होंने उत्तरप्रदेश के सभी सरकारी कार्यालयों में चबाने वाले पान, गुटखा और अन्य तम्बाकू उत्पादों पर प्रतिबंद लगा दिया है।

स्वच्छ भारत अभियान की शुरुआत सरकार द्वारा देश को स्वच्छता के प्रतीक के रूप में पेश करना है। स्वच्छ भारत का सपना महात्मा गांधी के द्वारा देखा गया था जिसके संदर्भ में गांधीजी ने कहा कि स्वच्छता स्वतंत्रता से ज्याद जरूरी है। उनके अपने समय में वह देश की गरीबी और गंदगी से अच्छे से अवगत थे। इसी वजह से उन्होंने अपने सपनों को पाने के लिये कई सारे प्रयास किये लेकिन सफल नहीं हो सके।

जैसा कि उन्होंने स्वच्छ भारत का सपना देखा था, उन्होंने कहा कि निर्मलता और स्वच्छता दोनों ही स्वस्थ और शांतिपूर्ण जीवनपूर्ण जीवन का अनिवार्य भाग हैं। दुर्भाग्य से भारत आजादी के 69 साल बाद भी इन दोनों लक्ष्यों से काफी पीछे है। अगर आंकड़ों की बात करें तो केवल कुछ प्रतिशत लोगों के घरों में शौचालय हैं, इसीलिये भारत सरकार पूरी गंभीरता से बापू की इस सोच को हकीकत का रूप देने के लिये देश के सभी लोगों को इस मिशन से जोड़ने का प्रयास कर रही है जिससे विश्व में यह सफल हो सके।

इस मिशन को अपने प्रारंभ की तिथि से बापू की 150वीं पुण्यतिथि 2 अक्टूबर, 2019 तक पूरा करने का लक्ष्य है। इस अभियान को सफल बनाने के लिये सरकार ने सभी लोगों से निवेदन किया कि वे अपने आसपास और दूसरी जगहों पर साल में सिर्फ 100 घंटे सफाई के लिये दें। इसको लागू करने के लिये बहुत सारी नीतियां और प्रक्रियाएं हैं

जिसमें तीन चरण हैं– योजना चरण, कार्यान्वयन चरण और निरंतरता चरण।

अपने उद्देश्य की प्राप्ति तक भारत में इस मिशन की कार्यवाही निरंतर चलती रहनी चाहिये। भौतिक, मानसिक, सामाजिक और बौद्धिक कल्याण के लिये भारत के लोगों में इसका अहसास होना बेहद आवश्यक है। यह सही मायने में भारत की सामाजिक स्थिति को बढ़ावा देने के लिये है जो हर तरफ स्वच्छता लाने से शुरू किया जा सकता है। यहां नीचे कुछ बिंदु उल्लिखित किये जा रहे हैं जो स्वच्छ भारत अभियान की आवश्यकता को दिखाते हैं।

- यह बेहद जरूरी है कि भारत के हर घर में शौचालय हों, साथ ही खुले में शौच की प्रवृत्ति को भी खत्म करने की आवश्यकता है।
- अस्वास्थ्यकर शौचालय को पानी से बहाने वाले शौचालय से बदलने की आवश्यकता है।
- हाथ के द्वारा की जाने वाली साफ–सफाई की व्यवस्था का जड़ से खात्मा जरूरी है।
- नगर निगम के कचरे का पुनर्चक्रण और दुबारा इस्तेमाल, सुरक्षित समापन, वैज्ञानिक तरीके से मल प्रबंधन को लागू करना।
- खुद के स्वास्थ्य के प्रति भारत के लोगों की सोच और स्वभाव में परिवर्तन लाना और स्वास्थ्यकर साफ–सफाई की प्रक्रियों का पालन करना।
- पूरे भारत में साफ–सफाई की सुविधा को विकसित करने के लिये निजी क्षेत्रों की हिस्सेदारी बढ़ाना।
- भारत को स्वच्छ और हरियालीयुक्त बनाना।
- ग्रामीण क्षेत्रों में जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाना।

वास्तव में बापू के सपनों को सच करने के लिये यह सब करना आवश्यक है। ❑

देश स्वच्छ हो अपना

◈ ekuoh vjkMk आठवीं
भिवानी पब्लिक स्कूल
भिवानी, हरियाणा

हमें समझना चाहिए कि सार्वजनिक स्थान भी अपने हैं और उन्हें गंदा करना हमारे लिए शर्म की बात है। अगर फिर भी हम उन्हें गंदा करते हैं तो खुद ही बीमारियों को समीप आने दे रहे हैं। अणुव्रत को स्थापित करने वाले आचार्य तुलसी ने हमेशा भारत का अच्छा सोचा व उसे साफ, नशामुक्त, स्वस्थ, सुंदर आदि बनाने के निरंतर प्रयास करते रहे।

'Lवच्छ भारत अभियान' माननीय प्रधानमंत्री द्वारा चलाया गया भारत सरकार का एक सफाई अभियान है। यह एक राष्ट्रीय स्तर का अभियान है। यह अभियान 2 अक्टूबर, 2014 को महात्मा गांधी की 145वीं जयंती पर शुरू किया गया था। भारत सरकार ने 2 अक्टूबर, 2019 तक भारत को स्वच्छ भारत बनाने का उद्देश्य रखा है। उस समय महात्मा गांधी की 150वीं जयंती होगी।

इस अभियान में शौचालयों का निर्माण, ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छता को बढ़ावा देना, गलियों व सड़कों की सफाई, देश के बुनियादी ढ़ाचे को बदलना आदि शामिल है। इसमें बच्चे, बूढ़े, युवकों आदि ने योगदान दिया। अणुव्रत का भी स्वच्छता अभियान में बहुत योगदान रहा है।

स्वच्छ जीवन जीने के लिए स्वच्छता का विशेष महत्व है। स्वच्छता अपनाने से व्यक्ति रोग मुक्त रहता है और एक स्वस्थ राष्ट्र निर्माण में अपना महत्वपूर्ण योगदान देता है। स्वच्छता और सफाई के बिना हम ठीक तरह जी नहीं सकते हैं। यह धूल सड़कों से उड़कर घरों में आ

जाती है। अगर हम घर को साफ करते हैं तो मच्छर–मक्खी, कीड़े आदि हमें काफी नुकसान पहुंचा नहीं पाएंगे।

हमें घर के साथ–साथ अपने घर के आसपास की सफाई रखनी चाहिए क्योंकि अगर हर कोई अपने घर के आसपास की सफाई रखेगा तो पूरा शहर साफ हो जाएगा। सड़क पर चलते हुए अगर आसपास कोई डिब्बा या पॉलिथीन बैग मिलता है तो उसे कचरे के डब्बे में डाल देना चाहिए। अतः स्वच्छता का हमारे जीवन में बहुत महत्व है और हर व्यक्ति को इस आदत को अपनाना अति आवश्यक है। तभी हम एक स्वच्छ व स्वस्थ राष्ट्र की कल्पना कर पाएंगे और गांधी जी के सपने को साकार कर पाएंगे।

v.kor dk ;xnku % स्वच्छता अभियान में अणुव्रत का बहुत योगदान है। गंदगी मानव जीवन में तबाही लाने का काम करती है। आज नहीं हो कल गंदगी के बुरे परिणाम व्यक्ति के सामने आने ही होते हैं। अणुव्रत ने गंदगी के दुष्परिणामों से लोगों को अवगत कराने तथा स्वस्थ व स्वच्छ भारत के निर्माण के लिए प्रेरित किया। गंदगी स्वास्थ्य के लिए बहुत नुकसान देती है।

इससे डायरिया, टॉयफाईड, मलेरिया, फूड पाइजनिंग आदि कई बीमारियां हो सकती हैं। अणुव्रत ने विद्यालय–विद्यालय जाकर वहां सफाई रखने के लिए कहा। खुले में शौच करते देख उसे रोकने के लिए उन्हें प्रेरित किया और उन्हें गंदगी न करने की सीख दी क्योंकि बचपन में सीखी गई अच्छी आदतें जीवन भर साथ चलती हैं।

अणुव्रत न्यास ने स्वच्छता के लिए कई रैलियां निकालीं। इनका स्वच्छता में बहुत योगदान रहा। बच्चों के साथ–साथ लोगों को सफाई रखने के लिए कहा। दूर–दूर तक जाकर वहां सफाई रखने के लिए कहते हैं। हमें भी अपने घर के आसपास की सफाई रखनी चाहिए। अणुव्रत कार्यकर्ताओं ने खाली स्थानों में पानी होने से मना किया। इसलिए अपने आसपास पानी नहीं खड़ा होना चाहिए तथा कूलर का पानी भी हफ्ते में एक बार जरूर बदलना चाहिए।

लोगों को स्वच्छता के प्रति जागरूक करने के लिए अणुव्रत के बहुत प्रयास रहे। अणुव्रत के अनुसार सभी लोगों की स्वच्छता में भागीदारी अति आवश्यक है क्योंकि किसी एक के चाहने से कुछ नहीं होता। राष्ट्र के सभी लोगों का इसमें भाग लेना बहुत जरूरी है। इसके लिए सार्वजनिक स्थानों को अपना मानना बहुत जरूरी है।

अक्सर देखा जाता है कि हम रेलवे स्टेशन, पार्क, हवाई अड्डा आदि स्थानों पर पूरी आजादी के साथ वहां खाने–पीने की चीजें खरीदकर कचरें को इधर–उधर फेंक देते हैं। ऐसा करना बहुत गलत है। अगर हम उसे अपना स्थान मानें तो शायद हम ऐसा न करते।

हमें समझना चाहिए कि सार्वजनिक स्थान भी अपने हैं और उन्हें गंदा करना हमारे लिए शर्म की बात है। अगर फिर भी हम उन्हें गंदा करते हैं तो खुद ही बीमारियों को समीप आने दे रहे हैं। अणुव्रत को स्थापित करने वाले आचार्य तुलसी ने हमेशा भारत का अच्छा सोचा। वे उसे साफ, नशा–मुक्त, स्वस्थ, सुंदर आदि बनाने के निरतर प्रयास करते रहे। वे गांधी जी के सपने साकार करना चाहते थे, अतः हमें भी उनके इस लक्ष्य को पूरा करने में उनकी मदद करनी चाहिए। ❑

स्वच्छ भारत बनाने में अणुव्रत पीछे नहीं

स्वच्छ भारत के निर्माण में अणुव्रत की बहुत बड़ी भूमिका है। प्राचीन काल में भारत को विश्वगुरु एवं सोने की चिड़िया कहा जाता था। बीच में कुछ विदेशी आक्रांताओं एवं समाज विरोधी तत्वों ने भारत की संस्कृति को मिटाने का प्रयास किया। फिर भी समाज के लोग, विशेषकर अणुव्रती कार्यकर्ता स्वच्छ भारत के निर्माण में अपना योगदान दे रहे हैं। यह एक सराहनीय कार्य है।

◈ çkty iVy बारहवीं
सरस्वती विद्या मंदिर इन्टर कॉलेज
बीसलपुर, पीलीभीत, उत्तरप्रदेश

किसी भी धर्म–सम्प्रदायों में व्रत की परम्परा किसी रूप में विद्यमान है। व्रत का सीधा संबंध व्यक्ति की आन्तरिक चेतना से होता है। धार्मिक व्यक्ति जब किसी बुराई को छोड़ने का संकल्प लेता है तो उसे व्रत कहा जाता है। जैन परम्परा में व्रत दो प्रकार के होते हैं– एक महाव्रत, दूसरा अणुव्रत। महाव्रत उन लोगों के लिए है जो सांसारिक जीवन को त्याग कर जीवन भर पाप कर्म से सर्वथा मुक्त रहने का संकल्प ले लेते हैं।

अणुव्रत उन लोगों के लिए है जो गृहस्थ जीवन में रहते हुए भी नैतिक एवं मर्यादित जीवन जीना चाहते हैं। आचार्य श्री तुलसी जनमानस की व्रतों के प्रति आस्था से परिचित थे। वे यह भी जानते थे कि व्यक्ति बड़ा व्रत लेने में संकोच करता है। हर आदती के लिए गृह त्याग संभव नहीं है लेकिन छोटे व्रत के लिए वह आसानी से तैयार हो सकता है। इसलिए उन्होंने अणुव्रत से लोगों को जोड़कर उन्हें मर्यादित जीवन जीने की प्रेरणा देने का निश्चय किया।

उनका दृढ़ विश्वास था कि अणुव्रत के प्रति संकल्पबद्धता से ही लोगों को

संयमित जीवन की ओर मोड़ा जा सकता है। यों विचार परिवर्तन के लिए अनेक आंदोलन चलते हैं पर अणुव्रत की यह विशेषता है कि यह केवल विचार परिवर्तन ही नहीं करता, अपितु व्यक्ति को संकल्पबद्ध भी बनाता है। संकल्प से जीवन में आमूल–चूल परिवर्तन लाया जा सकता है। इसी प्रकार अणुव्रत के द्वारा स्वच्छ भारत का निर्माण किया जा सकता है। व्यक्ति, परिवार, समाज को अणुव्रत के द्वारा सुधार एवं परिवर्तन करके संस्कारित भी किया जा सकता है।

v.kqor o LoPN Òkjr % यद्यपि स्वच्छ भारत का निर्माण करने के लिए लगातार सरकार की ओर से विभिन्न महापुरुषों, समाजसेवी संस्थाओं तथा विभिन्न प्रकार से प्रयास किया जाता रहा है परंतु अणुव्रत की स्वच्छ भारत के निर्माण में अहम् भूमिका है।

बच्चे ही राष्ट्र की असली संपदा है। आज भी उनका महत्व है, पर कल तो वे ही देश के कर्णधार बनेंगे। ये यदि सभ्य, सुशिक्षित एवं मर्यादित, सदाचारी होते हैं तो राष्ट्र भी सुदृढ़ और समृद्ध होता है।

इस प्रकार विद्यार्थी स्वच्छ भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है, यदि वह अणुव्रती होगा। आचार्यश्री तुलसी मानते थे–अनुशासन का पथ फूलों से नहीं, काटों से भरा है किंतु उस पथ गुजर जाने के बाद हर कांटा फूल बनकर मुस्करा उठता है। उन्होंने यही दृष्टिकोण अपनाते हुए विद्यार्थी के व्यवहार को अनुशासित बनाने पर सर्वाधिक जोर दिया। इस प्रकार अणुव्रत विद्यार्थी स्वच्छ भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

v.kqor vkj lok dk;Z % अणुव्रत एक नैतिक अभियान है, इसलिए इसका मूल लक्ष्य नैतिक चेतना को जगाने का है। पर जब व्यक्ति नैतिक बन जाता है तो सामाजिक दायित्व के प्रति भी सहज बन जाता है। सेवा के क्षेत्र में भी उसकी सहज अभिरूचि बन जाती है। नैतिकता की पृष्ठभूमि के बिना बहुत बार सेवा भी एक व्यवसाय बन जाता है। इसका अर्थ यह नहीं कि सभी सेवाभावी लोग स्वार्थी ही होते हैं। पर जिनके पैर नैतिकता के धरातल को छूते हैं, उनकी सेवा का रंग कुछ दूसरा ही

होता है। नैतिकता एवम् सामाजिकता के आदर्शों को सामने रखकर खड़ी होने वाली संस्थाओं ने समय–समय पर अपना कर्तव्य निभाया, यह अणुव्रत का व्यवहार में प्रयोग है।

LoPN Òkjr o vu'kklu % स्वच्छ भारत के निर्माण में अणुव्रत अनुशासन का बहुत महत्व है। आचार्य श्री तुलसी का मानना है जो बचपन में दूसरों के अनुशासन में नहीं रहता, वह बड़ा होकर दूसरों पर अनुशासन करने का अधिकारी भी नहीं हो सकता। स्वयं अनुशासित रहना और दूसरों को अनुशासन में रखना स्वच्छ भारत के निर्माण में आवश्यक है।

अणुव्रती व्यक्ति मानवीय समानता में विश्वास करता है, जीवन में प्रामाणिक व्यवहार करता है। वही एक स्वस्थ समाज एवं स्वस्थ राष्ट्र का निर्माण कर सकता है। इसलिए कहा गया है–व्रत के अणु का अनुपालन ही महान भय से मुक्ति दिला सकता है।

स्वच्छ भारत के निर्माण में अणुव्रत की बहुत बड़ी भूमिका है। प्राचीन काल में भारत विश्वगुरु एवं सोने की चिड़िया कहा जाता था। बीच में कुछ विदेशी आक्रांताओं एव समाज विरोधी तत्वों ने भारत की संस्कृति को मिटाने का प्रयास किया। फिर भी समाज के लोग अणुव्रती कार्याकर्ता स्वच्छ भारत के निर्माण में अपना योगदान दे रहे हैं। यह एक सराहनीय कार्य है।

जिस प्रकार एक सुंदर घर की कल्पना तभी की जा सकती है जब उसघर में सुख व शान्ति हो, भले ही वह घर सामान्य कच्चा या झोपड़ी हो, इसी प्रकार स्वच्छ भारत तभी कहा जा सकता है जब भारत के लोग संस्कारित, ईमानदार, चरित्रवान देश भक्त हों। ❑

गांवों को गंदगी रहित बनाने का लक्ष्य

◈ **çk'kk vkj- feJk** सातवीं
बाबा नानक सिंधी हिंदी हाई स्कूल
गरबा मैदान, नागपुर, महाराष्ट्र

इस अभियान में बहुत ही रूचिपूर्ण तरीका इस्तेमाल हो रहा है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति अगले 9 लोगों को जुड़ने के लिए आमंत्रित करेगा और यह श्रृंखला तब तक चलती रहेगी जब तक कि भारत का प्रत्येक नागरिक इससे जुड़ न जाए। स्वच्छ भारत अभियान देश का सबसे बड़ा सफाई अभियान है जिसमें शुभारंभ पर लगभग 30 लाख स्कूलों और कॉलेजों के छात्रों और सरकारी कर्मचारियों ने भाग लिया।

Lवच्छ भारत मिशन या स्वच्छ भारत अभियान भारत सरकार द्वारा चलाया गया एक विशाल जन आंदोलन है जो कि पूरे भारत में सफाई को बढ़ावा देता है। इस अभियान को 2019 तक एक स्वच्छ भारत का लक्ष्य रखते हुए 2 अक्टूबर, 2014 को महात्मा गांधी जी के 145वें जन्मदिन के अवसर पर शुरू किया गया था।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ने भारत को एक स्वच्छ भारत बनाने का सपना देखा और इसके लिए हमेशा कठिन प्रयास किये। राष्ट्रपिता के सपने को साकार करने के लिए भारत सरकार ने इस अभियान को शुरू करने का फैसला किया।

उत्तरप्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने उत्तरप्रदेश सरकार के कार्यालयों में सफाई सुनिश्चित करने के लिए पान, गुटका और अन्य तम्बाकू उत्पादों पर भी प्रतिबंध लगा दिया है। इस मिशन का उद्देश्य सभी ग्रामीण और सभी शहरी क्षेत्रों को कवर करना है ताकि दुनिया के सामने हम एक आदर्श देश का उदाहरण प्रस्तुत कर सकें।

मिशन के उद्देश्यों में से कुछ उद्देश्य हैं ठोस और तरल कचरे का पुनः उपयोग, लोगों को सफाई के प्रति जागरूक करना, अच्छी आदतों के लिए प्रेरित करना, शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में सफाई व्यवस्था अनुकूल बनाना व भारत में निवेश के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करना आदि।

इस अभियान में बहुत ही रूचिपूर्ण तरीका इस्तेमाल हो रहा है जिसमें प्रत्येक व्यक्ति अगले 9 लोगों को जुड़ने के लिए आमंत्रित करेगा और यह श्रृंखला तब तक चलती रहेगी जब तक कि भारत का प्रत्येक नागरिक इससे जुड़ न जाए। स्वच्छ भारत अभियान देश का सबसे बड़ा सफाई अभियान है जिसमें शुभारंभ पर लगभग 30 लाख स्कूलों और कॉलेजों के छात्रों और सरकारी कर्मचारियों ने भाग लिया।

शुभारंभ के दिन प्रधानमंत्री ने नौ व्यक्तियों के नामों की घोषणा की और उनमें अपने क्षेत्र में सफाई अभियान को बढ़ाने और आम जनता को उससे जुड़ने के लिए प्रेरित करने को कहा। उन्होंने यह भी कहा कि इनको अगले नौ लोगों को इसमें जुड़ने के लिए प्रेरित करना है और श्रृंखला तब तक चलेगी जब तक की पूरे भारत तक इसका संदेश न पहुंच जाये।

स्वच्छ भारत अभियान आज तक स्वच्छता संबंधी लिया गया एक बड़ा कदम है। इस अभियान को विश्वस्तर पर प्रसिद्ध करने तथा आम जनता को इसके प्रति जागरूक करने के लिए स्कूलों तथा कॉलेजों के विद्यार्थियों सहित लगभग 3 लाख सरकारी कर्मचारियों ने प्रारंभ होने के दिन इसमें भाग लिया। 1500 लोगों की मौजूदगी में 2 अक्टूबर, 2014 को राष्ट्रपिता भवन में इस कार्यक्रम को आयोजित किया गया था। तत्कालीन राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी ने झंडा दिखाकर इस आंदोलन की शुरुआत की।

इस भारतीय अभियान से प्रेरणा लेकर 3 जनवरी, 2015 को, ईंडो–नेपाल डॉक्टर एसोसिएशन ने एक मुहिम की शुरुआत की जिसको 'स्वच्छ भारत नेपाल अभियान' कहा गया। इसकी शुरुआत इंडो–नेपाल बॉर्डर क्षेत्र, सुनौली–बेलिहिया (भगवान बुद्ध का जन्म स्थल, पवित्र शहर लुंबिनी, नेपाल) में हुई।

भारत में स्वच्छता के दूसरे कार्यक्रम, जैसे केन्द्रीय ग्रामीण स्वच्छता कार्यक्रम (सीआरएसपी) का प्रारंभ 1986 में पूरे देश में हुआ जो कि गरीबी रेखा से नीचे के लोगों के व्यक्तिगत इस्तेमाल के लिए स्वास्थ्यप्रद शौचालय बनाने पर केंद्रित था तथा दूसरी सुविधाएं, जैसे हैंड पंप, स्नान गृह, हाथों की सफाई आदि था। यह लक्ष्य था कि सभी उपलब्ध सुविधाएं ठीक ढंग से ग्राम पंचायतों द्वारा पोषित की जाएंगी।

गांवों की उचित सफाई व्यवस्था, जैसे जल निकासी व्यवस्था, सोखने वाला गड्ढा, ठोस और द्रव अपशिष्ट का निपटान, स्वास्थ्य शिक्षा के प्रति जागरूकता, सामाजिक–व्यक्तिगत, घरेलू और पर्यावरणीय साफ–सफाई। कार्यक्रम का पुनः निर्माण करने के लिए भारतीय सरकार द्वारा 1999 में भारत में सफाई के पूर्ण स्वच्छता अभियान (टीएएसी) की शुरुआत हुई। पूर्ण स्वच्छता अभियान को बढ़ावा देने के लिए साफ–सफाई कार्यक्रम के तहत जून, 2003 में निर्मल ग्राम पुरस्कार की शुरुआत हुई।

यह एक प्रोत्साहन योजना थी जिसे भारत सरकार द्वारा 2003 में लोगों को पूर्ण स्वच्छता की विस्तृत सूचना देने, पर्यावरण को साफ रखने के साथ ही पंचायत, ब्लॉक और जिला द्वारा गांव को गंदगी से मुक्त करने के लिए प्रारंभ की गई थी।

महात्मा गांधी जी को उनके जन्म दिवस 2 अक्टूबर, 2014 को सरकार ने स्वच्छ भारत अभियान की शुरुआत कर अच्छा संकेत और उचित श्रद्धाजंलि दी है। इसलिए न केवल सरकारी और निजी संस्थान बल्कि कॉरपोरेट क्षेत्रक भी भारत को स्वच्छ बनाने में अपनी भूमिका निभा रहे हैं। 4 फरवरी, 1916 से पहले बनारस हिन्दू विद्यालय के लोकार्पण कार्यक्रम में जनसमूह को संबोधित करते हुए गांधीजी ने स्वच्छता के महत्व को बताया और हर जगह फैली गंदगी और मैले को लेकर दर्द तथा दुःख व्यक्त किया था। ❑

स्वच्छता के अणुव्रत से समाज में परस्तावलंबन रहेगा। सहयोग होगा तभी समाज कहलायेगा। स्वच्छता अणुव्रत के पालन में कोई स्वार्थ नहीं, अतः साम्यवादियों की तरह बलप्रयोग निरर्थक है। यदि स्वच्छता अणुव्रत की तरह हृदयपूर्वक स्वीकृत नहीं हुई तो लोग चोरी-छिपे स्वच्छता पान के नियम तोड़ते रहेंगे।

स्वच्छता के अणुव्रत से होगा अभ्युदय

◈ iVy ekgEen ,l- आठवीं
हेंडीकैप्ड चिल्ड्रंस स्कूल
उमरा, सूरत, गुजरात

Lवच्छता का हमारे जीवन में बहुत महत्व है। जहां स्वच्छता, वहां प्रभु का निवास होता है, ऐसा हम मानते हैं। किंतु स्वच्छता हिन्दुस्तान में सबसे ज्यादा अवगणना पाने वाली बात है। अतः भारत में गंदी के कारण अनेक रोगों का प्रचलन रहता है और जगह–जगह कूड़े के ढेर लगाने के कारण जगह का सौन्दर्य भी नष्ट होता है।

सबसे बड़ी बात यह है कि विश्व में भारत की छवि बिगड़ती है। इसलिए हमारे प्रधानमंत्री ने महात्मा गांधीजी की 150वीं जयंती जो 2019 में मनायी जाने वाली है, के उपलक्षय में 2 अक्टूबर, 2014 के दिन स्वच्छता अभियान शुरू किया है। सन् 2014 से सन् 2019 तक पांच साल तक पूरे भारत में स्वच्छता अभियान चलाकर स्वच्छ बनाने का भगीरथ संकल्प हमारी सरकार ने लिया।

यह एक राजनीति मुक्त अभियान है जो देशभक्ति को बढ़ावा देता है। अतः यह हर एक भारतीय की जिम्मेदारी है। स्कूली बच्चे एवम् उनके शिक्षक इस अभियान से जुड़ रहे हैं। गांधी स्वच्छता के आग्रही थे और

वे पूरे देश को स्वच्छ बनाना चाहते थे। उन्होंने अपने समय में स्वच्छता के क्षेत्र में काम किया था परंतु वह मुख्य कार्य स्वतंत्रता प्राप्ति का एक छोटा सा अंग बनके रह गया था।

स्वच्छ भारत अभियान की शुरुआत भारत के प्रधामंत्री ने की और उन्होंने अन्य नौ व्यक्तियों को यह काम करने के लिये प्रेरण दी। वे नौ लोग स्वच्छता अभियान से जुड़कर दूसरे नौ लोगों को भी जोड़ेंगे। इस तरह कार्य को व्यापक बनाने की चेष्टा की गई है।

इस अभियान के हेतु गांव और शहर दोनों को इसमें जोड़ने का प्रयास है और भारत को विश्व में आदर्श राष्ट्र के रूप में प्रस्तुत करना है। इस कार्य में टॉईलैट एवम् गटर निर्माण करना व उनका उपयोग करना, यानी खुले में शौच करना बंद करना है। मानव के द्वारा सिर पर मैला ढोने की प्रथा बंद हो, प्रवाही कूड़े का संपूर्ण रूप से निष्कासन और पुनः उपयोग हो, स्वच्छता के प्रति लोगों के बर्ताव में परिवर्तन लाना, आरोग्य के प्रति जन जागृति बढ़ाना है।

स्वच्छता के इस मुद्दे को हमें स्वीकार करना है और हमारे पीछे और नौ लोगों को जोड़ने जाना है, क्योंकि गांधीजी कहते थे कि स्वच्छता स्वतंत्रता प्राप्ति से अधिक महत्वपूर्ण है।

इस अभियान के कई फायदे हैं। इससे विदेशी निवेश बढ़ सकता है और फलस्वरूप विकास दर बढ़ सकती है। विदेशी पर्यटक भी भारत की ओर आकर्षित होंगे और विविध प्रकार के छोटे बड़े उद्योगों को भी बढ़ावा मिल सकता है। स्वास्थ्य के प्रति खर्च कम हो सकता है और मृत्युदर भी घट सकती है, जानलेवा रोगों की मात्रा भी कम हो सकती है। इसलिए प्रधानमंत्री ने प्रत्येक भारतीय को प्रति वर्ष कम से कम 100 घंटे का श्रमदान करने को कहा है।

प्रधानमंत्री ने सलमान खान, अनिल भाई अंबानी, कमल हासन, कपिल शर्मा, प्रियंका चोपड़ा, बाबा रामदेव, सचिन तेंदुलकर, शशि थरूर एवं 'तारक मेहता का उल्टा चश्मा' की पूरी टीम को इस अभियान के लिये नामांकित किया है।

स्वच्छता अभियान को हम अणुव्रत के तौर पर भी स्वीकार कर सकते हैं। यह अणुव्रत क्या है? यह चरित्र–विकास के लिये किए जाने वाला संकल्प। दुनिया में अपार पदार्थ हैं। मन पर कोई नियंत्रण नहीं है। इंद्रियां भोग, हिंसा और क्रूरता की ओर दौड़ रही हैं। क्रूरता से शांति नष्ट हुई है। उसे प्राप्त करने के लिये व्रत की आवश्यकता है। इन्द्रियों और मन की निरंकुशता को छोड़ने का अभ्यास करना होगा।

यह व्रत अपने आप में पूर्ण होता है किन्तु आचरण की क्षमता समान नहीं होती, इसलिए उसके दो स्तर किये गये हैं महाव्रत और अणुव्रत। असीम रूप में स्वीकार किये जाने वाले व्रत महाव्रत और सीमा के साथ स्वीकार किए जाने वाले व्रत अणुव्रत कहलाते हैं। छोटे–छोटे व्रत अणुव्रत कहलाते हैं। स्वच्छता का व्रत भी अणुव्रत ही है। यह एक व्यवस्था के तौर पर हमें स्वीकार नहीं करना है परंतु इससे हृदय की पूर्ण पवित्रता और स्वतंत्रता होनी चाहिए।

स्वच्छता के अणुव्रत से समाज में परस्परावलंबन रहेगा। सहयोग होग तभी समाज कहलायेगा। स्वच्छता अणुव्रत के पालन में कोई स्वार्थ नहीं, अतः साम्यवादियों की तरह बलप्रयोग निरर्थक है। यदि स्वच्छता अणुव्रत की तरह हृदयपूर्वक स्वीकृत नहीं हुई तो लोग चोरी–छिपे स्वच्छता पान के नियम तोड़ते रहेंगे।

गंदगी सामाजिक बुराई है, ऐसा हम नहीं मानेंगे तो हम उसे छोड़ना नहीं चाहेंगे। एक मनुष्य, हजारों अपेक्षायें। वे पूरी होती हैं बाह्य जगत से। अतः हर आदमी को नैतिक होना चाहिए, फिर चाहे धार्मिक हो, ना हो। धर्म बिंल है, नैतिकता प्रतिबिंब। बिंब के बिना प्रतिबिंब संभव नहीं है। अतः स्वच्छता अणुव्रत को हमें धर्म के रूप में स्वीकार करना होगी।

इस देश मे जन्में कई व्यक्ति अपने पिछले जन्मों के संस्कारों से निर्मित अपने स्वयं के चारित्र से पृथ्वी के सभी मानवों को शिक्षा देते हैं। यानी वे खुद आचरण करते हैं और यही अन्यों के लिये उदाहरण रूप बन जाता है। आज ऐसा है नहीं हां। गांधीजी ऐसा कहते थे, ''मेरा जीवन ही मेरा संदेश है'' पर सभी ऐसा कह पाते हैं? नहीं ! पर क्यों? क्योंकि

हमने खुद ऐसी अच्छी चीजों को अपनी आदत नहीं बनाया है, अतः अपना कल्याण किये बिना दूसरों के कल्याण की बात थोथी (किताबी) होती है। इसलिए हमें स्वयं स्वच्छता के नियमों का पालन करके दूसरों के लिए उदाहरणरूप बनाना होगा। स्वच्छता के अणुव्रत (छोटे व्रत) से हम पूरे भारतवर्ष का अभ्युदय कर सकते हैं। ❑

अणुव्रत की भूमिका स्वच्छ भारत के निर्माण में सालों से बढ़ रही है। अणुव्रत अभियान के तहत यदि भारत के सभी व्यक्तियों की नैतिकता का स्तर ऊंचा रहता है तो बापू गांधी के सपनों का स्वच्छ भारत बनाने का लक्ष्य प्राप्त करने में सहयोग मिलता है।

अणुव्रत कार्यकर्ताओं की अहम् भागीदारी

◈ iuhr आठवीं
बाल भवन पब्लिक स्कूल
मयूर विहार फेज–II, दिल्ली

Vणुव्रत का शब्द अर्थ है 'छोटी शपथ' अणु का अर्थ है 'छोटा' और व्रत का अर्थ है 'प्रतिज्ञा' अणुव्रत व्यक्तियों को कुछ बुनियादी नैतिक मूल्यों का अभ्यास करने के लिए प्रेरित करता है। स्वच्छ भारत के निर्माण में अणुव्रत ने समाज पर गहरा असर डाला है। यह लोगों के सभी वर्गों द्वारा गरमजोशी से अपनाया गया तथा जनता से मजबूत समर्थन के कारण यह नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों के उत्थान के लिए एक राष्ट्रीय अभियान के रूप में उभरा है।

अणुव्रत किसी भी व्यक्ति की व्यक्तिगत धार्मिक मान्यताओं में हस्तक्षेप न करके इस तथ्य पर जोर देता है कि एक व्यक्ति को अपने जीवन और चरित्र की पवित्रता को सुरक्षित रखने के लिए किन प्रयासों पर बल देना चाहिए। अणुव्रत ने स्वच्छ भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

महात्मा गांधी जी ने स्वच्छ भारत का सपना देखा था। उन्होंने कहा था कि ''स्वच्छता स्वतंत्रता से ज्यादा जरूरी है।'' वे देश की गरीबी और

गंदगी से अच्छी प्रकार से वाकिफ थे, इसी वजह से उन्होंने अपने सपनों को पाने के लिए कई सारे प्रयास किए परंतु पूर्ण रूप से सफल नहीं हो सके। उन्होंने कहा था कि निर्मलता और स्वच्छता दोनों ही स्वच्छ और शांतिपूर्ण जीवन का अहम् भाग हैं। स्वच्छ भारत के निर्माण के लिए इस मिशन की कार्यवाही निरंतर चलती रहनी चाहिए।

भौतिक, मानसिक, सामाजिक और बौद्धिक कल्याण के लिए भारत के लोगों में इसका एहसास होना बेहद आवश्यक है परंतु दुर्भाग्य से आजादी के 69 साल के बाद भी भारत अब भी कहीं न कहीं पिछड़ा हुआ है। भारतीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी द्वारा स्वच्छ भारत के निर्माण के लिए एक मिशन 2 अक्टूबर, 2014 से शुरू किया गया है और 2 अक्टूबर 2019 तक पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है।

इसका उद्देश्य सफाई व्यवस्था की समस्या का समाधान निकालना, साथ ही सभी को स्वच्छता की सुविधा के निर्माण द्वारा पूरे भारत में बेहतर मल प्रबंधन करना है। अणुव्रत भी भारतवासियों को कुछ बुनियादी नैतिकमूल्यों का अभ्यास करने के लिए जागरूक करता है। अणुव्रत एक ऐसी योजना है जो ज्ञान और आचरण के बीच की खाई को कम कर देती है।

स्वच्छ भारत के निर्माण के लिए अणुव्रत मानव प्रवृत्ति को बदलने के लिए एक अभियान है तथा भारतवासियों के चरित्र निर्माण के लिए एक परियोजना है। यदि हमारे देश में सभी लोगो का नैतिक मूल्य उच्च स्तर का है तो स्वच्छ भारत निर्माण में निर्धारित समय से पहले ही लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। अणुव्रत न केवल चरित्र निर्माण और आंतरिक शुद्धि अपितु हरे–भरे पर्यावरण को बनाने के लिए काम करता है।

अणुव्रत के सैकड़ों स्वयंसेवकों द्वारा सामाजिक संगठनों एवं सरकार को सम्पूर्ण अंतरिक्ष को साफ करने के लिए मानव जाति में स्वेच्छा से इस नई विचारधारा का प्रवाह करवाने का प्रचार किया गया।

अणुव्रत की भूमिका स्वच्छ भारत के निर्माण में सालों से बढ़ रही है। अणुव्रत अभियान के तहत यदि भारत के सभी व्यक्तियों की नैतिकता का

स्तर ऊंचा रहता है तो बापू गांधी के सपनों का स्वच्छ भारत बनाने का लक्ष्य प्राप्त करने में सहयोग मिलता है। गांधी जी ने इसीलिए भारत के लोगों को स्वच्छता को दैनिक जीवन में अपनाने पर बल दिया था परंतु उनका यह प्रयास बहुत प्रभाव नहीं हो पाया था जिसकी वजह थी लोगों की अपूर्ण भागीदारी। अणुव्रत पहले ही समाज के सभी वर्गों में स्वागतयोग्य कदम माना गया है। अतः हम कह सकते हैं कि अणुव्रत की स्वच्छ भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका है। ❑

स्वच्छता अभियान, अणुव्रत ने संभाली कमान

आम जनता को भारत को आगे ले जाने के लिए इस अभियान में अपना योगदान देना चाहिए। अणुव्रत ने इस अभियान को आगे बढाने के लिए आम जनता को स्वच्छता के प्रति जागृत करने तथा इसके प्रत्येक कार्यक्रम में अपना सहयोग दिया है। चाहे वह शौचालय बनवाना, सार्वजनिक स्थलों की सफाई, सड़कों की सफाई हो, अपना सहयोग दिया है।

okU'kh ikgqtk दसवीं
मुकट पब्लिक स्कूल
दमनहेड़ी रोड, राजपुरा,
पटियाला, पंजाब

Vणुव्रत न्यास की स्थापना गुरुदेव श्री तुलसी जी ने एक अच्छे उद्देश्य के लिए की। उनका उद्देश्य समाज की बुराइयों को दूर कर समाज का उत्तम निर्माण तथा मनुष्यों का चरित्र निर्माण करना था। वर्तमान समय में यह संस्था आचार्य महाश्रमण के मार्गदर्शन में बहुत से सामाजिक कार्यक्रम तथा आध्यात्मिक कार्यक्रम चलाते हुए अणुव्रत के विचारों को आगे बढ़ा रही है।

अणुव्रत न्यास का मुख्य कार्यालय राजधानी दिल्ली में है जहां से इनके सारे कार्य नियंत्रित किए जाते हैं। आधिकारिक रूप से इस संस्था ने अपना कार्य 1964 में शुरू किया तथा ट्रस्ट तथा जनता की मदद से 1968 में 'अणुव्रत भवन' का निर्माण किया गया।

अणु शब्द का अर्थ है छोटा तथा व्रत शब्द का अर्थ है संकल्प। अणुव्रत का भारतीय समाज पर गहरा प्रभाव है। समाज के सभी वर्गों द्वारा इस संस्था का स्वागत किया गया है। समाज के बहुत बड़े वर्ग के सहयोग के कारण ही यह संस्था नैतिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों का पुनर्निर्माण

करने वाली राष्ट्रीय मुहिम बन चुकी है। अणुव्रत के मुख्य सिद्धांत इस प्रकार हैं। दूसरों के प्रति संवेदनशील, मिलजुल कर रहना, अहिंसा, सत्य एवं निर्भिकता, राष्ट्रीय एकता, सभी जातियों का प्रेमपूर्वक रहना, साधनों की शुद्धता तथा स्वच्छता।

v.kqor dh Òfedk % स्वच्छ भारत अभियान में अणुव्रत ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अणुव्रत ने स्वच्छ भारत अभियान की कमान बहुत अच्छे तरीके, बहुत बड़े–स्तर पर तथा बहुत सफल तरीके से संभाली है। अणुव्रत संस्था का उद्देश्य ही सामाजिक बुराइयों को दूर कर समाज को ऊपर उठाना है, इसलिए इस अभियान में अणुव्रत ने बहुत बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया तथा स्वच्छ भारत अभियान के अंतर्गत आने वाले सभी कार्यक्रमों में, जैसे खुले में शौच को खत्म करना, शौचालय की सुविधा उपलब्ध करना, सड़कों पर सफाई का प्रबंध करना, सार्वजनिक स्थानों पर सार्वजनिक शौचालय बनवाना आदि सभी कार्यक्रमों में अपना योगदान दिया है।

LoPN Òkjr vfÒ;ku % स्वच्छ भारत अभियान को क्लीन इंडिया मिशन या क्लीन इंडिया ड्राइव या स्वच्छ भारत अभियान भी कहा जाता है। यह एक राष्ट्रीय स्तर का अभियान है जो भारत सरकार द्वारा पिछड़े वैधानिक कस्बों को साफ करने के लिए चलाया जा रहा है। इस अभियान में शौचालयों का निर्माण करवाना, ग्रामीण इलाकों में स्वच्छता कार्यक्रम को बढ़ावा देना, सड़कों की सफाई करना और देश के नेतृत्व करने के लिए देश के बुनियादी ढ़ांचे में बदलाव शामिल है। यह अभियान आधिकारिक तौर पर प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने 2 अक्टूबर, 2014 में महात्मा गांधी की 145वीं जयंती पर राजघाट, नई दिल्ली में शुरू किया था।

vfÒ;ku dh vko';drk % भारत में स्वच्छ भारत अभियान लगातार चलाने की आवश्यकता है जब तक कि लक्ष्य प्राप्त न हो जाए। भारत के लोगों के लिए जरूरी है कि वह भावनात्मक शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और बौद्धिक रूप से अच्छा महसूस करें। वास्तव में भारत में रहन–सहन की स्थिति अग्रिम बनाना जरूरी है जो कि स्वच्छता

लाकर शुरू की जा सकती है। भारत में खुले शौच को खत्म करना तथा साथ ही हर किसी को शौचालय सुविधा उपलब्ध कराना बहुत ही आवश्यक है।

भारत में शौचालयों को फ्लशिंग शौचालयों में परिवर्तित करना जरूरी है। मैनुएल स्केवैजिंग सिस्टम को समाप्त करना आवश्यक है। सभी बर्बाद चीजें वैज्ञानिक प्रक्रियों द्वारा ठोस अपशिष्टों को रिसाइक्लिंग के माध्यम से पुनः उपयोग में लाना जरूरी है। भारतीय लोगों में व्यावहारिक बदलाव लाने के लिए व्यक्तिगत स्वच्छता और स्वास्थ्य स्वच्छता के तरीकों का अभ्यास किया जाना चाहिए।

'kgjh {ks=k e vfÒ;ku % शहरी क्षेत्रों में स्वच्छ भारत का लक्ष्य 1104 करोड़ परिवारों को और 216 लाख सार्वजनिक शौचालय और साथ ही 215 लाख समुदाय शौचालयों को प्रत्येक शहर में ठोस अपशिष्ट प्रबंधन के साथ उपलब्ध कराने का है। कार्यक्रम, जिन्हें पूरा करने के लिए लक्षित किया गया है, वह हैं खुले में शौचालय को पूरी तरह से हटाना, गंदे शौचालयों को फ्लश शौचालयों में परिवर्तित करना, मैनुअल स्केवैशिंग को समाप्त करना, सार्वजनिक रूप से व्यावहारिक परिवर्तन लाने और ठोस अपशिष्ट प्रबंधन लाना आदि है।

xkeh.k LoPN Òkjr fe'ku % ग्रामीण स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छता कार्यक्रमों को लागू करने वाला मिशन है। इससे पहले निर्मल भारत अभियान 1999 में भारत सरकार ने ग्रामीण क्षेत्रों को साफ करने के लिए स्थापित किया था। लेकिन अब इसे स्वच्छ भारत अभियान में पुनगर्ठन किया गया है। इस अभियान का लक्ष्य है 2019 तक ग्रामीण क्षेत्रों को खुले शौचालयों से मुक्त करना, जिसके लिए देश में 11 करोड़ 11 लाख शौचालयों के निर्माण के लिए 1 लाख तीस हजार करोड़ की लागत का अनुमान लगाया गया। इस अभियान में ग्राम पंचायत, पंचायत समिति और जिला परिषद की भागीदारी भी शामिल है।

ग्रामीण स्वच्छ भारत मिशन का उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाना है। 2019 तक स्वच्छ भारत को

पूरा करने के लिए और ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छता बनाए रखने के लिए लोगों को प्रेरित करना है। आवश्यक टिकाऊ स्वच्छता सुविधाओं को उपलब्ध कराने के लिए स्थानीय कार्यरत निकायों की प्रेरित करना है।

LoPN Òkjr midj % भारत में सभी सेवाओं पर स्वच्छ भारत 5 प्रतिशत सेवाकर है। यह स्वच्छ भारत अभियान के लिए वित्त मंत्रालय द्वारा शुरू किया गया था ताकि इस अभियान को सफल बनाया जा सके। इस कर के तहत प्रत्येक 100 रुपये के लिए अतिरिक्त 50 पैसे सेवा कर देना होगा।

यह अभियान भारत की उन्नति की ओर अभूतपूर्व है जो अवश्य ही भारत को बहुत आगे लेकर जाएगा। आम जनता को भारत को आगे ले जाने के लिए इस अभियान में अपना योगदान देना चाहिए। अणुव्रत ने इस अभियान को आगे बढ़ाने के लिए आम जनता को स्वच्छता के प्रति जागृत करने तथा इसके प्रत्येक कार्यक्रम में अपना सहयोग दिया है। चाहे वह शौचालय बनवाना, सार्वजनिक स्थलों की सफाई, सड़कों की सफाई हो अपना सहयोग दिया है। ❑

स्वच्छता का अहसास जरूरी

◈ **vueky dkSj** आठवीं
ममता निकेतन कान्वेंट स्कूल
तरनतारन, पंजाब

भौतिक, मानसिक, सामाजिक और बौद्धिक कल्याण के लिए भारत के लोगों में इसका अहसास होना बेहद आवश्यक है। अपने उद्देश्य की प्राप्ति तक भारत में इस मिशन की कार्यवाही निरंतर चलती रहनी चाहिये। यह सही मायनों में भारत की सामाजिक स्थिति को बढ़ावा देने के लिए है जो हर तरफ स्वच्छता लाने के लिए शुरू किया जा सकता है।

uई दिल्ली में राजपथ पर 'स्वच्छ भारत अभियान' का शुभारंभ करते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने कहा, ''2019 में महात्मा गांधी की 150वीं जयंती के अवसर पर भारत उन्हें स्वच्छ भारत के रूप में सर्वश्रेष्ठ श्रद्धांजलि दे सकता है।'' देश भर में एक राष्ट्रीय आंदोलन के रूप में स्वच्छ भारत मिशन की शुरुआत 2 अक्टूबर, 2014 को हुई थी। प्रधानमंत्री ने स्वच्छता के लिए जन आंदोलन की अगुवाई करते हुए लोगों से कहा कि वे साफ और स्वच्छ भारत के महात्मा गांधी के सपने को पूरा करेंगे।

महात्मा गांधी का सपना 'स्वच्छ भारत' अब साकार होने लगा है। प्रधानमंत्री ने स्वयं झाड़ू उठाई और देश भर ने स्वच्छ भारत अभियान शुरू किया। स्वच्छ भारत अभियान वाराणसी से शुरू हुआ। उन्होंने स्वच्छ भारत मिशन के तहत वाराणसी के अस्सी घाट में गंगा नदी के पास कुदाल से साफ–सफाई की। प्रधानमंत्री श्री नरेद्र मोदी ने साफ–सफाई के महत्व को समझते हुए उन स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का भी जिक्र किया जो उन्हें घर में समुचित शौचालयों के अभाव के कारण झेलनी पड़ती है।

सफाई के इस जन आंदोलन में विभिन्न वर्गों के लोग शामिल हुए। देश भर में लाखों लोग दिन–प्रतिदिन सरकारी विभागों, एनजीओ और स्थानीय सामुदायिक केंद्रों के स्वच्छता कार्यक्रमों में जुड़ रहे। देश भर में नाटकों और संगीत के माध्यम से सफाई के प्रति लोगों को जागरूक किया जा रहा है। इस अभियान में बॉलीवुड हस्तियों से लेकर टी.वी.कलाकार तक शामिल हुए। सरकारी अधिकारियों से लेकर जवानों तक, बॉलीवुड अभिनेताओं से लेकर खिलाड़ियों तक, उद्योगपतियों से लेकर आध्यात्मिक गुरुओं तक, सभी इस पवित्र कार्य से जुड़े।

अभियान के बाद सबसे पहले शुरुआत सड़कों की सफाई के लिए हाथों में झाड़ू थामना, सफाई पर ध्यान केंद्रित करना और स्वच्छ माहौल बनाने की कोशिश लोगों की आदत बन गई है। बाहरी क्षेत्रों में स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत व्यक्तिगत शौचालयों के निर्माण, सामुदायिक शौचालय और ठोस अपशिष्ट प्रबंधन पर ध्यान दिया गया है।

अभियान का उद्देश्य पांच वर्षों में भारत को खुले शौच से मुक्त देश बनाना है। यह एक राजनीति मुक्त अभियान है और देशभक्ति से प्रेरित है। यह प्रत्येक व्यक्ति के लिए एक जिम्मेदारी है और इस देश को स्वच्छ देश बनाने के लिए हर भारतीय नागरिक की भागीदारी की आवश्यकता है।

यह भारत के सभी नागरिकों के लिए एक बड़ी चुनौती है। यह तभी संभव है जबकि भारत में रहने वाला हर व्यक्ति इस अभियान के लिए अपनी जिम्मेदारी को समझे और इसे एक सफल मिशन बनाने के लिए एक साथ होकर पूरा करने की कोशिश करे।

गांधीजी ने स्वच्छता के संदर्भ में कहा, ''स्वच्छता स्वतंत्रता से ज्याद जरूरी है। निर्मलता और स्वच्छता दोनों ही स्वस्थ और शांतिपूर्वक जीवन का अनिवार्य भाग है'', लेकिन दुर्भाग्य से भारत आजादी के 69 साल बाद भी इन दोनों लक्ष्यों से काफी पीछे है।

भौतिक, मानसिक, सामाजिक और बौद्धिक कल्याण के लिए भारत के लोगों में इसका एहसास होना बेहद आवश्यक है। अपने उद्देश्य की प्राप्ति

तक भारत में इस मिशन की कार्यवाही निरंतर चलती रहनी चाहिये। यह सही मायनों में भारत की सामाजिक स्थिति को बढ़ावा देने के लिए है जो हर तरफ स्वच्छता लाने के लिए शुरू किया जा सकता है।

“kgjh o xkeh.k {k=k e vfÒ;ku % शहरी क्षेत्रों में स्वच्छ भारत मिशन का लक्ष्य हर नगर में ठोस कचरा प्रबंधन सहित लगभग सभी 1.04 करोड़ घरों की 2.6 लाख सार्वजनिक शौचालय, 2.5 लाख सामुदायिक शौचालय उपलब्ध कराना है। शहरी क्षेत्रों में स्वच्छता कार्यक्रम को पांच वर्षों के अंदर 2019 तक पूरा करने की योजना है।

ग्रामीण स्वच्छ भारत मिशन एक ऐसा मिशन या एक ऐसा अभियान है जिसमें ग्रामीण भारत में स्वच्छता कार्यक्रम को अमल में लाना है। इसका मुख्य उद्देश्य ग्रामीणों की खुले में शौच करने की मजबूरी से रोकना है। इसके लिये सरकार ने 11 करोड़, 11 लाख शौचालयों के निर्माण के लिये एक लाख चौंतीस हजार करोड़ की राशि खर्च करने की योजना बनाई है।

स्वच्छ भारत एक आंदोलन है जिसके तहत भारत को 2019 तक पूर्णतः स्वच्छ बनाना है। इसमें स्वस्थ और सुखी जीवन के लिए महात्मा गांधी के सपने को आगे बढ़ाया गया है। इस तहर हम कह सकते हैं कि 2019 तक भारत को स्वच्छ और हरा–भरा बनाने के लिए स्वच्छ भारत अभियान एक स्वागत योग कदम है।

इस विश्वास के साथ कह सकते हैं कि अगर भारत की जनता द्वारा प्रभावी रूप से इसका अनुसरण किया गया तो आने वाले वर्षों में स्वच्छ भारत अभियान से पूरा देश भगवान का निवास स्थल–सा बन जाएगा। हमें अपने जीवन में स्वच्छता को जारी रख उसको बनाये रखने की जरूरत। हमें अपने भारत को स्वच्छ बनाना ही होगा तभी हम बापू जी के सपने को साकार कर सकते हैं। ❑

व्यवस्था से आ सकती है स्वच्छता

अस्वच्छता होने का एक कारण व्यवस्था का न होना भी होता है। यदि किसी नगर में सार्वजनिक शौचालय नहीं हैं तो लोग इधर-उधर गंदगी करेंगे ही। यदि घर में शौचालय नहीं है तो लोग खुले में शौच करेंगे ही। वास्तव में आंतरिक संस्कार और सामाजिक व्यवस्था दोनों के इकट्ठे प्रयास से स्वच्छता हो सकती है।

◈ ufnuh 'kek नौवीं
भिवानी पब्लिक स्कूल
भिवानी, हरियाणा

साफ और स्वच्छ वातावरण सबको अच्छा लगता है। सभी चाहते हैं कि वे स्वच्छ परिवेश में रहें। कौन है जिसे गंदगी पंसद हो सकती है। एक कुत्ता भी जहां बैठता है, उस स्थान पर पहले अपने पैरों से उस स्थान को साफ करता है।

फिर मनुष्य तो जीवों में सर्वोत्तम है। उसका स्वच्छता के प्रति आकर्षण स्वाभाविक है। भारत के प्रधानमंत्री जी भी देश की सफाई में बड़ा योगदान दे रहे हैं। बहुत से आंदोलन चला रहे हैं।

कोई भी हो, चाहे मनुष्य हो, जीव–जंतु भी, सभी साफ–सुंदर जगह में रहना पसंद करते हैं। भारत देश में पशु–पक्षियों के लिए जगह–जगह पर चिड़ियाघर बनवाए जा रहे हैं ताकि पशु–पक्षी शांति से रह सकें।

किसी भी मनुष्य की सभ्यता और संस्कृति का पता उसके रहन–सहन और स्वच्छ वातावरण से चलता है। यूरोप और अमेरिका की पहचान उसकी स्वच्छता, सुंदरता और चमक–दमक से मानी जाती है।

भारत के लोग जब उन्नत देशों में जाते हैं और वहां की स्वच्छता को देखते हैं तो उन्हें अपने देश पर शर्म आती है। विदेशी पर्यटक भी भारत की गंदगी, अस्वच्छता, अपवित्रता और भीड़भाड़ देखकर मुंह पिचकाते हैं।

इससे यह स्पष्ट है कि यदि भारत को विश्व के सामने माथा ऊंचा करके खड़ा होना है तो उसे अपनी स्वच्छता और सुंदरता पर ध्यान देना होगा। सभी मामलों में भारत का स्तर ऊंचा है। हमें स्वच्छता, सुंदरता के मामले में भी भारत का स्तर ऊंचा करना होगा।

अस्वच्छता का सबसे प्रमुख कारण है स्वच्छता की ओर ध्यान न देना। स्वच्छ और सुंदर बनने के लिए निरंतर प्रयत्न किया जाता है। जो लोग स्वच्छ रहना चाहते हैं वे दिन–रात प्रयास करते हैं। साफ रहने का यह संस्कार अपने घर से आता है। वह व्यक्ति अपने घर, नगर, विद्यालय और सड़कों तथा गलियों को भी स्वच्छ रखता है।

इसके विपरीत जिसे स्वयं साफ रहने की आदत नहीं है, जो अपने बैठने की जगह पर ही गंदगी फैला देता है, वह बस, रेल और सड़कों को भी गंदा करता चलता है। ऐसे ही लोग गलियों और सड़कों में जहां–तहां थूकते गंदा करते चलते हैं।

किसी समाज की स्वच्छता की आदत उसके सार्वजनिक कार्यक्रमों को देख कर ज्ञात होती है। राजनीतिक दलों के कार्यक्रम के बाद यहां–वहां कूड़े के ढेर जमा हो जाते है। दूसरी ओर किसी धार्मिक कार्यक्रम में कोई गंदगी नहीं होती ।

अस्वच्छता होने का एक कारण व्यवस्था का न होना भी होता है। यदि किसी नगर में सार्वजनिक शौचालय नहीं है तो लोग इधर–उधर गंदगी करेंगा ही। यदि घर में शौचालय नहीं है तो लोग खुले में शौच करेंगे ही। वास्तव में आंतरिक संस्कार और सामाजिक व्यवस्था दोनों के इकट्ठे प्रयास से स्वच्छता हो सकती है।

सार्वजनिक जीवन में अस्वच्छता रोकने के लिए कठोर नियमों और उचित सुविधाएं का होना बहुत जरूरी है। हर घर में शौचालय का होना, हर

नगर और बाजार में कूड़ेदान होने चाहिए। ये व्यवस्थाएं पर्याप्त मात्रा में होनी चाहिए।

इसके लिए योग्य सफाई कर्मचारी और भुगतान की व्यवस्था भी होनी चाहिए। इसी के साथ जो लोग स्वच्छता की अवहेलना करते हैं और गंदगी फैलाते हैं उन पर कठोर कार्यवाही होनी चाहिए, अतः स्वच्छता एक साधना है। इसके लिए घोर परिश्रम करना पड़ता है।

स्वच्छता हमारे स्वभाव का अंग होना चाहिए। स्वच्छ देश में सभी रहना चाहते हैं। भारत के सर्वाधिक लोग अमेरिका, इंग्लैण्ड, आस्ट्रेलिया आदि देशों में क्यों बसना तथा जाकर रहना चाहते हैं? क्योंकि वहां का वातावरण बहुत सुंदर है। वहां न तो लोग गंदगी करते है और न गंदगी को करने देते हैं।

अतः यदि हम भारत को भी विश्व का सुनहरा बसेरा बनाना चाहते हैं तो उसे स्वच्छ और सुंदर बनाना हमारा परम् कर्तव्य है। हमें भी और देशों की तरह न तो गंदगी करनी हैं, और न ही गंदगी किसी को भी करने देनी है। तभी हमारे देश के हालात सुधर पाएंगे। ❑

लोगों की सोच बदलनी होगी

◈ lkf{kh आठवीं
मुकट पब्लिक स्कूल
दमनहेड़ी रोड, राजपुरा,
पटियाला, पंजाब

शहरी क्षेत्रों में स्वच्छता कार्यक्रम को पांच वर्षों के अंदर 2019 तक पूरा करने की योजना है। वे कार्यक्रम जिन्हें पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है-खुले में शौच की प्रवृत्ति को जड़ से हटाना, अस्वाथ्यकर शौचालयों का पानी से बहाने वाले शौचालयों में परिवर्तन, खुले हाथों से साफ-सफाई की प्रवृत्ति को हटाना, लोगों की सोच में परिवर्तन लाना और ठोस कचरा प्रबंधन करना।

^Lवच्छ भारत अभियान' की शुरुआत सरकार द्वारा देश को स्वच्छता के प्रतीक के रूप में पेश करना है। स्वच्छ भारत का सपना महात्मा गांधी द्वारा देखा गया था जिसके संदर्भ में गांधीजी ने कहा कि, ''स्वच्छता स्वतंत्रता से ज्यादा जरूरी है।'' उनके अपने समय में वह देश की गरीबी और गंदगी से अच्छे से अवगत थे। इसी वजह से उन्होंने अपने सपनों को पाने के लिए कई सारे प्रयास किए, लेकिन सफल नहीं हो सके।

जैसा कि उन्होंने स्वच्छ भारत का सपना देखा था, ''उन्होंने कहा कि निर्मलता और स्वच्छता दोनों ही स्वस्थ और शांतिपूर्ण जीवन का अनिवार्य भाग है।'' लेकिन दुर्भाग्य से भारत आजादी के 69 साल बाद भी इन दोनों लक्ष्यों से काफी पीछे है।

स्वच्छ भारत अभियान एक राष्ट्रीय स्वच्छता मुहिम है जो भारत सरकार द्वारा स्थापित किया गया है। इसके तहत 4041 सांविधिक नगरों की सड़कें, पैदल मार्ग और अन्य कई स्थल आते हैं। यह एक बड़ा आंदोलन है जिसके तहत भारत को 2019 तक पूर्णतः स्वच्छ बनाना है। इसमें

स्वस्थ और सुखी जीवन के लिए महात्मा गांधी के स्वच्छ भारत के सपने को आगे बढ़ाया गया है।

इस मिशन को 2 अक्टूबर, 2019 तक पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है। भारत के शहरी विकास तथा पेयजल और स्वच्छता मंत्रालय के तहत इस अभियान को ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में लागू किया गया है।

अपने उद्देश्य की प्राप्ति तक भारत में इस मिशन की कार्यवाही निरंतर चलती रहनी चाहिए। भौतिक, मानसिक, सामाजिक और बौद्धिक कल्याण के लिए भारत के लोगों में इसका अहसास होना बेहद आवश्यक है। यह सही मायनों में भारत की सामाजिक स्थिति को बढ़ावा देने के लिए है जो हर तरफ स्वच्छता लाने से शुरू किया जा सकता है।

शहरी क्षेत्रों में स्वच्छ भारत मिशन का लक्ष्य हर नगर में ठोस कचरा प्रबंधन सहित लगभग सभी 1.04 करोड़ घरों को 2.6 लाख सार्वजनिक शौचालय, 2.5 लाख सामुदायिक शौचालय उपलब्ध कराना है। शहरी क्षेत्रों में स्वच्छता कार्यक्रम को पांच वर्षों के अंदर 2019 तक पूरा करने की योजना है। वे कार्यक्रम जिन्हें पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है—खुले में शौच की प्रवृत्ति को जड़ से हटाना, अस्वाथ्यकर शौचालयों का पानी से बहाने वाले शौचालयों में परिवर्तन, खुले हाथों से साफ—सफाई की प्रवृत्ति को हटाना, लोगों की सोच में परिवर्तन लाना और ठोस कचरा प्रबंधन करना।

ग्रामीण स्वच्छ भारत मिशन एक ऐसा अभियान है जिसमें ग्रामीण भारत में स्वच्छता कार्यक्रम को अमल में लाना है। ग्रामीण क्षेत्रों को स्वच्छ बनाने के लिए 1999 में भारतीय सरकार द्वारा इससे पहले निर्मल भारत अभियान के रूप में शुरू किया गया। इसका मुख्य उद्देश्य ग्रामीणों को खुले में शौच करने की मजबूरी से रोकना है। इसके लिए सरकार ने 11 करोड़, 11 लाख शौचालयों के निर्माण के लिए एक लाख चौंतिस हजार करोड़ की राशि खर्च करने की योजना बनाई है।

ध्यान देने योग्य है कि सरकार ने कचरे को जैविक खाद और इस्तेमाल

करने लायक ऊर्जा में परिवर्तन करने की भी है। इसमें ग्राम पंचायत, जिला परिषद और पंचायत समिति की अच्छी भागीदारी है।

यह अभियान केंद्रीय मानव संसाधन मंत्रालय द्वारा चलाया गया है और इसका उद्देश्य भी स्कूलों में स्वच्छता लाना है। इस कार्यक्रम के तहत 25 सितंबर, 2014 से 31 अक्टूबर, 2014 तक केंद्रीय विद्यालय और नवोदय विद्यालय संगठन, जहां कई सारे स्वच्छता क्रिया—कलाप आयोजित किए गए जैसे विद्यार्थियों द्वारा स्वच्छता के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा, इससे संबंधित महात्मा गांधी की शिक्षा, स्वच्छता और स्वास्थ्य विज्ञान के विषय पर चर्चा, स्वच्छता क्रिया—कलाप हैं।

स्कूल क्षेत्र में सफाई, महान व्यक्तियों के योगदान पर भाषण, निबंध लेखन प्रतियोगिता, कला, फिल्म, चर्चा, चित्रकारी तथा स्वास्थ्य और स्वच्छता पर नाटक मंचन आदि हैं। इसके अतिरिक्त सप्ताह में दो बार—सफाई अभियान चलाया जाना जिसके द्वारा शिक्षा, विद्यार्थी और माता—पिता सभी हिस्सा लेंगे।

इस तहर कह सकते हैं कि 2019 तक भारत को स्वच्छ और हरा—भरा बनाने के लिए स्वच्छ भारत अभियान एक स्वागत योग्य कदम है। हम विश्वास के साथ कह सकते हैं कि अगर भारत की जनता द्वारा प्रभावी रूप से इसका अनुसरण किया गया तो आने वाले चंद वर्षों में स्वच्छ भारत अभियान से पूरा देश भगवान का निवास स्थल सा बन जाएगा। ❑

टीवी, रेडियो आदि प्रसारण माध्यमों से हमें सतत् स्वच्छता के लिए स्वच्छता अभियान बनाए रखना चाहिए। स्कूल में शिक्षण कार्य की शुरुआत पहले सफाई से होनी चाहिए। महीने में एक बार स्कूल में सफाई सप्ताह रखना चाहिए। गांव और शहर के रास्ते जगह-जगह सफाई कार्यक्रम की योजना होनी चाहिए। इसके कारण बच्चों में स्वच्छता के संस्कार आयेंगे और लोगों में स्वच्छता के बारे में जागृति होगी।

स्कूलों की शुरूआत ही सफाई से शुरू हो

◈ iVy ekuk edh'k dekj ग्यारहवीं
सेठश्री प्राणलाल हीरालाल बचकानीवाला, विद्या मंदिर
सूरत, गुजरात

हमारे जीवन में स्वच्छता का बहुत महत्व है। शरीर की सेहत के लिये स्वच्छता जरूरी है। हमारा देश छोटे–छोटे गांवों और शहरों से बना हुआ है। कई गावों में निरक्षरता तथा पढ़ाई के अभाव से गंदगी देखने को मिलती थी। अब स्वच्छता अभियान से गंदगी कहीं नहीं दिखती। लोगों ने गांवों में भी कूड़ा–कूड़ेदान में डालना शुरू किया है। गांवों में भी जगह–जगह पर कचरा पेटी रख दी गई है।

हमारे भारत देश में स्वच्छता अभियान की शुरुआत महात्मा गांधीजी ने की थी और आज नरेन्द्र मोदी जी हमोर बड़े प्रधान सेवक ने उस अभियान को सफलता दिलाई है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने स्वच्छता अभियान के लिए कई तरीके अपनाएं हैं। कई फायदे अमल में रखे हैं।

सरकार टीवी, रेडियो और समाचारपत्रों आदि के माध्यमों से स्वच्छता के विषय में जागृति लाने के लिए कई प्रयत्न कर रही है। ऐसे कार्यक्रमों के जरिए लोगों पर बहुत अच्छा असर होता है। हमारे देश में स्वच्छता के अनुसार कई स्लोगन तैयार किये हैं, जैसे की 'स्वच्छ भारत', 'सुंदर

भारत', 'स्वच्छता जहां प्रभुता', 'स्वच्छता चरित्रता' आदि। इन स्लोगन के जरिए लोगों में स्वच्छता अभियान में जागृति लाई जा सकती है।

स्वच्छ भारत के लिए भारत में जगह–जगह पर कूड़ेदान रखवाए गए हैं। भारत देश में सफाई के जरिए लोगों में जागृति लाई जा सकती है। स्वच्छता अभियान से हमारा भारत देश स्वच्छ होता जा रहा है। सामूहिक सफाई हमारे आसपास के विस्तार को स्वच्छ रखने का एक यज्ञ है। इस यज्ञकार्य में सब शामिल हों, यही अपेक्षा है।

देश में पवित्र नदियां हैं, ये पवित्र नदियां स्वच्छ नहीं थीं। श्री नरेन्द्र मोदी जी ने स्वच्छता अभियान से सारी नदियों को स्वच्छ करने का और रखने का प्रयास किया है।

स्वच्छ भारत बनाने के लिए और लोगों को जागृत करने के लिए रैली निकाली गई थी, सेमीनार आयोजित किए गये थे। इसी कारण लोगों में स्वच्छता के प्रति जागृति आई और लोग भी स्वच्छता अभियान से जुड़ गए। 'नई तालीम सफाई से शुरू होती है' यही सूत्र लोगों और बच्चों को पाठशाला में पढ़ाई की शुरुआत से पहले सिखाते हैं। अनेक कर्मचारी सफाई बरकार रखने के लिए काम पर लग जाते हैं।

गांधी बापू स्वच्छता को खूब मानते थे। बापू और उनके आश्रम के सारे लोग अपना काम खुद करते थे और सरस्वती आश्रम को वे खुद स्वच्छ रखते थे। गांधीजी ने 'स्वच्छता अभियान' को शुरूआत की थी। उन्होंने आगे बढ़कर 'स्वच्छता ही प्रभुता' का सूत्र दिया था।

देश में स्वच्छता के लिए सफाई को मुहिम चलाइ थी, कई लोगों ने स्वच्छ भारत के लिए बड़े–बड़े बैनर बनाए थे और स्वच्छता के बारे में समझाया था। लोगों ने रैली निकाली थी और आगे बढ़कर स्वच्छ भारत बनाने के लिए अपना योगदान दिया था। श्री नरेन्द्र मोदी जी ने गांवों को स्वच्छ बनाने के लिए गांवों में शौचालय बनवाये और सबको इस्तेमाल करने के लिए समझाया। गांवों और शहरों में अनेक हाई स्कूलों में शिक्षण कार्य के चलते शुरुआत में सफाई कार्यक्रम रखे गए थे इस कारण बच्चे भी स्वच्छता के बारे में समझे।

स्वच्छ भारत के लिए सफाई प्रवृत्ति में लोगों का भी साथ होना बहुत जरूरी है। सरकार को जगह–जगह पर स्वच्छता के लिए सुंदर सूत्र लिखकर लोगों में जागृति लाने का काम करना चाहिए। साफ–सफाई के बारे में जागृत होंगे तो ही स्वच्छता बरकरार रहेगी। स्वच्छता बनाए रखने के लिए हमें लोगों को सफाई और स्वच्छता के बारे में जागृत रखना पड़ेगा।

स्वच्छ भारत बनाने के लिए अणुव्रत की बहुत बड़ी भूमिका है। स्वच्छता रखने से वातावरण स्वच्छ रहेगा। इससे हमारा मन प्रफुल्लित रहेगा। स्वच्छता रखने से बीमारी पर अंकुश रहगी। लोग बीमार भी नहीं पड़ेंगे।

टीवी, रेडियों आदि प्रसारण माध्यमों से हमें सतत् स्वच्छता के लिए स्वच्छता अभियान बनाए रखना चाहिए। स्कूल में शिक्षण कार्य की शुरुआत पहले सफाई से होनी चाहिए। महीने में एक बार स्कूल में सफाई सप्ताह रखना चाहिए। गांव और शहर के रास्ते, जगह जगह सफाई कार्यक्रम की योजना चाहिए। इसके कारण बच्चों में स्वच्छता के संस्कार आयेंगे और लोगों में स्वच्छता के बारे में जागृति होगी।

संपूर्ण स्वच्छता के द्वारा सुघड़ और संस्कारी समाज का निर्माण हो स्कता है। जब एक समाज स्वच्छ बनेगा, तभी एक राष्ट्र स्वच्छ बनेगा और बाद में हमारा भारत देश स्वच्छ और सुघड़ बनेगा। ❑

अणुव्रत गीतों से स्वच्छता संदेश

◈ Ritu ग्यारहवीं
वैश्य मॉडल सी. सै. स्कूल
दादरी गेट, भिवानी, हरियाणा

अणुव्रत हमें नैतिकता, अनुशासन, शौर्य, सच्चाई व ईमानदारी की राह पर चलना सिखाता है। हम सबने अणुव्रत के कई गीत भी सुने हैं। उन गीतों से हमें यह संदेश मिलता है कि हम जो एक बार ठान लेते हैं वह हमें पूर्ण जरूर करना चाहिए। वैसे ही हमें यह ठान लेना चाहिए कि हमें हमारे देश को साफ-सुथरा व स्वच्छ बनाना है।

स्वच्छता हमारे जीवन में एक मूलभूत आवश्यकता है। 'स्वच्छ निर्मल भारत अभियान' सरकार द्वारा चलाया गया एक स्वच्छता मिशन है। यह अभियान 2 अक्टूबर, 2014 को महात्मा गांधी (बापू जी) के 145वें जन्मदिन के अवसर पर भारत सरकार द्वारा आधिकारिक तौर पर शुरू किया गया था। यह राजघाट, नई दिल्ली, जो कि महात्मा गांधी के अंतिम संस्कार का स्थान है राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने भारत की स्वतंत्रता से पहले अपने समय के दौरान, 'स्वच्छता आजादी से अधिक महत्वपूर्ण है' कहा था। उनके इस सपने को पूरा करने में हमारी 'अणुव्रत की भूमिका। समाज में भारत को स्वच्छता प्रदान करने में सिद्ध होनी चाहिए।

भारत को स्वच्छ निर्मल बनाने में सरकार द्वारा चलाई गई मुहिम से हम (2 अक्टूबर, 2014) पर महात्मा गांधी जी की पुण्य तिथि से शुरुआत करके पर गांधी जी के 150वें जन्मदिवस तक पूरा करने का लक्ष्य, संकल्प व अणुव्रत लेते हैं। हमारे साथ अणुव्रत की इस भूमिका को निभाने में सचिन तेंदुलकर, प्रियंका चोपड़ा, अनिल अंबानी, बाबा रामदेव,

सलमान खान, शशि थरूर 'तारक मेहता का उल्टा चश्मा' की टीम, मृदुला सिंहा, कमल हासन, विराट कोहली, महेन्द्र सिंह धोनी, आदि ने पूरा सहयोग दिया है।

यह एक राजनीति मुक्त अभियान है और देशभक्ति से प्रेरित है। यह प्रत्येक व्यक्ति की जिम्मेदारी है और स्वच्छ देश बनाने के लिए हर भारतीय नागरिक की भागीदारी की आवश्यकता है। शिक्षक और स्कूलों के विद्यार्थी भी इसमें पूर्ण उत्साह और उल्लास के साथ भागीदारी दे रहे हैं।

हमें भी उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्रीमान् योगी जी से प्रेरित होकर पान चबाकर, गुटका व तंबाकू चबाकर जगह–जगह थूकने वाले लोगों के ऊपर सख्त कदम उठाने चाहिए। क्योंकि जगह–जगह थूकने, जगह–जगह मलमूल करने आदि से अस्वच्छता बनती है जोकि नहीं होना चाहिए।

यह भारत के सभी नागरिकों के लिए बड़ी चुनौती है। अब भारत में रहने वाला प्रत्येक व्यक्ति इस कार्य में अपनी जिम्मेदारी को समझे और स्वच्छता के मिशन को सफल बनाने के लिए एक साथ होकर चले। अणुव्रत इसमें अपनी भूमिका निभा रहा है। इसलिए अणुव्रत की राह पर चलते हमें भी एक कदम स्वच्छता की ओर अवश्य बढ़ाना चाहिए।

भारत में स्वच्छता बनाए रखने के लिए कई कार्यक्रम, जैसे, 'स्वच्छ भारत रन', 'स्वच्छ भारत एप्स', 'रियल टाईम मॉनिटरिंग सिस्टम', 'भारत लघु फिल्म', 'स्वच्छ भारत नेपाल अभियान' आदि इस मिशन के उद्देश्य को सक्रियता से समर्थन करने के लिए प्रारंभ और लागू किये गये। कुछ निम्न उल्लेखनीय बाते हैं जो 'स्वच्छ भारत, सुंदर भारत अभियान' की आवश्यकता को दिखाते हैं।

- यह बेहद जरूरी है कि भारत के घर–घर में शौचालय हों तथा खुले में शौच की प्रवृत्ति को भी खत्म करने की आवश्यकता है।
- खुद के स्वास्थ्य के प्रति भारत के लोगों की सोच और साफ–सफाई की प्रक्रिया का पालन करना।

- जगह–जगह थूकने, मलमूत्र करने, सिगरेट पीने और अस्पतालों आदि जगह पर खुले पानी को न छोड़ना क्योंकि इससे डेंगू व मलेरिया के मच्छर पनपते हैं।
- अपने आस–पड़ोस में, घर में, गलियों आदि में स्वच्छता पर पूर्ण ध्यान देना चाहिए। क्योंकि लोग घरों के आसपास कूड़े आदि का ढेर लगा देते हैं।
- स्वच्छता बनाए रखने के लिए जगह–जगह, गली–गली, मौहल्ले–मौहल्ले, शहर–शहर जाकर स्वच्छता का प्रसार करना चाहिए ताकि लोग स्वच्छता मिशन में पूर्ण रूप से अपनी भागीदारी निभाएं। अगर बूढ़े, बच्चे और युवा भी इसमें अपनी भागीदारी दे सकते हैं तो आप भी यह कर सकते हैं।

अणुव्रत हमें नैतिकता, अनुशासन, शौर्य, सच्चाई व ईमानदारी की राह पर चलना सिखाता है। हम सबने अणुव्रत के कई गीत भी सुने हैं। उन गीतों से हमें यह संदेश मिलता है कि हम जो एक बार ठान लेते हैं वह हमें पूर्ण जरूर करना चाहिए। वैसे ही हमें यह ठान लेना चाहिए कि हमें हमारे देश को साफ–सुथरा व स्वच्छ बनाना है। अणुव्रत के सहयोगियों ने भी सरकार का साथ देकर उन्हें आर्थिक रूप से स्वच्छता के लिए अभियान चलाने में सहयोग दिया है।

हमें अणुव्रत की पंक्तियों में भी स्वच्छता के बारे में कई बाते मिलेंगी, इसलिए हमें भी अणुव्रत की स्वच्छता में भूमिका को समझकर उसको सहयोग देना चाहिए। हमें हमारे चारों ओर स्वच्छता बनाए रखनी चाहिए। हमें ही नहीं बल्कि पूरे देश को यह संकल्प लेना चाहिए कि हम सब अपने देश को स्वच्छ बनाए रखने के लिए हर तरह का सहयोग प्रदान करेंगे। देश को अनुशासनपूर्ण रहते हुए पूरी स्वच्छता प्रदान करेंगे। हम सब स्वच्छ भारत बनाए रखने के लिए एक कदम स्वच्छता की ओर अवश्य बढ़ाएंगे। ❑

ENGLISH

Anuvrat does not interfere in religious beliefs

◈ **Radha Verma** IX
Gyankalash International School
Saharanpur, U.P.

Anuvrat has already created a deep impact on Indian society. It has been warmly welcomed by all sections of people. On account of the strong support from the masses it has emerged as a national campaign for the regeneration of moral and spiritual values. The main reason of the popular support lies in its thoroughly non-sectarian approach.

Cleanliness is a clean habit which is very necessary to all of us. Cleanliness is a habit of keeping ourselves physically and mentally clean including our home, pet animals, surroundings, environment, pond, river, school, etc. We should keep ourselves neat, clean and well dressed all the time. We should maintain the environment and natural resources. Cleanliness together with our body cleanliness is to make the possibility of life forever on the earth. Anuvrat not only aims at character building and internal purification but also works towards creating a clean and green environment outside. The 11th vow is Anuvrat code of conduct also says this, “I shall remain vigilant towards the problem of environment”. To spread this message forward Anuvrat Organization Delhi participated in a cleanliness drive.

Anuvrat has already created a deep impact on Indian society. It has been warmly welcomed by all sections of people. On account of the strong support from the masses it has emerged as a national campaign for the regeneration of moral and spiritual

values. The main reason of the popular support lies in its thoroughly non-sectarian approach.

Anuvrat does not interfere in a person's individual religious beliefs.

Anuvrat movement was started by late Acharya Tulsi (9th Acharya of Terapanth) In this movement, people willingly take pledge that:

1. I will not take part in agitations or in any destructive activities.
2. I will always be alert to the problems of keeping the environment pollution-free.

Prime Minister Narendera Modi launched his nation wide cleanliness campaign, the "Swachh Bharat Mission" or 'Clean India Campaign' from the Valmiki Basti in New Delhi on 2nd October, 2014. Addressing the nation at the launch, Modi asked India's 1.25 billion people to join the 'Swachh Bharat Mission' and promote it to everyone. After praying tribute at the memorials of Mahatma Gandhi and former Prime Minister Lal Bahadur Shastri on their birth anniversaries, Modi himself swept a pavement at Valmiki Basti with sanitation workers before the formal launch of the 'Clean India' drive at Rajpath.

Around 2700 students from 44 government schools read from the 'pledge paper' along with the Prime Minister at India gate and also took part in a 3 km long 'walkathan' which would be held as a part of the launch of the cleanliness mission. In order to lead a healthy and hygienic life cleanliness is one of the most important aspects that should be inculcated in our daily life.

We should motivate ourselves to cleanliness in order to radiate it to our surroundings as it is the need of the hour. Most of the diseases in India are caused due to dirty or unhygienic surroundings. The government has taken a good initiative through "Swachh Bharat Mission". But most importantly it should motivate the citizens to follow a cleanliness routine or we can say that cleanliness should be fundamental responsibilities of every citizen. ❑

Sanitation is more important than independence

◈ **Radhika Meena** VII
Stanford International School
Ujjain (M.P.)

The basic goals behind launching the Swachh Bharat Mission are to make the country full of sanitation facilities as well as eliminate all the unhealthy practices of people in daily routines. The first cleanliness drive in India was started on 25th of Sept., 2014 by the Prime Minister, Narendra Modi by cleaning the road.

The father of the nation, Mahatma Gandhi had said that, "Sanitation is more important than independence during his time before the independence of India. He was well aware of the bad and unclean situation of the India. He had emphasized the people of India a lot about the cleanliness and sanitation as well as its implementation in the daily lives. However, it was not so effective and failed because of the incomplete participation of people. After many years of independence of India, a most effective campaign of cleanliness is launched to call people for their active participation and completed mission of cleanliness.

The president of India, Pranab Mukherjee has said in June, 2014 while addressing the parliament that, "For answering hygiene, waste management and sanitation across the nation a Swachh Bharat Mission will be launched. This will be our tribute to Mahatma Gandhi on his 150th birth anniversary to be celebrated in the year 2019". In order to fulfill the vision of Mahatma Gandhi and make India an ideal country all over the world, the Prime

Minister of India, Narendra Modi has initiated a campaign called Swachh Bharat Abhiyan on the birthday of Mahatma Gandhi (2nd of Oct., 2014). This campaign has the target of mission till campaign the target of mission till 2019 means 150th birthday anniversary of the Mahatma Gandhi.

Through this campaign the government of India would solve the sanitation problems by enhancing the waste management techniques. Clean India movement is completely associated with the economic strength of the country. The birth date of Mahatma Gandhi is targeted in both the launch and completion of the mission.

The basic goals behind launching the Swachh Bharat Mission are to make the country full of sanitation facilities as well as to eliminate all the unhealthy practices of people in daily routines. The first cleanliness drive in India was started on 2nd October, 2014 by the Prime Minister, Narendra Modi by cleaning the road.

The completion of the mission would indirectly draw the attention of business investors in India. It will enhance the GDP growth, draw tourist attention from all over the world, bring variety of sources of employment, reduce health cost, reduce cloth rate and reduce lethal disease rate and many more to clean India. This would bring more tourists and enhance its economical condition. The Prime Minister of India has requested to all Indians to devote their 100 hours per of year for the cleanliness of India which is very sufficient to make this country a clean country by 2019. Swachh Bharat Mission is also started to get some fund for this campaign.

U.P. C.M. Yogi Adityanath has also started a cleanliness drive in 2017 in Uttar Pradesh to ensure cleanliness in the official buildings. According to this, he has banned eating Paan, Gutkha and other tobacco products in the government offices. ❑

Anuvrat states that everyone is inter-dependent

◈ **Ishika** X
M.G.M.H.S. School
Bokaro, Jharkhand

Swachh Bharat Abhiyan is related to Anuvrat Movement. This abhiyan has all its aims related to caring environment. Pure environment can be created only by an ideal nation. An ideal nation is one which works with a coordination in every area. Hence, India is working in a coordination to create global awareness among common public.

Anuvrat movement is a moral movement emphasizing character development through self-effort. It was organized by Acharya Tulsi, one of the religious leaders of Jainism. It was launched in 1949 in Rajasthan.

There was a set of 11 vows which were formed after the nuclear bomb attacks in Japan in 1945. The aim of the movement is to develop a healthy society, pure environment, an ideal nation followed by peace. One of the principles of this movement is to divert humankind from the path of destruction. It always wants to inculcate non-violent thinking and behavior in human.

The 11th and the last vow is related with nature. It states that one should be alert to prevent pollution and dirt in the environment. No one will cut tress and waste water. All living beings render services to each other. Each and everything in this is linked and is interdependent. One who neglects earth, air, fire, water and vegetation neglects his own existence. Hence, the 11th and the last vow stresses the need to preserve the environment.

It was long time back when Anuvrat was organized but today also it has a great impact.

Today, also various types of initiatives and movements have started to protect our environment. One such movement is ‘Swachh Bharat Abhiyan’ or ‘Clean India Mission’. It is a national level campaign. It was launched and initiated by Hon’ P.M. Narendra Modi on 145th birth anniversary of ‘father of the Nation’ Mahatma Gandhi, on 2nd October, 2014 at Rajghat, New Delhi. This was launched flowing the same 11th vow of Anuvrat, this aims to make a clean and beautiful India by 2nd October, 2019.

It will be 150th birth anniversary of Mahatma Gandhi. It was a campaign inspired by patriotism. The father of the nation always used to say “Sanitation is more important than Independence”.

Anuvrat states that everyone is interdependent. If humans will cooperate the nature and the environment in return they will also benefit mankind. Anuvrat’s 11th vow was adopted after the drastic destruction during world war in which Japan’s Hiroshima and Nagasaki were ruined. If humans will not take care of cleanliness, safety, happiness, goodness of environment in return it will definitely ruin the whole universe.

Swachh Bharat Abhiyan is related to Anuvrat Movement. This abhiyan has all its aims related to caring environment. Pure environment can be created only by an ideal nation. And an ideal nation is one which works with a coordination in every area. Hence, India is working in a coordination to create global awareness among common public. It is to bring the dream of ‘Bapu’ to really come true.

A person of any caste, religion, creed or background could be an Anuvrati a follower of the Anuvrat Movement. The same situation goes with this clean India Movement. Everyone’s support

is needed to make a clean and green India. And with cleanliness only purity of mind and soul can be achieved.

There is a saying “cleanliness is next to Godliness. Hence, by following this Anuvrat saying we can surely bring godliness to our country in few years. So, the cleanliness activities will give warm welcome to the godliness in everyone’s lives forever. A healthy country and a healthy environment need its citizens to be healthy and clean in every walk of life.

“We have to be keen to make India Clean”

India is our identity and we have to keep our identity clean. ❑

Anuvrat is playing a critical role in making India clean by purifying the soul of Indian people. Anuvrat lays emphasis on the fact that an individual should endeavor to preserve the purity of his life and character. Literally, it means small vows. When Anuvrat would achieve success in cleaning the hearts of Indians then it could easily sweep out the unhygienic condition from our country to make a healthy and happy state.

Anuvrat is playing an important role in making India clean

◈ **Kesar Srivastawa** XI
Kamal Public School,
D-Block Vikaspuri N.Delhi

Nature is perennial, so is human nature. It consists of different habits at the back of which are elements like anger, vanity, deceit and greed. God as well as evil are eternal. Only their forms keep changing. When objects and worldly phenomena change then why man does not change. Anuvrat is the philosophy of change. Its sole purpose is to enable man to introspect, understand his own nature and to make efforts to transform it.

Anuvrat is playing a critical role in making India clean by purifying the soul of Indian people. Anuvrat lays emphasis on the fact that an individual should endeavor to preserve the purity of his life and character. Literally, it means small vows. When Anuvrat would achieve success in cleaning the hearts of Indians then it could easily sweep out the unhygienic condition from our country to make a healthy and happy state.

The country will then be referred as an independent state free of all crimes and insanitary conditions because as Mahatma Gandhi said, “When there is both inner and outer cleanliness, it approaches godliness”.

“A clean India would be the best tribute, India could pay to Mahatma Gandhi on his 150th birth anniversary in 2019”, said Narendra Modi as he launched the Swachh Bharat Mission at Rajpath in New Delhi. While leading the mass movement for cleanliness, the Prime Minister exhorted people to fulfill Mahatma Gandhi’s dream of a clean and hygienic India.

So, when this movement can do this much in beautifying India then Anuvrat can go a long way ahead and make India a beautiful place. The vows of Anuvrat also support the ‘Clean India Movement. Anuvrat along with Mahatma Gandhi’s dream is enough to make India a heaven.

> *‘Fight with yourself, why fight with external foes?*
> *He, who conquers himself through himself, will obtain happiness.”*
>
> *—says ‘Anuvrat’*

Any person by becoming an Anuvrati can attain spiritual enlightenment and obtain the happiness of the world by cleaning his soul of all impurities. Accordingly, an anuvrati is he or she who does not participate in destructive violence, believes in religious tolerance, does not fuel the flames of violence and hatred in a country, does not support separatist tendencies. An anuvrati can be anyone. Who does not cost aspersions against an individual, class or a religious belief. Any person who does not use drugs and alcohol, does not consider an individual low or high on grounds of caste, colour, creed and sex, does not resort to immoral practices in elections and does not regard anyone untouchable can be an anuvrati. For example, an anuvrati student will not use unfair means to pass an examination. An anuvrati teacher will not declare a student

successful by unfair means, an anuvrati businessman will not resort to adulteration.

He will also not indulge in the sale of counterfeit goods. An anuvrati employee will not accept bribes, an anuvrati officer will not abuse his authority, an anuvrati labourer will not play traunt from his work, an anuvrati farmer will not treat his animals cruelly nor will he indulge in hoarding and an anuvrati legislator will not indulge in horse trading. These people with their full determination can surely clean our country India.

> *All human beings are miserable due to their own faults, and they themselves can be happy by correcting these faults."*
>
> *—Acharya Tulsi*

Some problems that have really troubled our mother India since centuries are violence and discrimination. This is due to the fact that human beings are miserable and this misery when blended with jealousy erupts out as violence. Therefore, to solve this problem lord Mahavira suggested.

> *"If you cannot give up violence altogether, at least don't willfully kill men, animals etc."*

Anuvrat does not demand more than this, even though it aims at much more. Both from the ecological and a heallty society's points of view, Anuvrat of Non-violence is extremely important. Violence assumes many forms, one dangerous form being hatred. After violence, comes the problem of religious discrimination.

Therefore Anuvrat comes forth with a new outlook. It gave the concept of religion free from sectarianism. It is not Jainism, Buddhism, Islam or Christianity. It is a religion without denomination. So one can inherit the vows of Anuvrat and can help to make India clean.

Basically, Anuvrat is purifying our self first and then make our

surroundings clean. Once our fellow Indians would become free of violence, greed, etc it would take no time to make India a calm, peaceful and serene place. The country will be cleaned in all the dimensions-social and hygiene.

Thus efforts at building individual character free of any dirt are of basic importance. The dream of social and national reconstruction is entirely dependent on individual reform. Therefore, Acharya Tulsi correctly opines

"Every soul is independent. None depends on another." ❑

Swachh Bharat Abhiyan is a national cleanliness campaign established by the Government of India. This campaign is covering 4041 statutory towns in order to clean roads, streets and infrastructure of India. It is a mass movement that has run to create a clean India by 2019. It is a step ahead to Mahatma Gandhi's dream of Swachh Bharat for healthy and prosperous life.

Swachh Bharat Mission is a necessary step

◈ **Vanshika** XI
Bhiwani Public School
Sec. 14, Bhiwani, Haryana

"If this is evaluated by a photo-opportunity, then we would be doing a disservice to the nation. We all must come together and do this mission of clean India wherever we are."

Swachh Bharat Abhiyan is started by the government to make India a completely clean India. Clean India was a dream seen by Mahatma Gandhi regarding which he said that, "Sanitation is more important than Independence". During his time he was well aware of the poor and dirty conditions of the country. That's why he made various efforts to complete his dreams, however could not be successful. As he dreamt of clean India a day, he said that both cleanliness and sanitation are integral parts of healthy and peaceful living.

Unfortunately, India became lack of cleanliness and sanitation even after 67 years of Independence. According to the statistics, it has seen that only few percentage of total population have access to the toilets. It is a programme run by the government to seriously work to fulfill the vision of father

of the nation by calling the people from all walks of life to make it success globally.

Swachh Bharat Abhiyan is a national cleanliness campaign established by the Government of India. This campaign is covering 4041 statutory towns in order to clean roads, streets and infrastructure of India. It is a mass movement that has run to create a clean India by 2019. It is a step ahead to Mahatma Gandhi's dream of Swachh Bharat for healthy and prosperous life. This mission was launched on 2nd of October, 2014 by targeting its completeness in 2019 on 150th birth anniversary of Bapu. The mission has been implemented to over all the rural and urban areas of the India under the ministry of urban development and the ministry of drinking water and sanitation accordingly.

Swachh Bharat Mission is very necessary to run continuously until it gets its goal. It is very essential for the people in India to really get the feeling of physical, mental, social and intellectual well being. It is to make living states advance in India in real meaning which can be started by bringing all over cleanliness. Below I have mentioned some points proving the urgent need of Swachh Bhaarat Abhiyan in India.

- It is really very essential to eliminate the open defecation in India as well as making available toilets facility to everyone.
- It is needed in India to convert the insanitary toilets into flushing toilets.
- It is necessary in order to eradicate the manual scavenging.
- It is to implement the proper waste management through the scientific process, hygienic disposal, reuse and recycling of the municipal solid wastes.
- It is to bring behavioral changes among Indian people regarding maintenance of personal hygine and practice of healthy sanitation methods.

- It is to create global awareness among common public living in rural areas and link it to the public health.
- It is to bring private sector participation to develop sanitary facilities all through India.
- It is necessary to improve the quality of life of people in rural areas.
- It is to bring sustainable sanitation practices by motivating communities and panchayati raj institutions through the awareness programmes like health and education.
- It is to bring the dream of Bapu to really come true.

Anuvrat not only aims at character building and inter purification but also works towards creating a clean and green environment outside. The 11th vow of Anuvrat code of conduct also says this. “I shall remain vigilant towards the problem of environment.”

- We should invite the people to clean up along with us and upload videos of social media.
- This work is the responsibility of the people of India. It is not the work of a minister or NGS alone, but of the common man.

Pledge

- Mahatma Gandhi dreamt of an India which was not only free but also clean and developed.
- Mahatma Gandhi secured freedom for mother India.
- Now it is our duty to serve mother India by keeping the country neat and clean.
- I take this pledge that I will remain committed towards cleanliness and devote time for this.

I will devote 100 hours per year that is two hours per week to voluntary work for cleanliness.

I will neither nor let others litter. I will initiate the quest for cleanness with myself, my family, my locality, my village and my work place.

I believe that the countries of the world that appear clean are so because their citizens don’t indulge in littering more than they allow it to happen with this firm belief, “I will propagate the message of Swachh Bharat Mission in villages and towns.”

I will encourage 100 other persons to take this pledge which I am taking today.

I will endeavour to make them devote their 100 hours for cleanliness. I am confident that every step I take towards cleanliness will be helping in making my country clean. ❑

Cleanliness makes us healthy

People from different sections of the society have come forward and joined this mass movement of cleanliness from government officials to jawans, bollywood actors to the sports persons, industrialists to spiritual leaders, all have lined up for the noble work.

◈ **Priya** VIII
Govt. Girls' Sr. Sec. School
Sonia Vihar, Delhi

Swachh Bharat Abhiyan— "A clean India would be the best tribute India could pay to Mahatma Gandhi on his 150th birth anniversary in 2019," said Shri Naendra Modi as he launched the Swachh Bharat mission at Rajpath in New Delhi. On 2nd October, 2014, Swachh Bharat Mission was launched throughout length and breadth of the country as a national movement. While leading the mass movement for cleanliness, the Prime Minister exhorted people to fulfill Mahatma Gandhi's dream of a clean and hygienic India. Shri Narendra Modi himself initiated the cleanliness drive at Mandir Marg Police Station. Picking up the broom to clean the dirt making Swachh Bharat Abhiyan a mass movement across the nation, the Prime Minister said people should neither litter, nor let others litter. He gave the mantra of "Na gandagi karunga, na karne dunga', Shri Narendra Modi also invited nine people to join the cleanliness drive and requested each of them to draw nine more into the initiative.

By inviting people to participate in the drive, the Swachh Bharat

Abhiyan has turned into a national movement. A sense of responsibility has been worked among the people thorough the clean India movement with citizens now becoming active participants in cleanliness activities across the nation, the dream of a clean India once seen by Gandhiji has begun to get a shape.

The Prime Minister has helped spread the message of Swachh Bharat Abhiyan by urging people through his words & action. He carried out a cleanliness drive in Varansi as well. He wielded a spade near River Ganga at Assi Gath in Vanarashi under the clean India mission. He was joined by a large group of local people who cooperated in the Swachhata Abhiyan understanding the significance of sanitation. Prime minister Shri Narendra Modi has simultaneously addressed the health problems that Indian families have to deal with due to lack of proper toilets in their homes.

People from different sections of the society have come forward and joined this mass movement of cleanliness from government officials to jawans, bollywood actors to the sports persons, industrialists to spiritual leaders, all have lined up for the noble work. Millions of people across the country have been, day after day, joining the cleanliness initiative of the government department, NGOs and local community centers to make India clean organizing frequent cleanliness campaigns. To spread awareness through plays and music is also being widely carried out across the nation.

'Beta-beti, ek samaan'. Let us celebrate the birth of a girl child. We should be equally proud of our daughters. PM Narendra Moti said to citizens of his adopted village Jayapur "I urge you to sow five plants when your daughter is born, celebrate the occasion." Beti Bachho Beti Padao (BBBP) was launched by the Prime Minister on January, 2015 at Panipat, Haryana. BBBP addresses the declining child sex ratio (CSR) and related issues of women empowerment over a life-cycle continuum. It is a tri-ministerial effort of ministries of women and child development, health & family welfare and human resource development. ❑

Cleanliness is next to Godliness

Anuvrat not only aims at character building and internal purification but also works towards creating a clean and green environment outside. The 11th vow of Anuvrat code of conduct also says this, I shall remain vigilant towards the problems of environment.

◈ **Titiksha Patidar** VIII
The Emerald Heights School
Indore, M.P.

Cleanliness is next to godliness means cleanliness leads the way to godliness or good government and social organizations are working hard for making clean India. In order to achieve the clean India goal, Anuvrat Nyas, Delhi, played a vital role.

Clean India program by government of India

Sanitation campaigns by government of India officially started on 1st April, 1999, the comprehensive rural sanitation programme which was later renamed “Nirmal Bharat Abhiyan” on 1st April, 2012. After this on 2nd October, 2014, Government of India launched “Swachh Bharat Abhiyan” (Clean India Mission). It is a campaign to clean the streets, roads and infrastructure of the country’s 4041 statutory cities and towns. There are lots of ideas, philosophies, NGO’s and societies playing an important role in making clean India. One of these philosophies which is playing very vital role in clean India is Anuvrat.

What is Anuvrat?

Anuvrat means nirvratha. This is for family persons. The main plank of the philosophy of Anuvrat is building individuals character. It is the individual who manages a program, institution, social group or nation.

Anuvrat Lifestyle

The elements of the atomic elements are as follows—

1. Sensitivity to the existence of others.
2. Human unity.
3. Co-existence, development of emotion.
4. Communal harmony.
5. Non-violent resistance.
6. Limit of personal collection and use.
7. Authenticity is practice.
8. Belief, neutral and truthful.

Anuvrat code of conduct

There are lots of conducts in Anuvrat which are related to social, economical and individual development. Some of them are related to environment and cleanliness They say:

1. I will be aware of the problems of the environment
2. I will not cut green trees.
3. I will not waste water, etc.

The Role of Anuvrat in making clean India

There are so many thoughts popular in India, one of them is Anuvrat. Acharya Tulsi founded Anuvrat in 1949. Anuvrat guided not only the Jain community but also the whole India. Anuvrat takes oath from all the people not to spread pollution by any way. It is also written in Anuvrat code of conduct and lifestyle. So the

contribution of Anuvrat is very high in saving and cleaning the environment and play a vital role in clean India movement.

The clean India movement was first started from the Champaran movement by Gandhiji and recently Narendra Modi started it again but Anuvrat started a long time back. The clean India movement can be classified into 2 parts— the external clean India movement and the internal clean India movement. Nobody cares about the internal clean India movement but Anuvrat is the only institution which is trying to clean the inner dirtiness, inner litter and inner garbage from the minds and hearts of the people. The minds of the student especially from class 5th to 8th is like raw materials which can be given the shape and this shape becomes the leading part of Indian society. So Anuvrat inculcates lot of things to clean inner dirtiness in the mind and heart. Through Anuvrat many competitions are organized at national, state and regional levels. So all the students as well as teachers are joined and they try to clean their inner dirtiness.

Anuvrat not only aims at character building and internal purification but also works towards creating a clean and green environment outside. The 11th vow of Anuvrat code of conduct also says this, I shall remain vigilant towards the problems of environment.

There were hundreds of volunteers from different organization to clean this vast green belt located near Indrapuram. Government departments, NGO's and volunteers along with Anuvrat Nyas took part to clean the space of Indrapuram and give their valuable contribution in clean India Movement.

Conclusion

Cleanliness is next to godliness proved by government of India from clean India movement and the Anuvrat philosophy of Jainism played a vital role in this movement. ❑

Cleanliness is a good habit

◈ **Shrushti Jain** X
Shri R.K. Daga Maheswari Academy
Indore, M.P.

Swachh Bharat Mission has two components. The urban component will be for about 4,000 towns for 5 years. Expected cost is ₹62,000 crore. The center will assist with about ₹15,000 crore. This part of the mission will work with the ministry of urban development.

Swachh Bharat campaign is a well thoughtout idea. It is the high time, we implemented it. Swachh Bharat is the program and campaign initiated by the Prime Minister, Shri Narendra Modi on day 2nd Oct., 2014. Mr. Modi himself had cleaned a road in Delhi to initiate the campaign.

It was started to realize the dream of Mahatma Gandhi of clean India. Gandhiji used to give a lot of importance and attention to cleanliness and hygiene. Swachh Bharat Mission has two components. The urban component will be for about 4,000 towns for 5 years. Expected cost is ₹62,000 crore. The center will assist with about ₹15,000 crore. This part of the mission will work with the ministry of urban development.

If all young and adult citizens keep their surroundings clean, then diseases will not spread anymore. Our house, our locality and country will look more beautiful.

The Anuvrat Nyas is a self help group that aims at establishing itself all over India and is presently located in Delhi.

The Nyas was formed primarily to deal with internal purification and character building of individuals, and today, it has also participated in creating a clean and green environment.

On 26th March, 2017, hundreds of volunteers gathered together from different organizations to clean the vast green belt located near Indirapuram in Delhi. It is a self group that focuses on the sanctification and purification of individuals. It intended to help build the character of Individual.

The activity of the group included in a green belt in an area in Delhi. In the matters of cleanliness waste disposal waste recycling and protection of ourselves, we are much behind the western countries.

If we maintain India clean in villages, slums and crowded areas, the money spent on diseases, medicines, hospitals and for treatment will be saved for the benefit of home and for the nation. Actually cleanliness is the social responsibility of every citizen and resident. It will improve the financial status of the government too. Clean India campaign will spread the awareness of ways of maintaining cleaniness among the poor and the careless.

Anuvrat is helping more in Swachh Bharat Mission by developing the toilets of villages, cleaning the environment and surrounding. They are helping in making people of India awaken and given tips for the awareness of the clean environment and disease free environment. They are going at many places and cleaning the streets by themselves. They are planting more and more trees. They are organising many programmes and competition like poem writing, essay writing, singing competition and awareness. The main objective of this organization is not only to help in Swachh Bharat Mission but in the development of whole India and better India.

Individuals in the west, Singapore and China, have gradually acclimated themselves to be trained about waste. They never forget doing their part in keeping their social orders clean. In Japan, residents likewise take self activities and clean their areas in turns. Such is the resolve of Individuals outside India towards the nations.

An educated activity by the general population will go for even keeping the issue from deteriorating. This, nonetheless, requires adjustment in our mentality and an adjustment in our disposition. Cleanliness is a good habit which is very necessary to all of us. We should learn from our parents about how to keep ourselves and surroundings neat and clean. ❑

The basic goal behind launching the Swachh Bharat Mission is to make the country full of sanitation facilities as well as eliminate all the unhealthy practices of people in daily routines. The first cleanliness drive in India was started on 25th of September in 2014 and first initiated by the Prime Minister, Mr. Narendra Modi by cleaning the roads.

Clean India would bring more tourists

◈ **Chameli Sahu** VIII
Genesis Grammar High School
Bolarum, Telangana

The father of the nation, Mahatma Gandhi had said, “Sanitation is more important than independence” during his time before the independence of India.

He was well aware of the bad and unclean situation of the India. He had emphasized the people of India a lot about the cleanliness and sanitation as well as its implementation in the daily lives.

However, it was not so effective and failed because of incomplete participation of people. After many years of independence of India, a most effective campaign of cleanliness is launched to call people for their active participation and complete the mission of cleanliness.

The president of India, Pranav Mukherjee has said in June, 2014 while addressing the parliament that for ensuring hygiene, waste management and sanitation across the nation a Swachh Bharat Mission will be launched.

This will be our tribute to Mahatma Gandhi on his 150th birth anniversary to be celebrated in the year 2019.”

In order to fulfill the mission of Mahatma Gandhi and make India an ideal country all over the world the Prime Minister of India has initiated a campaign called Swachh Bharat Abhiyan on the birthday of Mahatama Gandhi (2nd October, 2014). This campaign has the target of completion of mission till 2019 means on the 150th birth anniversary of Mahatma Gandhi.

Through this campaign the government of India would solve the sanitation problems by enhancing the waste management techniques.

Clean India movement is completely associated with the economic strength of the country. The birth date of the Mahatma Gandhi is targeted in both, the launch and completion of the mission.

The basic goal behind launching the Swachh Bharat Mission is to make the country full of sanitation facilities as well as eliminate all the unhealthy practices of people in daily routines. The first cleanliness drive in India was started on 25th September, 2014 and first initiated by the Prime Minister, Mr. Narendra Modi by cleaning the roads.

The completion of this mission would indirectly draw the attention of business investors is India, enhance the GDP growth, draw tourist attention from all over the world, leaving variety of sources of employment, reduce health costs, reduce death rates, and reduce lethal disease rate and many more. Clean India would bring more tourists and enhance its economical condition.

The Prime Minister of India has requested to all Indians to devote their 100 hours per years sufficient to make their country a clean country by 2019. Swachh Bharat cess is also started to get some funds for this campaign.

Everyone has to pay extra 5% tax (50 paise per 100 rupees) on all the services in India. UP CM Yogi Adityanath has also started a cleanliness drive in 2017 in Uttar Pradesh to ensure cleanliness in the official buildings. According to this, he has banned eating paan, gutka and other tobacoo products in the government offices. ❑

Cleanliness is necessary

◈ **Anushree Apurba Chakraborty** XII
LAD College
Shankar Nagar, Nagpur (MH)

An educated activity by the general population will go far in any event keeping the issue from deteriorating. This nonetheless, requires an adjustment in our mentality and an adjustment in our disposition. Cleanliness makes us healthy in every aspect like mental, physical, social and intellectual.

Anuvrat not only aims at character building and internal purification but also works towards creating a clean and green environment outside. The 11th vow in Anuvrat code of conduct also says this: “I shall remain vigilant towards the problems of environment”. To spread this message forward Anuvrat Nyas Delhi participated in a cleanliness drive organized by DM Nidhi Kesarwani, Indrapuram on 26th March from 8 am onwards.

Volunteers

There were hundreds of volunteers from different organizations to clean this vast green belt located near Indirapuram P.S. apart from the municipal corporation, police and local authorities NGO’s Green brigade & Suraksha Muhim. People got to know about the ideologies on which anuvrat is based and appreciated the work being done further this movement. Anuvrat magazines were distributed to distinguished personalities present.

Importance of cleanliness

Cleanliness is a clean habit which is very necessary to all of us. Cleanliness is a habit of keeping ourselves physically and mentally clean including our home, pet animals, surroundings, environment, ponds, rivers, schools, etc. We should keep ourselves neat, clean and well dressed all the time. It helps in making a good personality and impression in the society as it reflects a clean character. We should maintain the environment and natural resources (water, food, land etc) clean together with our body cleanliness in order to make the possibility of life existence forever on the earth.

Cleanliness makes us healthy in every aspect like mental, physical, social and intellectual. Generally, we all are noticing in our homes that our grandmothers and our moms are very strict about the cleanliness before worship, it is not another thing, they just try to make cleanliness our habit. But they all follow the wrong way as they ever describe us the benefits and purpose of cleanliness. That's why we get problems in following the cleanliness. Every parent should logically describe and discuss their kids about the benefits, purpose, necessity, etc, of the cleanliness. They must tell us that cleanliness is the first and foremost thing in our lives like food and water.

We should always take care and observe our personal and surrounding cleanliness to make our future bright and healthy. We should take bath with soap, cut our nails, and wear well washed and pressed clothes on daily basis. We should learn from our parents about how to keep home neat and clean. We should not make our surrounding areas dirty as it spreads many diseases. We should wash our hands with soap every time before we got to eat something. We should drink safe, pure, clean and well purified water all through the day. We should never take junk foods, stale foods or other readymade liquids.

Individuals in the west, Singapore and China, have gradually acclimated themselves to be trained about waste. They never forge doing their part in keeping their social orders clean. In Japan, residents likewise take self-activities and clean their areas in turns. Such is the resolution of Individuals outside India towards their nations.

To stop uses of plastic bags

Because of the degree of our people, our unwillingness to stop plastic, and our thirst to advance rapidly without responsibility, the measure of waste we make has achieved bizarre extends.

The mayhem is such, that notwithstanding paying privately owned business to settle this issue appears to be in vain. Since it's the way, the waste is being produced and its magnitude, that matters.

Conclusion

An educated activity by the general population will go far in any event keeping the issue from deteriorating. This nonetheless, requires an adjustment in our mentality and an adjustment in our disposition. ❑

Clean India movement is completely associated with the economic strength of the country. The birth date of Mahatma Gandhi is targetted in both, the launch and completion of mission. The basic goals to launch Swachh Bharat Abhiyan are to make the country full of sanitation facilities and eliminate all the unhealthy practices of people in daily routines.

Sanitation is more important than independence

◈ **Dhaan Pinkesh Jain** V
D.A.V. Public School
Thane, Maharashtra

The father of the nation, Mahatma Gandhi had said that, “Sanitation is more important than independence” in India during his time before the independence of India. He was well aware of the bad and unclean situation of India. He had emphasized the people of India a lot about the cleanliness and sanitation as well as its implementation in daily lives. However, it was not so effective and failed because of the incomplete participation of people. After many years of independence of India, a most effective campaign of cleanliness is launched to call the people for their active participation and complete the mission of cleanliness.

The president of India, Pranab Mukherjee has said in June, 2014 while addressing the Parliament that, “For ensuring hygiene, waste management and sanitation across the nation a Swachh Bharat Abhiyan will be launched. This will be a tribute to Mahatma Gandhi on his 150th birth anniversary to be celebrated in the year 2019.” In order to fulfill the vision of

Mahatma Gandhi and make India an ideal country all over the world, the Prime Minister of India has initiated a campaign called Swachh Bharat Abhiyan on the birthday of Mahatma Gandhi (2nd October, 2014). This campaign has the target of completion of mission till 2019 means on 150th birthday anniversary of Mahatma Gandhi.

Clean India movement is completely associated with the economic strength of the country. The birth date of Mahatma Gandhi is targeted in both, the launch and completion of mission. The basic goals to launch Swachh Bharat Abhiyan are to make the country full of sanitation and eliminate all the unhealthy practices of people in daily routines.

The first cleanliness drive in India was started on 25th of September in 2014 and first initiated by Prime Minister Narendra Modi by cleaning the road. The completion of this mission would indirectly draw the attention of business investors of India, enhance the GDP growth, draw tourist attention from all over world, bring variety of sources of employment, reduce health costs, reduce death rate, and reduce lethal disease rate and many more. Clean India would bring more tourists and enhance its economical condition. The Prime Minister of India has requested all Indians to devote their 100 hours per year for the cleanliness in India which is very sufficient to make this country a clean country by 2019. Swachh Bharat cess is also started to get some funds for this campaign. Everyone has to pay extra 5%tax on all the services in India.

Uttar Pradesh C.M., Yogi Adityanath has also started a cleanliness drive in 2017 in Uttar Pradesh to ensure cleanliness in official buildings. According to this he has banned eating pan, gutka and other tobacco products in the government offices. ❑

Swach Bharat Abhiyan is also called as the clean India Mission or clean India drive or Swachh Bharat Campaign. It is a national level campaign run by the Indian Government to cover all the backward statutory towns to make them clean. This campaign involves the construction of latrines promoting sanitation.

Swachh Bharat Mission is an interesting aspect

◈ **Dayanshu Suman** IV
S.R. Public Sr. Sec. School
Kota, Rajasthan

Swachh Bharat Abhiyan is a nationwide cleanliness campaign run by the government of India and initiated by the Prime Minister, Narendra Modi on 2nd October, 2014 on 145th birth anniversary of the Mahatma Gandhi. This campaign has been launched to fulfill the aim of cleanliness all over India. The Prime Minister has requested the people of India to involve in the Swachh Bharat Mission and promote others to do the same for leading our country as the best and cleanest country of the world.

This campaign was first initiated by Narendra Modit himself by vision and mission of cleaning India a day. It was launched especially on the birth anniversary of Mahatma Gandhi as he dream and was very keen to make this country a clean country. He had tried for clean India in his time by motivating people through his campaign and slogans however could not be true because of the partial involvement of the people of India.

But after years, Swachh Bharat Mission is again started by the government of India to make the dream of clean India come true in next five years till 150th birth day anniversary of the Mahatma Gandhi. It is a big challenge for all the citizens of India. It is only possible if each and every person living in India would understand this campaign their own responsibility and try to meet hands together to make it a success mission.

It is initiated and promored by the famous Indian personalities to spread this mission as an awareness programme all through India. In order to ensure cleanliness, U.P. C.M. Yogi Adityanath has, banned chewing paan, Gutka and other tobacco products all over UP in March, 2017.

Swach Bharat Abhiyan is also called as the clean India Mission or clean India drive or Swachh Bharat campaign. It is a national level campaign run by the Indian Government to cover all the backward statutory towns to make them clean. This campaign involves the construction of latrines promoting sanitation.

Programmes in the rural area for cleaning streets, roads and changing the infrastructure of the country to lead the country ahead. This campaign was officially launched by the prime Minister Narendra Modi on 145th birth anniversary of Mahatma Gandhi on 2nd October, 2014 at Rajghat, New Delhi.

Swachh Bharat Abhiyan is a campaign launched by the Prime Minister, Narendra Modi as a nationwide cleanliness campaign. It is implemented to fulfill the aim of the mission to cover all the rural and urban areas of the country to present this country as an ideal country before the world. This mission has targetted aims like eliminating the open defecation converting insanitary toilets eradicating manual scavenging of complete disposal and reuse of solid and liquid wastes, bringing behavioral changes to people and motivate health practice, spreading cleanliness awareness among the people,

strengthening the cleanliness system in the urban and rural areas as well as creating user friendly environment for all private sectors interested for investing in India for cleanliness maintenance.

This mission has an interesting theme of inviting nine new people by each and every involved people in the campaign and continuing this chain until each and every citizen of India gets involved in this campaign. ❑

Anuvrat aims at internal purification

◈ **Anuj Baid** X
Seth Tolaram Bafna Academy
Nokha Road,
Gangashahar,
Bikaner, Rajasthan

Anuvrat not only aims at character building and internal purification but also works towards creating a clean and green environment outside. Swachh Bharat Campaign in India that aims to clean up the streets, roads and infrastructure of Indian cities, smaller towns and rural areas. The objective of Swachh Bharat Mission includes eliminating open defecation through the construction of household-owned and community-owned toilets.

Anuvrat Nyas was initiated by Gurudev Shri Tulshi with the aim of the social implement and personality development in the nation and is currently working under the guidance of Acharya Mahashraman to promote various programmes and clean India is one of the important campaigns that is being elaborated by Anuvrat Nyas. It has created deep impact on Indian society. On account of the strong support from the masses it has emerged as a national campaign for the generation of moral and spiritual values.

Swachh Bharat Abhiyan is a campaign in India that aims to clean up the streets, roads and infrastructure of Indian cities, smaller towns and rural areas. The objective of Swachh Bharat Mission includes eliminating open defecation through the construction of household-owned and community-owned toilets and establishing an accountable mechanism of ministering toilet use run by the government of India. The mission aims to achieve an open defecation free (ODF) India by 2nd October, 2019, the 150th

anniversary of the birth of Mahatma Gandhi, by constructing 12 millions toilets in rural India.

The campaign was officially launched on 2nd Oct., 2014 at Rajghat, New Delhi by the Prime Minister Narendra Modi. It is India's largest cleanliness drive to date with 3 million government employees, school students and college students from all parts of India.

Anuvrat not only aims at character building and internal purification but also work towards creating a clean and green environment outside. The 11th vow of Anuvrat code of conduct also says this: "I shall remain vigilant towards the problem of environment".

To spread this message forward Anuvrat Nyas Participated in a cleanliness Drive organized by D.M. Nidhi Kesarwani, Indrapuram on 26th March from 8 am onwards.

There were hundreds of volunteers from different organizations to clean this vast green belt located near Indrapuram P.S. Apart from the municipal corporation police and local authorities NGO's-Green Brigade and Suraksha Muhim along with Anuvrat Nyas.

Anuvrat Magazines were distributed to distinguished personalities present. On the day of launch, Prime Minister has nominated the names of nine personalities of India to initiate the campaign in their own areas and own decided dates as well as promote the campaign to common public. He also had requested to all nine personalities to invite other nine people from their own end individually to participate in this event as well as continue this chain of inviting nine people until the message reach to each and every Indian people.

- See no e-waste pollution, Envision of a clean and Green India.
- Hear no environmental pollution due to incorrect e-waste disposal.
- Say no to direct e-waste disposal. ❑

Keep India clean to make it disease free

◈ **Vidhi** XII
Sant Nirankari Public School
Nirankari Colony, Delhi

India is a big populated country and we are proud to be its citizens. In this modern world, where globalization is going very fast due to the rapid race for development, everyone has forgotten his duty towards the nation and the nature. It we do not maintain cleanliness, whether it is our homes, surrounding areas or whole nation, we always remain in the fear of various diseases.

'Come, join and pledge together to clean India'. Cleanliness is a clean habit which is very necessary to all of us. Cleanliness is a habit of keeping ourselves physically and mentally clean including our homes, pet animals, surroundings, environment, ponds, rives, school etc. We should keep ourselves near; clean and well dressed all the time. It helps in making a good personality and impression in the society as it reflects a clean character. We should maintain the environment and natural resources cleanliness together with our body cleanliness in order to make the possibility of life existence forever on the earth.

"Keep India clean to make it disease free"

India is a big populated country and we are proud to be its citizen. In this modern world, where globalization is going very fast due to the rapid race for development, everyone has forgotten his duty towards the nation and the nature.

It we do not maintain cleanliness, whether it is our homes,

surrounding areas or whole nation, we always remain in the fear of various diseases and it also gives rise to the different types of social issues such as poverty, inequality, illiteracy etc.

Anuvrat not only aims at character building and internal purification but also works towards creating a clean and green environment outside. The 11th vow of Anuvrat code of conduct also says this, " I shall remain vigilant towards the problem of environment." To spread this message forward Anuvrat Nyas participated in cleanliness drive organized by DM Nidhi Kesarwani, Indrapuram on 26th March, from 8am onwards.

There is a need to strive for raising public awareness levels about clean India all over the country. Conducting various drives at different public places by having active volunteers where they not only work for educating people but also for making people realize the value of cleanliness in the nation. We need to take this clean India task as a challenge and initiate the process ourselves in order to motivate others and take them together for achieving the goal of the task.

So, it is important to maintain cleanliness all through the country to upload its beauty as golden birds. India is our identity, we should keep our identity clean.

Cleanliness prevents us from diseases. It keeps our surrounding clean. It keeps germs away. Cleanliness affects on the expression of people. It offers a sense of satisfaction, but may go further by protecting our mental health.

Clean India is an acronym which stands for community led environment action network. It is a platform for green crusaders to connect with each other to act, create awareness. Its mission is to mobilize the community responsible for environmental improvement across all major towns and cities of India. We should always take care and observe our personal and surrounding cleanliness to make our future bright.

Anuvrat Nyas was initiated by Gurudev Shri Tulsi with the aim of social upliftment and personality development in the nation and it is currently working under the guidance of Acharya Mahashraman to promote various programmes and events to elaborate the concept of Anuvrat. Among all these programmes, one is the cleanliness programme. Huge and hardworking initiatives have been taken by Anuvrat to promote cleanliness.

Beside all these there are certain measures through which one can attain cleanliness and a healthy atmosphere such as we should learn from our parents how to keep home neat and clean. Starting from our home one can make a big difference in the coming future. We should not make our surrounding areas dirty as it spreads diseases washing our hands with soap, drinking safe and purified water.

Because "Clean India is Healthy India. Clean India is Happy India". ❑

Clean India movement is the strength of the country

Through this campaign the government of India would solve the sanitation problems by enhancing the waste management technique. Clean India movement is completely associated with the strength of the country. The birth date of the Mahatma Gandhi is targetted in both the launch and completion of the mission.

◈ **Tanishka** VII
Bal Bhavan Public School
Mayur Vihar, Delhi

"Sanitation is more important than independence"
—Mahatma Gandhi

The father of the nation Mahatma Gandhi was well aware of the bad and unclear situation of India. He had emphasized the people of India a lot about the cleanliness and sanitation as well as its implementation in the daily lives. However, it was not so effective and failed because of the incomplete participation of people. After many years of independence, a most effective campaign of cleanliness is launched to call people for their active participation and complete the mission of cleanliness.

The president of India, Pranab Mukherjee has said in June, 2014 while addressing the parliament that, "for ensuring hygiene, waste management and sanitation across the nation a Swachh Bharat Mission will be launched. This will be our tribute to Mahatma Gandhi on his 150th birth anniversary to be celebrated in the year 2019". In order to fulfill the mission of Mahatma Gandhi and make India an ideal country all over the world, the Prime Minister of India has initiated a campaign called Swachh Bharat Abhiyan on the birthday of Mahatma Gandhi which is targetted in both. This mission has a target of completion of mission till 2019, means the 150th birthday anniversary of the Mahatma Gandhi.

Through this campaign the government of India would solve the sanitation problems by enhancing the waste management technique. Clean India movement is completely associated with the strength of the country. The birth date of the Mahatma Gandhi is targetted in both the launch and completion of the mission. The basic goals behind launching the Swachh Bharat Mission are to make the country full of sanitation facilities as well as eliminate all the unhealthy practices of people in daily life. This first cleanliness drive in India was started on 25th September in 2014 and first initiated by the Prime Minister, Narendra Modi by cleaning the road.

The completion of this mission would indirectly draw the attention of business investors in India, enhance the GDP growth and enhance its economical condition. Also, it will bring variety of sources of employment, reduce health cost, reduce death rate and reduce lethal disease rate and many more.

The Prime Minister of India has requested to all the Indians to devote their 100 hours per year for the cleanliness in India which it very sufficient to make this country a clean country by 2019. Everyone has to pay extra 5% tax (₹50 per ₹100) on all the services in India.

Uttar Pradesh C.M., Yogi Adityanath has also started a cleanliness drive in 2017 in Uttar Pradesh to ensure cleanliness in the official buildings. According to this, he has banned eating paan, gutka and other tobacco products in the government offices.

"The clean person is not the one that runs away from dirt but one who takes time and effort to tidy up the dirty environment". ❑